धरती, पसेना आ न्याय

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक चयनित कथा-संचय)

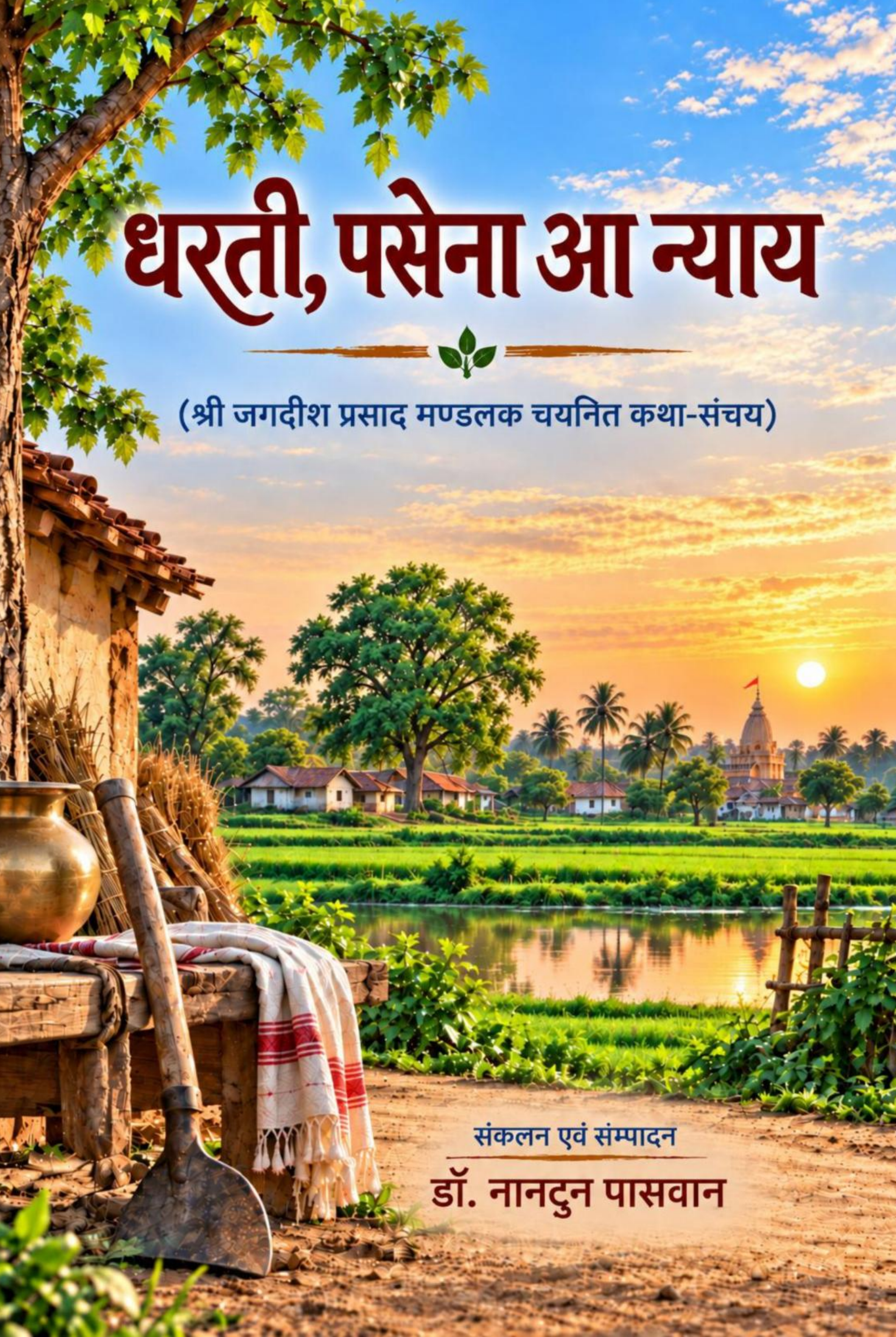

संकलन एवं संम्पादन

डॉ. नानदुन पासवान

धरती, पसेना आ न्याय

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक चयनित कथा-संचयन)

धरती, पसेना आ न्याय

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक चयनित कथा-संचयन)

संकलन एवं सम्पादन

डॉ. नानटुन पासवान

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

DHARTI, PASENA AA NYAY

A Collection of Fourteen Maithili Short Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal
Compiled and Introduced by Dr. Nantun Paswan

DHARTI, PASENA AA NYAY is a carefully curated collection of fourteen Maithili short stories by Shri Jagdish Prasad Mandal, an important and distinctive voice in modern Maithili fiction. Rooted in the rural world of Mithila, the collection brings into focus land, labour, family, caste, debt, agriculture, education, employment and justice as forces that shape everyday human existence.
Mandal's stories often begin with an apparently small incident: a quarrel over a strip of land, the burden of debt, the value of sweat, a woman's labour, the cost of a child's education, a village office, or a plea for justice. Yet these ordinary moments gradually open into a wider moral and social landscape. Farmers, labourers, women, elders, students, clerks and marginal figures appear not as symbols, but as living human beings caught within changing social conditions.
The title expresses the ethical centre of the volume. Earth sustains life, sweat affirms dignity, and justice remains the unfinished claim of the common person. This collection offers readers, students and researchers a serious entry into Mandal's story-world, where rural Mithila speaks through experience, conscience and quiet social strength.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward No. 06, Nirmali, District: Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2026
ISBN: 978-93-48865-90-8
Price: 300/-
Copyright: © Publisher

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typesetting: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
Email: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font Source: Google Fonts

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, distributed, transmitted, adapted, paraphrased, stored in a retrieval system, or processed in any form or by any means, including electronic, mechanical, digital, or artificial intelligence systems, without the prior written permission of the copyright holder or the publisher.

अनुक्रम

भूमिका

एक धाप जमीन

मुसहैन

दनगर घास

हरवाहि

पाइक मोल

कर्जखौक

एकाधिकारी जाति

पसेनाक मोल

कृषियोग

गामक जमीने पथरा गेल

धानक कमठौन

चपरासी गाम

रोजगार

न्याय चाही

भूमिका

माटि, श्रम आ सामाजिक न्यायक कथा-दृष्टि

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारमे प्रवेश करब मिथिलाक लोकजीवनक भीतर प्रवेश करबाक समान अछि। ई लोकजीवन केवल गामक वातावरण, लोक-रंग अथवा बाहरी दृश्य-सौन्दर्य धरि सीमित नहि अछि। एहिमे मनुष्यक संघर्ष, श्रमक ताप, सम्बन्धक जटिलता, विवेकक बेचैनी आ आत्मसम्मानक आकांक्षा एकसंग उपस्थित अछि।

एहि संसारमे गाम भौगोलिक स्थान मात्र नहि, स्मृति आ सम्बन्धक जीवित धरातल अछि। खेत अन्न-उत्पादनक साधन भरि नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी पसरल श्रमक इतिहास अछि। पाबनि केवल उत्सव नहि, सामूहिक जीवनक लय अछि। श्रम पेट चलेबाक विवशता भरि नहि, मनुष्यक गरिमाक आधार अछि।

मण्डलजी लोकजीवनकेँ बाहरसँ नहि देखैत छथि। ओ ओकर भीतरसँ बजैत छथि। हुनकर कथा-दृष्टि निरीक्षणक दृष्टि मात्र नहि, सहभागिताक दृष्टि अछि। खेतक मेड़, घरक ओसार, चूल्हिक आगि, मजदूरक थकान, पाइक चिन्ता, जातिक दबाव, रोजी-रोजगारक उलझन आ न्यायक प्रतीक्षामे ठाढ़ साधारण मनुष्यक आवाज हुनकर कथामे जीवित रूपमे प्रवेश करैत अछि।

पुस्तकक शीर्षकमे आएल **धरती, पसेना आ न्याय** तीनू शब्द एहि संचयनक मूल आधार अछि। धरती जीवनक आधार अछि, **पसेना** श्रमक गरिमा अछि, आ **न्याय** मनुष्यक आत्मसम्मानक अनिवार्य शर्त अछि। मण्डलजी एहि तीनूकेँ अलग-अलग नहि, परस्पर सम्बद्ध रूपमे देखैत छथि। धरतीक बिना जीवनक स्थिरता नहि, **पसेना**क बिना समाजक नैतिकता नहि, आ न्यायक बिना मनुष्यक सम्मान नहि।

एहि संचयनक कथासभक केन्द्रमे ग्रामीण मिथिला अछि, मुदा ई ग्रामीणता सजावटी नहि अछि। ई जीवनक समग्र जटिलता नेने उपस्थित अछि। एतए परिवार अछि, मुदा परिवारक भीतर तनावो अछि। पाबनि अछि, मुदा ओकर

भीतर प्रतिष्ठा, अर्थ आ सम्बन्धक दबाव सेहो अछि। खेत अछि, मुदा ओकर संग बँटवारा, स्वामित्व आ भविष्यक प्रश्नो अछि। मजदूर अछि, मुदा ओ दया करबाक पात्र नहि, अनुभव, विवेक, हँसी आ संघर्षसँ बनल जीवित मनुष्य अछि। एहि संग जाति, रोजगार, व्यवस्था आ न्यायक प्रश्न सेहो कथा-संसारक भीतर सहज रूपेँ अबैत अछि।

मण्डलजी साधारण घटनासँ असाधारण सामाजिक अर्थ निकालैत छथि। हुनकर कथा प्रायः छोट प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि। पहिल दृष्टिमे घटना सामान्य लगैत अछि, मुदा कथा आगू बढ़ैत-बढ़ैत ओकर भीतर नुकाएल सामाजिक संरचना खोलि दैत अछि। सम्बन्धक दरारि, श्रमक अवमूल्यन, आर्थिक विवेकक अभाव आ चोट खा रहल साधारण मनुष्यक आत्मसम्मान क्रमशः पाठकक सामने अबैत अछि।

हुनकर कथा विचारकेँ अलगसँ घोषित नहि करैत अछि। विचार पात्रक बोलचाल, व्यवहार, निर्णय आ संघर्षक भीतरसँ धीरे-धीरे खुलैत अछि। समाजक रूप पात्रक दिनचर्या आ सम्बन्धमे सामने अबैत अछि। निर्णयक क्षणमे नैतिक तनाव देखाइत अछि, भूलमे मनुष्यक कमजोरी प्रकट होइत अछि आ प्रतिरोधमे भविष्यक सम्भावना झलकैत अछि। एहि कारण हुनकर कथा केवल कथा-रस नहि दैत, पाठककेँ जीवन आ समाजपर गंभीरतासँ सोचबाक लेल सेहो प्रेरित करैत अछि।

मण्डलजी गामक सौन्दर्य देखैत छथि, मुदा गामक अन्हारो नहि छोड़ैत छथि। ओ श्रमक गरिमा चिन्हैत छथि, मुदा श्रमक शोषणपर आँखि नहि मूँदैत छथि। ओ सम्बन्धक महत्त्व मानैत छथि, मुदा सम्बन्धक भीतर पसरैत स्वार्थो उजागर करैत छथि। ओ परम्पराक उपयोगी पक्ष स्वीकार करैत छथि, मुदा अन्धविश्वास, जाति-अहंकार आ सामाजिक अन्यायकेँ चुनौती दैत छथि। एहि संतुलित आलोचनात्मक दृष्टिसँ हुनकर कथा-संसार जीवित आ विश्वसनीय बनैत अछि।

एक धाप जमीन शीर्षक कथा एहि संचयनक आरम्भ करैत अछि। कथा **एक धाप जमीन** आ केराक बीटसँ उठल झगड़ासँ शुरू होइत अछि, मुदा ई घटना पारिवारिक विवाद धरि सीमित नहि रहैत। दिनेश-महेशक भैयारीमे जे टकराव सामने अबैत अछि, ओकर पाछाँ जमीनक अस्पष्ट बँटवारा, छठि

पाबनिक प्रसंग, नैहर-सासुरक सम्बन्ध, भातिजक दावा आ भाय-भैयारीक भीतर पसरल दुराव एकसंग काज करैत अछि।

एहि कथामे जमीन खेत मात्र नहि अछि। जमीन परिवारक भीतर उभरि रहल लालच, असुरक्षा आ सम्बन्धक दरारिकँ उजागर करैत अछि। गामक लोक घटना सुनैत अछि आ प्रत्येक लोक अपन-अपन दृष्टिसँ ओकर अर्थ बनबैत अछि। कियो छोट भाएक हाथ उठएबाक दोष देखैत अछि, कियो दिनेशक पुरान ठगी व्यवहार मोन पाड़ैत अछि, आ कियो समाजक जिम्मेदारीक बात करैत अछि।

ललितक चरित्र विशेष महत्त्वक अछि। ओ ठीकेदार अछि, मुदा सामाजिक विवेकसँ रिक्त नहि अछि। दफ्तरसँ जुड़ल लेन-देनपर ओकर टिप्पणी ग्रामीण समाजमे पसरल आर्थिक दूषणपर चोट करैत अछि। दफ्तरक लेन-देनक संस्कृति आ पाइक अस्वस्थ प्रभावपर ई तीक्ष्ण व्यंग्य सेहो अछि।

दिनेश आ महेश शिक्षित बुझाइत छथि, मुदा शिक्षा हुनका सभक भीतर नैतिक विवेक नहि बना सकल। बाहरी चमक, पैसा, ऑफिस-दौड़, बेटीक बिआहक खर्च आ सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रदर्शन हुनका सभकेँ भीतरसँ खोखला बना दैत अछि। कथा स्पष्ट करैत अछि जे जखन पैसा सम्बन्धपर हावी भऽ जाइत अछि, तखन एक धाप जमीनो भैयारीक खून बहा सकैत अछि।

मुसहैन शीर्षक कथा भूमिहीन आ अल्पसंसाधन ग्रामीण श्रमिक जीवनक जीवंत कथा अछि। बेलबाक अपन खेत-पथार नहि अछि, हर-बरद नहि अछि, मुदा ओकरा लग बाँहुक बल, मेहनति करबाक साहस आ संगतियाक भरोस अछि। गामक **मुसहैन**पर ओकर अधिकार कागजी नहि, मेहनतिसँ अर्जित अधिकार अछि।

बेलबा, तेतरा, झिंगुरा आ लेलहा संगतियाक माध्यमसँ श्रमिक-संसारक आत्मीयता खुलैत अछि। हुनका सभक परिवार अलग अछि, दुख अलग अछि, स्वभाव अलग अछि, मुदा अपनत्वक एक साझा धरातल अछि। चिलम-तमाकूक साझेदारी, काजक चर्चा आ सगुन-असगुनक बहस एहि कथाकेँ श्रमिक-सामूहिकताक कथा बनबैत अछि।

सगुन-असगुनक बहस कथाकेँ विचारक ऊँचाई दैत अछि। बेलबा आ तेतरा भेटल **मुसहैन**केँ नीक संकेत मानैत छथि। लेलहा आ झिंगुरा अनुभवक आधारपर बात परखैत छथि। लेलहा कहैत छथि जे माछ-दही मात्रसँ सगुन

बनितै तँ मछुआरा सभ बहुत पहिने सम्पन्न भऽ गेल रहैत। एहि बहसमे लोकविश्वास आ तर्कक बीचक तनाव स्पष्ट होइत अछि।

एहि कथामे श्रम-संगठनक प्रश्न सेहो अछि। गामक खेती छोट-छोट टुकड़ामे बाँटल अछि। काज अलग-अलग अछि। मजदूर छिड़िआएल अछि। शहरक कारखाना आ गामक खेत एकरंग नहि। मण्डलजी देखबैत छथि जे ग्रामीण मजदूरक असुरक्षा खेतक बँटवारा, कामक अनियमितता आ संगठनक कठिनतासँ बनैत अछि।

घुसकीपट्टीवालीक उपस्थिति कथाकेँ घरेलू धरातल दैत अछि। ओ बेलबाक मन टोहैत अछि, पुसौठ पाबनिक बात उठबैत अछि, खेसारी दालिक कचौड़ीसँ पतिक मन मोड़ैत अछि। बेलबाक संगतिया ओकर बाहरी संसार छथि, मुदा पत्नी ओकर जीवनक भीतरी संतुलन अछि।

दनगर घास शीर्षक कथा कृषि, पशुपालन, शुद्ध भोजन आ स्वावलम्बी गृह-अर्थनीतिक कथा अछि। सोनाय काका पचपन बर्खक उमेरमे जीवनक नव हिसाब करैत छथि। दूषित अन्न, पानि, दूध, दही आ बजारू तीमन-तरकारीक समयमे स्वस्थ जीवन कोना बचाओल जाए, कथा एहि प्रश्नकेँ घास आ गाय-पालनसँ जोड़ैत अछि।

सोनाय काकाक संसाधन सीमित अछि। घराड़ी, छोट खेत, छोट परिवारिक व्यवस्था आ थोड़ेक पशु-संसाधन बाहरी दृष्टिसँ बहुत पैघ पूँजी नहि बुझाइत अछि। मुदा सोनाय काका एहि सीमित साधनमे जीवनक सम्भावना देखैत छथि। हुनका विश्वास अछि जे खेतक सही उपयोग, घरक खूँटापर गाय आ दूधक व्यवस्था परिवारक पोषणक आधार बनि सकैत अछि।

सोनाय काकाक दृष्टिमे कृषि खेती मात्र नहि, जीवन-विज्ञान अछि। ओ कम पढ़ल छथि, मुदा अनुभवक विज्ञान हुनका भीतर अछि। ओ बुझैत छथि जे अपन जिनगीक विज्ञान अपने पढ़ए पड़ैत अछि। की खाएब, की पीब, केना जीब, परिवारकेँ केना टिकाओल जाए, ई सभ व्यवहारक मूल प्रश्न अछि।

बुधनी काकी आ रघूक संवाद कथाकेँ पारिवारिक गहराइ दैत अछि। गोबर, गोधन, पूजा, खेत आ भोजनक सांस्कृतिक सम्बन्ध सामने अबैत अछि। सोनाय काका रघूकेँ केवल आज्ञाकारी नहि, विचारवान बनए चाहैत छथि। ओ कहैत छथि जे घर-परिवार चलेबाक लेल बुझब आ करब दुनू जरूरी अछि।

दुधिया घास एहि कथाक केन्द्रीय प्रतीक अछि। पाँच कट्ठा जमीनकेँ तीन खलमे बाँटि चक्रवत ढंगसँ मक्कैक दुधिया घास उपजेबाक योजना बनैत अछि। घास गायक चारा मात्र नहि रहैत। ओ दूध अछि, स्वास्थ्य अछि, स्वच्छ भोजन अछि, परिवारक अर्थनीति अछि आ आत्मनिर्भर जीवनक आधार अछि।

हरवाहि शीर्षक कथा श्रमक स्मृति, परिवारक इतिहास, बाढ़ि-विस्थापन आ जीवन-संघर्षक कथा अछि। कथा बिआहक घरसँ शुरू होइत अछि। रूपलाल भाय अपन मातृक गाम रघुनाथपुरमे अधिकलाल भायक पोतीक बिआहमे पहुँचैत छथि। बाहरी दृश्य बिआहक अछि, मुदा भीतर स्मृतिक संसार खुलैत अछि।

अधिकलाल भाय पचासी बर्ख टपि चुकल छथि। कानसँ कम सुनैत छथि, मुदा स्मृति साफ अछि आ अनुभव गहींर अछि। दरबज्जापर बैसल वृद्ध पहिने अकाजक लगैत छथि। जखन हुनकर इतिहास खुलैत अछि, तखन बुझाइत अछि जे हुनकर देह बूढ़ भेल अछि, मुदा अनुभवक **धरती** अखनो उपजाऊ अछि।

ओ कहैत छथि जे रूपलालक ऐठाम ओ बीस बरख **हरवाहि** केने छथि। ई वाक्य कथाकेँ एकाएक भावुक आ ऐतिहासिक दुनू केन्द्रमे लऽ जाइत अछि। **हरवाहि** एतए हल जोतबाक पेशा मात्र नहि। ई बाल्यावस्थासँ श्रममे उतरल जीवनक कठोर पाठ अछि।

बाढ़ि आ विस्थापनक प्रसंग एहि कथामे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। पिताक मृत्युक बाद कोसी आ कमलाक पलाड़ीसँ रघुनाथपुर बाढ़िक इलाका बनि गेल। छहमसिया बाढ़ि पकड़लक। खेती दहा गेल। गाछी-कलम सुखि गेल। जीवनक आधार टूटए लागल।

एहि संकटमे अधिकलालक माए हुनका सोहनपुर **हरवाहि** करए पठबैत छथि। ओ मेहनती किसानक बेटी छथि, खेतीक लूरि बुझैत छथि, मुदा समाजक जाति-लिंग सीमा हुनका हर जोतबाक छूट नहि दैत। तैँ बच्चा अधिकलाल **हरवाहि** शुरू करैत अछि। एहि प्रसंगमे बाल-श्रमक करुण यथार्थ, स्त्रीक श्रम-ज्ञान आ समाजक रूढ़ि एकसंग सामने अबैत अछि।

बरद आ हरवाहक सम्बन्ध सेहो कथाकेँ गहींर बनबैत अछि। बरद साधन मात्र नहि, जीवन-संगी अछि। बालक, बरद, माए, बाढ़ि, खेत आ गामक बीच जे सम्बन्ध बनैत अछि, ओहीमे ग्रामीण श्रम-संस्कृतिक असल अर्थ नुकाएल अछि।

पाइक मोल शीर्षक कथा ग्रामीण परिवारक आर्थिक विवेकक कथा अछि। कथा कोजगराक समय, दाड़िमक बाड़ी, पाबनिक तैयारी आ बेटाक पढ़ाइक खर्चक प्रसंगसँ शुरू होइत अछि। रविकान्तक बेटा दीपक कॉलेजक अन्तिम परीक्षा लेल फॉर्म भरबाक आ नव पोथी किनबाक बात लऽ कऽ गाम अबैत अछि। घटना साधारण अछि, मुदा एहि साधारण घटनामे खर्च आ लगानीक फरक खुलैत अछि।

रविकान्त एहि कथाक विवेक-केन्द्र छथि। ओ साधारण पढ़ल-लिखल बाप छथि, मुदा बेटाकेँ स्नातक बना कऽ जीवनक अगिला सीढ़ी जोड़ए चाहैत छथि। हुनका लेल पढ़ाइ डिग्रीक नाम नहि, परिवारक सामाजिक उन्नयनक साधन अछि। दीपकक फॉर्म, कॉलेजक बाँकी शुल्क आ पोथीक खर्च तत्काल दबाव अछि, मुदा रविकान्त ओकरा भविष्यक निवेश मानैत छथि।

दीपकक विद्यार्थी-दृष्टि सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। ओ नव पोथीक आवश्यकता देखबैत अछि। विषय एक रहितो लेखकक विचार अलग होइत अछि, शिक्षकक समझ अलग होइत अछि, परीक्षामे उत्तरक व्याख्या अलग ढंगसँ करए पड़ैत अछि। मण्डलजी शिक्षाकेँ नाम लिखाएब आ परीक्षा देबाक प्रक्रिया धरि सीमित नहि करैत। ओ पढ़ाइक भीतर विचार, तैयारी आ बौद्धिक विस्तारक आवश्यकता देखैत छथि।

चन्द्रावतीक भूमिका कथाकेँ घरेलू अर्थनीतिक धरातल दैत अछि। पाँच हजारमे सँ एक हजार दुर्गापूजा, मेला आ छठिक सामग्रीपर खर्च भऽ गेल अछि। रविकान्त एहि खर्चक उपयोगितापर प्रश्न उठबैत छथि। ओ पाबनिक विरोध नहि करैत छथि, मुदा जीवनक जरूरी काज रोकि देबएबला खर्चक समीक्षा करैत छथि।

एहि कथामे **पाइक मोल** ओकर गिनतीसँ नहि, उपयोगसँ तय होइत अछि। एके हजार रुपैया पाबनिक वस्तुपर खर्च भेल तँ ओकर अर्थ अलग अछि, आ सेहि पाइ परीक्षा-फॉर्म, पोथी आ पढ़ाइपर लागल तँ भविष्यक सीढ़ी बनि जाइत अछि। गरीब घरमे पाइक असल मोल ओकर सही उपयोगसँ बनैत अछि।

कर्जखौक शीर्षक कथा उधार, भरोसा, श्रमक मूल्य आ घरेलू अर्थव्यवस्थाक कथा अछि। करियाकाका आ लालकाकी भोरे चाह पीबैत छथि। तरकारीवाली अबैत अछि। तीन किलो तरकारीक दाम अस्सी रुपैया भेल।

करियाकाका कहि दैत छथि जे सात तारीख दरमाहा उठत, आठ तारीख पाइ भेटत। साधारण उधारक बात लगैत अछि, मुदा लालकाकी एहि बातमे जीवन भरिक आर्थिक असावधानी देखैत छथि।

तरकारीवाली माथपर मन भरि तरकारी नेने भोरेसँ गाम घूमैत अछि। ओकर पूँजी सीमित अछि। रोजक बिक्रीसँ घरक चूल्हि चलैत अछि। जँ ओकर समान उधारीमे लगत तँ ओकरा फेर महाजन वा बेपारी लग जाए पड़त। लालकाकीक चिन्ता अपन घरक बचत मात्र नहि, दोसर श्रमिक परिवारक जीवन-चक्रक चिन्ता सेहो अछि।

लालकाकीक आत्ममन्थन कथाकेँ गहराइ दैत अछि। ओ पहिने पतिक आदतपर तामस करैत छथि, फेर अपने भीतर झाँकैत छथि। हुनका लगैत अछि जे पतिक आदत आरम्भमे रोकल जा सकैत छल, मुदा घरमे बिनु पाइयोक वस्तु अबैत रहल आ ताहिसँ अपनो सुविधा भेल। एहि आत्मस्वीकारसँ लालकाकी घरेलू अर्थनीतिक विवेकशील प्रतिनिधि बनि जाइत छथि।

करियाकाका दोषी पात्र मात्र नहि। हुनकर अपन तर्क अछि। ओ कहैत छथि जे दरमाहा भेटलापर सभक चुकती करैत रहलाह। मुदा कथा प्रश्न उठबैत अछि जे की मात्र चुकती कऽ देब पर्याप्त अछि? जे पाइ समयपर दोसराक हाथमे पहुँचबाक चाही, ओकरा महिनाभर रोकि कऽ राखबो तँ अन्यायक रूप लऽ सकैत अछि।

कथाक अन्त करियाकाकाक आत्मस्वीकारसँ होइत अछि। ओ मानि लैत छथि जे आब ओहन काज करताह, जाहिसँ केकरो कर्ज हुनका ऊपर नहि आबए। ई अन्त उपदेश नहि, अनुभवसँ निकसल सुधार अछि। बूढ़ उमेरमे सेहो सीखब सम्भव अछि। आदत बदलि सकैत अछि।

एकाधिकारी जाति शीर्षक कथा जाति, पेशा, श्रम-कौशल, सामाजिक उपहास आ प्रकृति-प्रकोपक कथा अछि। बाढ़िक बाद सुन्दरपुर गामक उजड़ल रूपसँ कथा शुरू होइत अछि। बाढ़ि खेत-पथार दहैत अछि, मनुष्यक योजना आ भरोसो दहा दैत अछि। एहि विनाशक बीच प्रश्न उठैत अछि जे मनुष्य जातिगत पेशा, अर्जित कौशल आ बदलैत समयक बीच जीवनक राह केना बनबैत अछि।

रामखेलावन कथाक मुख्य पात्र अछि। ओकर जन्म ओहि जातिमे भेल अछि जे परम्परासँ बरेब, बाड़ी-फुलवारी आ पानक खेतीसँ जुड़ल अछि। जाति

एतए एक दिस सामाजिक पहचान अछि, दोसर दिस पीढ़ी-दर-पीढ़ी जमा भेल काजक लूरिक आधार सेहो अछि। रामखेलावन मैट्रिक पास युवक अछि। जँ ओ पानक खेती करैत अछि तँ समाज उपहास करैत अछि। पढ़ि-लिखि ओहि पेशामे रहब लोकक आँखिमे हीन बुझाइत अछि।

मण्डलजी एहि उपहासक भीतर समाजक विकृत शिक्षा-दृष्टि खोलैत छथि। पढ़ाइकेँ समाज प्रतिष्ठित नौकरीसँ जोड़ैत अछि, श्रम-कौशलक परिष्कारसँ नहि। रामखेलावन एहि दृष्टिकेँ तोड़ए चाहैत अछि। ओ सिलीगुड़ी, जलपाइगुड़ी दिस जाइत अछि, पानक खेतीक विकसित ढंग सीखैत अछि, कमाई करैत अछि, पूँजी बनबैत अछि आ फेर गाम वापस नव तकनीकसँ खेती आरम्भ करैत अछि।

रामखेलावनक कथन जे पानक खेतीक सभ लूरि अछि, ओकर आत्मविश्वासक घोषणा अछि। ओ केवल किनल सर्टिफिकेटपर निर्भर युवक नहि, अनुभवसँ अर्जित कौशल रखनिहार युवक अछि। ओ बुझैत अछि जे बोली, पानि आ काजक ढंग जगह-जगह बदलैत अछि। लोक-कौशल स्थिर नहि। सम्मान, सीखबाक अवसर आ प्रयोगक धरातल भेटए तँ ओ आधुनिक उत्पादनक आधार बनि सकैत अछि।

मुदा कथा सरल भरोसपर समाप्त नहि होइत। रामखेलावन दू साल सीखैत अछि, पूँजी जोड़ैत अछि, गाममे एक बीघा पानक खेती ठाढ़ करैत अछि। पहिल साल आमदनी होइत अछि। दोसर साल खेती आरो नीक होए लगैत अछि। मुदा बाढ़ि सभटा दहा दैत अछि। एहि अन्तमे ग्रामीण उद्यमशीलताक असुरक्षा सामने अबैत अछि। मण्डलजी देखबैत छथि जे श्रम, कौशल आ साहस रहितो प्रकृति आ सामाजिक संरचनाक मारिसँ किसानक प्रयास सुरक्षित नहि रहैत।

पसेनाक मोल शीर्षक कथा स्त्री-श्रमक अदृश्य मूल्यकेँ सामने अनैत अछि। गोबरधन पूजाक दिन अछि। कातिकक टहटहौआ रौद अछि। अल्लापुरवाली भौजी माथपर घासक भारी बोझ नेने अबैत छथि। दृश्य साधारण लगैत अछि, मुदा एहिमे स्त्रीक देह, पसेना, पशुपालन, बाढ़िक बाद संघर्ष आ घर-परिवारक पूरा अर्थ-हिसाब उपस्थित अछि।

अल्लापुरवाली भौजी पढ़ल-लिखल नहि छथि, मुदा हुनका भीतर जीवनक व्यावहारिक बुद्धि अछि। डेढ़ किलोमीटर दूर दलिहारा चौरसँ घासक

भारी बोझ आनब, घरक पशु सम्हारब, गोबरधन पूजाक तैयारी करब, गायक थान लीपब, करमी-लत्ती आनब आ दूधक आमदनी बचाएब हुनकर रोजक जीवन अछि। मण्डलजी एहि श्रमकेँ दयनीय नहि बनबैत छथि। ओ ओकर गरिमा देखबैत छथि।

कथावाचक पहिने हुरियाहा पाबनिक दृश्य देखबाक लेल निकलल अछि। गामक पुरान पाबनि, नीलकण्ठ काका, धिया-पुताक कुश्ती आ गाए-महींसक दृश्य स्मृति रूपमे अबैत अछि। मुदा अल्लापुरवाली भौजीकेँ देखिते कथाक केन्द्र बदलि जाइत अछि। पाबनिक खेलसँ बात श्रमक असली अर्थ दिस बढ़ैत अछि।

बाढ़िक पछाति ग्रामीण अर्थव्यवस्था संकटमे अछि। धान नष्ट अछि। घास नष्ट अछि। पशुधन संकटमे अछि। दूधक कारोबार डगमगाएल अछि। एहि समयमे भौजी दूटा गाए बचा रहल छथि, दस किलो दूधक आमदनी कायम रखैत छथि आ घरक जीवन चलबैत छथि। ई बाढ़ि-विपत्तिपर स्त्री-श्रमक विजय अछि।

भौजी कहैत छथि जे **धरती**पर जन्म नेने छी तँ अपनो जीबैक उपाय सोचए पड़त। ई कथाक मूल भाव अछि। जेकरा लग जमीन कम अछि, पूँजी कम अछि आ सामाजिक शक्ति कम अछि, ओकर देहक श्रम आ **पसेना** सभसँ पहिल पूँजी बनैत अछि। एहि कथामे स्त्री-श्रमक महत्त्व उपदेशक रूपमे नहि, जीवनक कठोर अनुभव आ रोजक संघर्षक भीतरसँ प्रकट होइत अछि।

कृषियोग शीर्षक कथा कृषि, समय-बोध, प्रकृति-विपत्ति आ जीवन-दर्शनक कथा अछि। अगहनक अन्हरियाक छठम दिन, अठारह नवम्बरक भिनसुरका समय, कथा आरम्भ होइत अछि। तारीख, तिथि, ऋतु आ खेतीक समय किसानक जीवनक घड़ी अछि। किसान कैलेंडरक पन्नासँ नहि, मौसम आ खेतक अनुभवसँ जीवन चलबैत अछि।

योगी बाबा कथाक केन्द्रमे छथि। ओ सामान्य किसान छथि, मुदा जीवन-अनुभव हुनका लोक-दार्शनिक बना दैत अछि। पचास बर्खक कृषि-यज्ञमे हुनकर योग रहल अछि। रौदी देखलनि, बाढ़ि देखलनि, झाँट-बिहाड़ि देखलनि, पानि-पाथर आ भुकम्प भोगलनि। मुदा ओ अतीतक दुखमे अटकि नहि गेल छथि।

गुरु आ **सतगुरुक** भेद कथामे विशेष अर्थ रखैत अछि। योगी बाबा कहैत छथि जे बीतल जिनगी **गुरु** बनैत अछि, सुख-दुख **गुरु** बनैत अछि, मुदा

वर्तमानकेँ बुझब, जानब आ ओकर अनुसार चलब **सतगुरु** अछि। किसान परम्परापर टिकि सकैत अछि, मुदा वर्तमानक परिस्थिति पकड़ए बिना जीब नहि सकैत।

समदर्शी बाबा प्रतिपक्ष जकाँ उपस्थित छथि। बाढ़िक पछाति ओ कहैत छथि जे ई साल नहि खेपब। एहि वाक्यमे टूटल मनक स्वर अछि। योगी बाबा हुनकर निराशाकेँ सुनैत छथि, मुदा स्वीकार नहि करैत छथि। ओ बुझबैत छथि जे जीवनक जोड़ो-जाड़ अपने करए पड़त। धान नष्ट भेल, मुदा गहुमक समय अछि। गहुमक पछाति खेरही अछि। फेर आगू सालक धान अछि। फसलचक्रे किसानक वास्तविक योग अछि।

एहि कथामे बाढ़ि खेतकेँ उजाड़ि दैत अछि, मुदा धरती सोल्होअना पराजित नहि होइत। ओही खाली खेतमे आगू जीवनक सम्भावना बचल रहैत अछि। पसेना समयपर खेती पकड़बाक संकल्प अछि। न्याय एतए जीवनक आन्तरिक न्याय अछि। जे वर्तमानकेँ **सतगुरु** मानि कर्म करैत अछि, जीवन ओकरा आगू बढ़बाक अवसर दैत अछि।

गामक जमीने पथरा गेल शीर्षक कथा मिथिलाक कृषि-संकट, सामाजिक रूढ़ि आ विकास-दृष्टिपर गम्भीर विचार करैत अछि। कथा मिथिलाक गौरवस्मृतिसँ शुरू होइत अछि। जनक, अष्टावक्र, याज्ञवल्क्य, विद्यापति, ऋषिका आ अहिल्याक प्रसंग अबैत अछि। मुदा ई स्मरण आत्ममुग्धता लेल नहि। मूल प्रश्न ई अछि जे जे भूमि कखनो चिन्तनक भूमि छल, से आइ केना पथरा गेल।

शीर्षकमे पथराएल जमीनक संकेत खेतीक संकट धरि सीमित नहि अछि। ई पथराएल चेतनाक संकेत सेहो अछि। रौदीमे भूमि पथरा जाइत अछि। बाढ़िमे भूमि कठुआ जाइत अछि। समाजमे विवेक रुकि जाए तँ चेतना सेहो पथरा जाइत अछि। एहि पथराहटकेँ तोड़ए लेल श्रम, शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि आ सामाजिक साहस चाही।

कथामे मिथिलाक भूगोलपर गंभीर ध्यान अछि। उत्तरक पहाड़, दक्षिणक गंगा, पहाड़ी जल, नद-नाला, धार-धूर, बान्ह-सड़क, रौदी-दाही, उर्वर भूमि आ बालुआह भूमि सभ मिलि खेतीक वास्तविक संकट बनबैत अछि। मण्डलजी स्पष्ट करैत छथि जे खेती जादू-टोनासँ नहि चलत। ओ अपन तात्त्विक आधारपर चलत।

ओझा-गुणी आ तांत्रिक मानसिकताक आलोचना एहि कथामे तीक्ष्ण अछि। बच्चाक हाथक रेखा देखि ओकर भविष्य तय करब शिक्षा-विरोधी प्रवृत्ति अछि। बच्चाक भविष्य परिश्रम, शिक्षा-संस्कार आ विकास-प्रक्रियासँ बनैत अछि, भाग्य-वाचनसँ नहि।

स्त्री-शिक्षा आ विवाहक प्रश्न सेहो कथामे उठैत अछि। जे मिथिलामे ऋषिका सभ भेलथि, सीता सन कर्मठ बेटी भेलथि, स्वयंवरक परम्परा रहल, ओतए आइ स्त्री-शिक्षा आ स्व-विवेकपर एतेक शंका किएक? ई प्रश्न मिथिलाक गौरवस्मृति आ आजुक रूढ़ि बीचक विरोधाभास खोलैत अछि।

धानक कमठौन शीर्षक कथा नव पीढ़ी आ कृषि-संस्कारक बीचक संवादक कथा अछि। एहिमे मोबाइल-संस्कृति, खेलक आकर्षण, खेतक मोल आ धनक वास्तविक अर्थ एकसंग खुलैत अछि। विश्वनाथ बाबा लतामक बगानमे घुमैत छथि। सातटा लतामक गाछ अछि, सात रंगक फल अछि, बारहो मास फल देबाक सम्भावना अछि, मुदा रोगसँ फड़ आक्रान्त अछि। आरम्भे खेती आ जीवनक चिन्तासँ भरल अछि।

दस बर्खक पोता सुधीर मोबाइल नेने बाबाक लग अबैत अछि। मोबाइल ओकर खेलौना अछि, आकर्षण अछि, नवका संसार अछि। विश्वनाथ बाबा एहि संसारकेँ नकारैत नहि छथि। मुदा ओ चाहैत छथि जे बच्चा खेत, गाछ, धान, कमठौन आ परिवारक श्रमक मोल सेहो बुझए। मोबाइलक चमक खेतक हरियालीकेँ ढाकि नहि देए।

कथामे धानक कमठौन धनक वास्तविक अर्थ बनैत अछि। बच्चा बजारक चीज आ मोबाइलक खेलमे जल्दी आकर्षित होइत अछि। मुदा बाबा बुझबैत छथि जे अन्नक ढेरी, घरक भात, पशुक चारा, बीजक सुरक्षा आ परिवारक भविष्य धानसँ बनैत अछि। धान किसानक बैंक अछि। कमठौन घरक आत्मविश्वास अछि। धानक दाना **पसेना**क संचित रूप अछि।

एहि कथामे पीढ़ी-संवाद विशेष महत्त्वक अछि। विश्वनाथ बाबा डाँटि कऽ नहि, समझा कऽ बात करैत छथि। ओ बच्चाकेँ खेतक अर्थ देखबैत छथि। गाछक रोगसँ सीख दैत छथि। समयपर देखभाल नहि भेल तँ फल नष्ट होइत अछि। तहिना बच्चाक जीवनो अनुशासन बिना दिशाहीन भऽ सकैत अछि।

धानक कमठौन एहि संचयनमे कृषिक अर्थ-संस्कारक कथा अछि। ई

देखबैत अछि जे नव तकनीक उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा जीवनक मूलाधारपर चढ़ि बैसबाक छूट नहि देल जा सकैत। बच्चाक भविष्य मोबाइलक चकाचौंधसँ नहि, खेत, अन्न, अध्ययन, अनुशासन आ परिवारक श्रम-संस्कारसँ बनत।

चपरासी गाम शीर्षक कथा गामक नाम, सामाजिक स्मृति, सरकारी व्यवस्था आ श्रम-सम्मानक प्रश्न उठबैत अछि। कथा एहि प्रश्नसँ शुरू होइत अछि जे गामक नाम कोना बनैत अछि। नाम इतिहासक संकेत होइत अछि। कखनो ओ गौरव दैत अछि, कखनो अपमानक बोझ बनि जाइत अछि। चपरासी गामक नामो एही प्रकारक सामाजिक स्मृति बनि गेल अछि।

कथामे चपरासी पद साधारण सरकारी पद मात्र नहि, सत्ता-संरचनाक निम्न पायदानक प्रतीक अछि। सरकारी दफ्तरमे चपरासी आदेश बजबैत अछि, कागज पहुँचबैत अछि, दुआर खोलैत-बन्द करैत अछि। मुदा समाजमे ओकर पद सम्मानक ऊँचाई नहि पबैत। गामक नाम जखन चपरासीसँ जुड़ैत अछि, तखन लोक ओकर अर्थ अपना ढंगसँ बनबैत अछि।

मण्डलजी एहि कथामे लोक-अपवादक प्रक्रिया देखबैत छथि। गामक नामक पाछाँ कोन घटना छल, कोन इतिहास छल, कोन श्रम छल, से धीरे-धीरे ओझराइत अछि। लोक नाम पकड़ैत अछि, अर्थ बनबैत अछि, उपहास करैत अछि। समाजक स्मृति अनेक बेर सत्यक संरक्षण नहि करैत, अपमानक पुनरावृत्ति सेहो करैत अछि।

कथा सरकारी व्यवस्था आ ग्रामीण आत्मसम्मानक सम्बन्धपर प्रश्न उठबैत अछि। जे पद व्यवस्था चलबैत अछि, ओकर श्रमकेँ सम्मान किएक नहि? चपरासी बिना दफ्तर चलत नहि, मुदा ओकर सामाजिक मोल कम आँकल जाइत अछि। एहि विरोधाभासमे श्रम-विभाजनक अन्याय नुकाएल अछि।

चपरासी गाम शीर्षक कथा नामक भीतर नुकाएल सामाजिक अर्थ खोलैत अछि। समाज जे शब्दसँ केकरो चिन्हैत अछि, ओ शब्द ओहि समुदायपर प्रभाव छोड़ैत अछि। मण्डलजी संकेत करैत छथि जे सम्मानजनक समाज शब्दक **न्याय** सेहो करैत अछि। नामक भीतर लुकल इतिहासकेँ बुझब जरूरी अछि।

रोजगार शीर्षक कथा सरकारी योजना, पूँजीक सीमितता, कौशलक अभाव आ ग्रामीण गरीबक आकांक्षाक कथा अछि। गुलेतियाकेँ रोजगार चाही।

घरक गरीबी अछि। जीवनमे आगू बढ़बाक इच्छा अछि। सरकारक योजना, कर्ज, अनुदान, प्रशिक्षण आ रोजगारक चर्चा ओकरा दिस सम्भावना जकाँ अबैत अछि। मुदा रास्ता सीधा नहि अछि।

कथा देखबैत अछि जे रोजगार कागजपर बनि जाइत अछि, मुदा जीवनमे ओकरा ठाढ़ करबाक लेल ज्ञान, कौशल, बाजार-बोध, पूँजीक सही उपयोग आ निरन्तर मार्गदर्शन चाही। सरकारी कर्ज भेटब पर्याप्त नहि। व्यवसाय चलाएब, माल तैयार करब, ग्राहक पएब, हिसाब राखब आ घाटा-सूद बुझब सेहो जरूरी अछि। ई सभ बिना रोजगार जल्दी भ्रम बनि जाइत अछि।

गुलेतियाक आकांक्षा एहि कथाक मानवीय पक्ष अछि। ओ काज चाहैत अछि, सम्मान चाहैत अछि आ घरक दशा बदलए चाहैत अछि। मुदा ओकरा जे व्यवस्था भेटैत अछि, ओ आधा-अधूरा सहारा दैत अछि। योजना लोक धरि तँ पहुँचैत अछि, मुदा ओकर सही उपयोग लेल आवश्यक परामर्श नहि पहुँचैत। कर्ज भेटैत अछि, प्रशिक्षण नहि। आश्वासन भेटैत अछि, दीर्घकालीन सहारा नहि।

मण्डलजी एहि कथामे रोजगारक प्रश्नकेँ सामाजिक **न्याय**सँ जोड़ैत छथि। बेरोजगारी व्यक्तिगत आलस्यक परिणाम नहि, कौशल, संसाधन, शिक्षा, बाजार, मार्गदर्शन आ व्यवस्था सभक संयुक्त समस्या अछि। गरीब युवककेँ व्यवसायक नामपर कर्ज देब आ फेर ओकरा एसगर छोड़ि देब **न्याय** नहि।

रोजगार शीर्षक कथा संचयनमे भविष्यक प्रश्न उठबैत अछि। कृषि संकटमे अछि, मजदूरी अनिश्चित अछि, शिक्षाक बाद नौकरी कठिन अछि। एहनमे स्व-रोजगारक बात आकर्षक बुझाइत अछि, मुदा स्व-रोजगारक लेल सुदृढ़ सामाजिक ढाँचा चाही। मण्डलजी एहि बातकेँ कथात्मक ढंगसँ स्पष्ट करैत छथि।

न्याय चाही शीर्षक कथा न्याय-व्यवस्था, उत्तरदायित्व, वृद्धावस्था आ संस्था द्वारा साधारण मनुष्यपर दोष मढ़बाक गंभीर कथा अछि। शम्भु काका पचासी बर्खक छथि। देह थाकल अछि, मुदा भीतर न्याय-बोध जीवित अछि। ओ सोचैत छथि जे जखन जिनगीक हिसाब-किताब देबाक समय आबि गेल, तखन अपन बात अपने रखि देब उचित अछि।

कथा न्यायकेँ अदालतक फैसला धरि सीमित नहि करैत। **न्याय** एतए मनुष्यक आवाज सुनबाक अधिकार अछि। शम्भु काका डरैत नहि। ओ कहैत

छथि जे जँ शासन दोख दोसरापर मढ़ि सजा देत, तँ ओ अपन बात रखताह, स्वीकार नहि करताह। लड़ि मरी कि सड़ि मरी, मुदा बात कहताह। ई वृद्ध मनुष्यक असाधारण नैतिक साहस अछि।

एहि कथामे वृद्धावस्थाक जीवन-सत्य विशेष अर्थ रखैत अछि। जीवनसंगी, परिवार, जिम्मेदारी आ स्मृति सभ एहिठाम नव अर्थ पबैत अछि। शम्भु काकाक भीतरक बेचैनी निजी नहि, व्यवस्था आ समाज द्वारा साधारण मनुष्यपर लादल दोषारोपणक बोझक प्रतिरोध अछि। जखन संस्था असफल होइत अछि, तखन दोष अक्सर कमजोर मनुष्यपर मढ़ल जाइत अछि। कथा एहि प्रवृत्तिक आलोचना करैत अछि।

न्याय चाही शीर्षक कथा-संचयनमे **न्याय** शब्द अपन पूरा अर्थक संग उपस्थित अछि। **न्याय** माँगब दया माँगब नहि होइत अछि। ई मनुष्यक अधिकार, अस्तित्व आ आत्मसम्मानक दावा अछि। मण्डलजीक पात्र जे बूढ़ अछि, देहसँ कमजोर अछि, मुदा चुप्प बैसल नहि अछि। ओकर आवाज ई स्पष्ट करैत अछि जे मनुष्यक जीवनक अन्तिम क्षण धरि ओकर भीतर आत्मसम्मान, प्रतिरोध आ न्याय-बोध जीवित रहि सकैत अछि।

समग्र रूपमे **धरती, पसेना आ न्याय** मण्डलजीक कथा-संसारक एक सघन सामाजिक पाठ अछि। एहि संचयनक कथासभ अलग-अलग प्रसंगसँ बनल अछि, मुदा मूल चिन्ता एक अछि। मनुष्यक जीवन केना बचाओल जाए? श्रमक मोल केना चिन्हल जाए? शिक्षा, रोजगार, परिवार, स्त्री-श्रम, जाति, कृषि आ न्यायक प्रश्नकेँ एक समाज अपन भीतर केना परखे?

मण्डलजीक कथा-दृष्टि साधारण मनुष्यक पक्षधर अछि। मुदा ई पक्षधरता भावुक नहि। एहिमे अनुभव अछि, तर्क अछि, लोक-बुद्धि अछि आ नैतिक साहस अछि। हुनका लग साहित्य जीवनक बाहरक सजावट नहि। साहित्य जीवनक भीतरसँ उठल विचारक अनुशासित रूप अछि। ओ कथा लिखैत छथि, मुदा कथा भीतर समाजक नाड़ी धड़कैत रहैत अछि।

एहि संचयनकेँ पढ़ैत काल स्पष्ट होइत अछि जे माटि स्थिर वस्तु नहि, इतिहास अछि। **पसेना** देहक थकान नहि, सभ्यता बनेबाक शक्ति अछि। **न्याय** बाहरी अनुग्रह नहि, मनुष्यक जन्मसिद्ध गरिमा अछि। मण्डलजी एहि तीनूकेँ कथा, पात्र, संवाद आ प्रसंगक माध्यमसँ जीवित करैत छथि।

एहि कारण **धरती, पसेना आ न्याय** मिथिलाक लोकजीवनक साधारण कथा-संचयन मात्र नहि अछि। ई मण्डलजीक सामाजिक संवेदना, कृषि-बोध, श्रम-दृष्टि आ न्याय-चेतनाक सघन सामाजिक-साहित्यिक दस्तावेज अछि। एहि संचयनमे मिथिला अपन घर, खेत-पथार आ श्रमशील मनुष्यक जीवनक संग उपस्थित अछि। किसान, स्त्री, विद्यार्थी, बेरोजगार युवक आ न्यायक खोजमे ठाढ़ वृद्ध पात्रक माध्यमसँ ई उपस्थिति साहित्यिक, सामाजिक आ मानवीय तीनू स्तरपर अर्थवान बनैत अछि।

समग्र रूपमे ई संचयन मण्डलजीक कथा-दृष्टिक ओहि केन्द्रीय स्वरकेँ सामने अनैत अछि, जाहिमे गाम जीवनक पछुआएल दृश्य नहि, मनुष्यक श्रम, विवेक आ संघर्षक जीवित पाठ बनि जाइत अछि। एहि कथासभमे खेत केवल उत्पादनक धरातल नहि, सम्बन्धक परीक्षा-स्थल अछि; पसेना केवल देहक थकान नहि, मनुष्यक अधिकारक भाषा अछि; आ **न्याय** केवल शासन-संस्थाक शब्द नहि, साधारण लोकक आत्मसम्मानक माँग अछि।

मण्डलजीक विशेषता एतए अछि जे ओ गामकेँ भावुक रंगमे नहि रँगैत छथि आ नहि ओकरा केवल संकटक अन्हारमे देखैत छथि। ओ जीवनक ओहि धरातलपर ठाढ़ छथि, जाहिठाम दुख अछि, मुदा पराजय नहि; अभाव अछि, मुदा विवेक मरल नहि; अन्याय अछि, मुदा मनुष्यक भीतर प्रतिरोधक आवाज अखनो जीवित अछि। एहि लेल हुनकर कथा पढ़ब मिथिलाक खेत-पथार, घर-आँगन, ऋतु-पाबनि, श्रम-संस्कार आ सामाजिक संघर्षक भीतर नुकाएल नैतिक प्रश्नसभसँ सामना करब छी।

धरती, पसेना आ **न्याय** एहि दृष्टिए केवल चौदह कथाक संचयन नहि, मण्डलजीक कथा-चिन्तनक सार-संकेत अछि। ई पुस्तक पाठककेँ एहि बातपर फेरसँ सोचए लेल बाध्य करैत अछि जे समाजक असली मूल्य ओहि लोकमे बसैत अछि, जे चुपचाप धरती जोतैत अछि, पसेना बहबैत अछि आ अन्यायक बीचो न्यायपर भरोस छोड़ैत नहि। एहि कथासभकेँ ध्यानसँ पढ़लापर स्पष्ट होइत अछि जे मण्डलजीक कथा-साहित्यक मूल लक्ष्य मनोरंजन नहि, मनुष्य आ समाजक भीतर बाँचल नैतिक चेतनाकेँ जगाएब अछि।

एहि अर्थमे प्रस्तुत संचयन आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यक ओहि परम्पराकेँ सुदृढ़ करैत अछि, जाहिमे लोकजीवन साहित्यक विषय मात्र नहि,

साहित्यक नैतिक आधार बनैत अछि। मण्डलजीक कथा-संसार हमरा सभकेँ स्मरण करबैत अछि जे धरतीसँ कटि कऽ समाज नहि बचैत, पसेनाक मोल बुझने बिना सभ्यता नहि बनैत आ **न्याय**क आग्रह छोड़ि देलासँ मनुष्यक गरिमा सुरक्षित नहि रहैत। एहि संचयनक सार्थकता एही जागरूक, श्रमशील आ न्यायाभिमुख पाठकीय चेतनाक निर्माणमे अछि।

एहि कथा-संचयनक तैयारीमे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपसँ सहयोग देनिहार सभ साहित्य-प्रेमी, पाठक, शोधार्थी आ प्रकाशन-सहयोगीक प्रति हम साभार छी। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-साहित्य स्वयं मिथिलाक माटि, श्रम आ लोकजीवनसँ उठल अछि; तैँ एहि संचयनक असली आभार ओहि साधारण लोकक प्रति सेहो अछि, जिनकर जीवन-संघर्ष, पसेना आ न्याय-बोध एहि कथासभमे धड़कैत अछि। पल्लवी प्रकाशन द्वारा एहि कथासभकेँ एकत्र कऽ पाठक-समाजक समक्ष राखल जाएब मैथिली साहित्यक अध्ययन-परम्पराक दृष्टिए महत्त्वपूर्ण काज अछि। आशा अछि जे पाठक एहि संचयनकेँ केवल कथा-पाठक रूपमे नहि, अपन समय, समाज आ लोकजीवनकेँ बुझबाक एक गंभीर अवसरक रूपमे ग्रहण करताह। पाठकक विचार, प्रतिक्रिया आ आलोचनात्मक सुझाव एहि प्रयासकेँ आगूक यात्रा लेल आरो उपयोगी आ सार्थक बनाओत।

- डॉ. नानटुन पासवान

वरीय सहायक प्राध्यापक,

मैथिली विभाग,

एम.एच.एम कॉलेज,सोनवर्षा, सहरसा।

Mobile no: 9507010725

एक धाप जमीन

✳

भिनसुरका काज-उदमसँ निचेनो ने भेल छेलौं। सुनलौं जे दिनेश भाय कपार फोड़ा लेलैन। भोरे-भोर एना किए भेलैन, अखन तँ शरीरक सभ अंग भकुआएले रहल हेतैन। यात्रा दिस नजैर गेल। दही माछक यात्रा नीक होइ छै मुदा केकरा-ले? अधखरूआ काज छोड़ि जाएब उचित नइ बुझलौं। तैबीच पनिगर समांग सभ दिनेश भायकेँ छैन्हे पाइ-कौड़ीबला भइये गेल छैथ, झंझारपुर लऽ जा प्राइवेटमे भर्ती करा देलकैन।

चुल्हिक जारैनसँ लऽ कऽ तरकारी धरिक ओरियान कऽ निचेन भेलौं चाह पीलौं। तैबीच, जहिना धारक पानि आ वायुमण्डलक हवा उधियाइए तहिना रस्ते-पेरे बात उड़िया गेल जे एक धाप जमीन-ले दुनू भैयारीमे झगड़ा भेलैन। ओइ जमीनमे केराक घौर, छठि पाबैनमे दुनू भाँइ टहैल-बुलि कऽ एकठाम भेला। परिवारक पछुआएल काज देखि देहमे खौंत फेकनहि रहैन कि दुनू केरे बीटक बीच फरियौलैन। ओना, दुनू भाँइ गामेक स्कूल धरि नियमित छात्र रहला मुदा समैयो तँ समैये छी। सदिकाल उर्कुसी उड़ियैबते रहैए। जँ से नइ तँ आब कहाँ देखै छी उक्खैर-समाठ आकि हर-पालोक चोरकेँ? तँए की चोरक वंश मेटा गेल? मनमे भेल जे भने नीके भेल जे रस्ते–पेरे जिगेसो भऽ जाएत आ किछु ऐगलो भाँज लगि जाएत जे दिनेश भाइक कपार फुटलैन तँ फुटलैन, ब्रेन ने तँ हेम्रेज भेलैन।

दरबज्जासँ निकैलते देखलौं जे रस्ते-पेरे समाददाता सभ समाद बिलैह रहल छैथ। समादो तँ अजीब होइए किने, एक्के घटना दस रंगक बनि जाइए। एना किए? पहिल घरवासी गामक नेताइन, जँ पड़ोसिया बनि हमहीं नइ मोजर दैतिऐन सेहो तँ नीक नहियेँ होएत। पुछलयैन- “की घटना भेल अछि?”

वेचारी अपने बेथे बेथाएल, जे तीन हजार रुपैआ नोकरीक नाओंपर दिनेश भाय ठकि नेने रहथिन। अनधुन बाजए लगली-

"नीक भेल एक भाँइ कपार फोड़ौलक, दोसर मारि खेलक। ओना मारि तँ दुनू खेलक। मुदा एकटा चुपा दोसर देखौआ...।"

गपक कोनो अरथे ने लगल जे घटनाक जड़ि की। मुदा नीक-अधलाक विचार भऽ गेल। चुपे आगू बढ़लौं तँ दोसर गोरे कहलैन-

"छोट भाए भऽ कऽ पैघपर हाथ उठाएब दिनेशकेँ नीक भेलैन। दुनू भाँइकेँ तँ भगवाने बड़का-छोटका बनौने छथिन।"

घटना तँ हराएले रहल मुदा एकटा पन्ना तँ भेटल। पन्नो तँ पन्ना होइए, मुदा दोसरो-तेसरो तँ पन्ने कहबैए। रस्ता दिस आँखि उठैबते ललितपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते मनमे भेल जे आब सभ भाँज लगि जाएत। लग अबिते ललितकेँ पुछलिऐ-

"बौआ, दिनेशजीक समाचार कहह?"

मनमे भेल जे धुर्रफन्दा लोक 'ललित' ऐछे, जँ कहीं अपने गाड़ीपर बैसा डॉक्टर लग लऽ गेल होइथ। खाएर जे हौउ, धुअल-पखारल शब्दमे ललित बाजल- "काका, अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे हम रोड परहक आदमी भेलौं, एको मिनट पलखैत कहाँ होइए जे गामो-घर दिस देखब। तहूमे ठीकेदारी तँ आरो जपाल अछि। तेहेन लफड़ा ऑफिस लगा देने अछि जे की कही, अखनो ऑफिसेसँ अबै छी।"

ऑफिसक नाओं सुनि अचम्भित भेलौं जे भोरे-भोर कोन ऑफिस चलै छै जे कहैए ऑफिसेसँ एलौं। पुछलिऐ- "भोरे-भोर ऑफिस?"

निधोख ललित बाजल-

"लेन-देनक ऑफिस तँ डेरे छै किने।"

बात आगू नै बढ़ा, पुछलिऐ-

"एक बेर दिनेशजीक जिगेसा कऽ लेब तँ जरूरीए अछि किने, तइमे तोरा तँ आरो बेसी उपराग देथुन जे बेरपरक ललित नइ छी।"

काजक झमारल ललित बाजल- "काका, समाजक लीले गड़बड़ अछि, अहीं कहू जे ई उचित भेल जे एक घौर केरा-ले अपनो अस्पतालमे बरदाइ आ

दोसो-महीमकेँ बरदाबी। तहूमे कि कोनो हमरा पहिने कहि देने छला जे एक घौर केरा-ले दुनू भाँइ माइर करब।”

पुछलिऐ-

“से की ओ जनै छला?”

ललित बाजल- “भरि दिन पोथी-पतरा कन्हेमे लटकल रहै छैन आ अपनो दिन-बेरागन नइ बुझै छैथ। एक साए बेर दरबज्जापर जाएब, तखन धोपचटमे गोटे बेर भेट जेता, एहेन उड़नबाज दुनू भाँइ छैथ, तखन कहू जे केना केरा घौर कपार फोड़ा देलकैन। मुदा जे हौउ, समाजोक तँ दायित्व अछि। तइसँ एक बेर जा कऽ हाल-चाल पुछि लेब जरूरीए अछि।”

कहलिऐ- “भने तोरा सवारियो छह, तीन बजेमे चलह।”

धुर्रफन्दा ललितकेँ बात नीक लगलै। बहानाक गवाही बिनु तकनहि भेट गेलिऐ। बाजल-

“काका, भने पान-छह घन्टा समैयो अछि, ताबे हमहूँ बैंकक काज कऽ लेब। निचेनसँ चलब जे आठ-नअ बजे राति तक घुमि आएब।”

ओना तत्खनात गपमे काट-खोंट करब उचित नइ बुझलौं, मुदा ओकर ‘आठ नअ बजे’ आ अपन ‘आठ-नअ बजे’मे अन्तर तँ बुझिए पड़त। साढ़े-पाँच छअ बजे तक संभव अछि। कहलिऐ-

“बड़बढ़ियाँ।”

महेश-दिनेश सहोदर भाए। ओना अर्थ रोगसँ पीड़ित परिवार, तँए गामक स्कूल छोड़ि बाहरक स्कूल-कौलेजक नियमित विद्यार्थी नै रहला मुदा एम.ए; पी.एच.डी.क सर्टिफिकेट नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। समय तेहेन भऽ गेल अछि जे पाइक खेल कोनो स्कूलकेँ चमका रहल अछि, तँ कोनोकेँ धमका रहल अछि। ओना, बम्बैया कलाकार जकाँ दुनू भाँइ चौबीसो घन्टा मेकअपेमे रहै छैथ। एकरंगा चेहरा दिन-राति रहिते छैन। वएह आल रंगक अंगा, खौंरकी, कट्ठा डेढ़ेक सिनूरक ढिमका आ बिनु कमाइल देलहा केश-दाढ़ी तँ बनौनहि छैथ। दुनू भाँइ तारा-ऊपरी छैथ, रहबो केना ने करता, दुनियाँ की कनियेँ-टा अछि जे दस कट्ठा अहाँ जोतिए लेब तँ दुनियेँ जोता जेतइ। समाजक स्त्रीगणक कौलेजक प्रोफेसरी ने महेश करै छैथ, मुदा अदहासँ बेसी पुरुखक कौलेज तँ खालीए अछि।

पारखी दिनेश, समाजेमे नोकरी ताकि लेलैन।

मुदा दू दुनियाँमे दुनू भाँइक जिनगी तखन भैयारीमे एना भेलैन? छगुन्तामे पड़ल छेलौं। जहिना कौर्नर-बौल फेकैक अभ्यास खेलाड़ी करैए तहिना रंग-रंगक सोंगर लगा जुति धरबी तँ केतौ सोंगर नम्हरे भऽ जाए आ केतौ छोटे भऽ जाए। कुजुति देखि मन भन-भनाइते रहए कि महेश भाइक मझिला बेटा पहुँचला। होइते छै कोनो घटना घटला पछाइत घरवारी कोट-कचहरी, अस्पतालसँ गाम-घर धरि घुमि कनसोह लइते अछि। नव समाचारक जिज्ञासा बढ़ले छल। पुछलिऐ-

“बाउ, सुनै छी अहीं दिनेश भाइक कपार फोड़ि देलिऐन! कहुना अहाँ भेलिऐन तँ बेटे-भातिज ने भेलिऐन, तखन..?”

मनमे भेल जे घटनाक जड़ि छुटि गेल आ दोसर पन्ना उलैट गेल। मुदा जेना गणेशकेँ प्रश्नक उत्तर पहिनेसँ तैयार होइ तहिना ठाँहि-पठाँहि बाजल-

“ऊहो भातिज बुझता तखन ने पित्ती बुझबैन- ‘भाए-भैयारी महींसिक सींग जखने जन्मल तखने भीन।’ पित्ती नै दियाद छिया, दियाद जकाँ रहबैन!”

गणेशक ठमकल बात सुनि अपनो मन ठमैक गेल। ठमैकते ठहकए लगल जे चालि-चलैन तँ सचमुच दिनेशक दब छैन्हे, जखने परिवारक चालि-चलैन दबत तखने पारिवारिक सम्बन्धमे कमी औत...। बातकेँ मोड़ैत पुछलिऐ-

“झगड़ा किए भेल?”

मुस्की दैत गणेश बाजल-

“काका, जँ जड़ि बुझही तँ एक धाप जमीन-ले झगड़ा भेल। मुदा परिवार परिवार छिऐ, खापैड़क भुज्जासँ तस्मै धरि चुल्हिपर चढ़ै छइ।”

सुनि-सुनि हँसियो लागए मुदा हँसैयौक तँ अर्थ छै, कियो जीतला पछाइत हँसबैए तँ कियो घिनाइत हँसबैए। तँए हँसीकेँ पेटेमे रोकि पुछलिऐ-

“की एक धाप जमीन?”

“दुनू भैयारीमे गामक तँ सभ किछु बँटाइए गेल छैन, पाही पट्टी अपन-अपन छैन्हे तँए ओहो बँटाएले छैन। एकटा बीट केरा अछि। गौसार छइहे, खूब नमहर-नमहर घौर होइ छइ। ओही-ले मारि भेल।”

“नइ बुझलौं?”

“बँटै दिन दुनू भैयारीमे मेहदी जकाँ मेदहा रहैन, नै बँटलैन। किछु दिनक पछाइत आबि काका कहलैन जे गणेश चलह केरा बीट बँटैले। कहलयैन अहाँ भैयारीक बँटवारा छी, अपन बाँटि दियौ। एक थाप बढ़ा कऽ आड़ि दऽ देलखिन। बाबूओ तँ सभ दिन बाहरे रहै छैथ। तेते ने बाहरी काज रहै छैन जे महिनामे गोटे राति गाम-विश्राम होइ छैन। औगताएल रहने ई बाते बिसरा गेलैन। नानी गामसँ समाद आएल जे तांत्रिकजीकेँ एक घौर केरा पठा दइले कहियौन। ...आब अहीं कहू काका, एक तँ वेचारी नानी बुढ़ छैथ तैपर ओ सभ बाबूकेँ पाहुन नै कहि तांत्रिकेजी कहै छैन। हिनको अपन ने महात्म्य छैन।”

“हँ।”

‘हँ’क अर्थ गणेशकेँ की लगलै से ओ जानए। कहलिऐ-

“तोहर जिगेसा तँ भइये गेल, आब कनी दिनेशोजीक जिगेसा कऽ लेबैन।”

तीन बजे तैयार होइते रही कि ललित पहुँचल। चाह पीब दुनू गोरे विदा भेलौं। सीमा टपिते ललित बाजल- “काका, समुद्रक लहैर जकाँ गामो-घरमे लहैर अबै छइ।”

ललित कथी बाजए चाहै छल से नइ बुझि पेलौं। पुछलिऐ-

“की लहैर?”

बाजल- “गाममे चोर अबै छेलै आकि आगि लगै छेलै, आवाज सुनिते ओकरा भगबै-मिझबै छेलौं। मुदा एहेन नीक बेवहारमे आगि मिझौनिहार अगिलगौन आ चोर भगौनिहार चोरिकरौनक संग चोरबा केना बनल?”

ललितक प्रश्न सुनि बकार बन्न भऽ गेल। मानि लेलिऐ जे ललितक विचार जरूर विचारणीय अछि, से तँ मोटर साइकिलपर नइ हएत। बजलौं-

“तूँ डरेबरी करबह आकि गामक जड़ि खोदबह।”

दिनेशजीकेँ भेँट करैत पुछलयैन- “डॉक्टर साहैब की सभ कहलैन?”

दिनेश-

“कहलैन जे मारि किछु बेसी लगि गेल अछि तँए ओ तँ निजाइते निजाएत। मुदा हँसुआक पीठ माथमे बेसी धँसल नइ अछि, ओहो जल्दीए ठीक भऽ जाएत।”

दुनू गोरे डॉक्टर लग पहुँच पुछलयैन- “डॉक्टर साहैब, दिनेशजीक की स्थिति छैन?”

“नीके छैन।”

“पाइ-कौड़ी दुआरे इलाजमे कमी नै होइन।”

“एह! से कि दिनेशजीकेँ चिन्है नै छिऐन। अनाड़ी किए बुझै छी।”

घुमि कऽ आबि दिनेशजी लग दुनू गोरे बैस गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलयैन- “दिनेशजी एना किए भेल?”

जाबे दिनेश किछु बाजैथ तइसँ पहिने हुनकर पत्नीए टपैक गेली- “हमर कपारे जरल अछि, तँए ने एहेन जरल घरबला भेला। जँ से नै रहितैथ तँ एतबो ने बुझा कऽ कहल भेलैन जे छठिमे नैहरसँ एक घौर केराक मांग भेल अछि, ओहो कि कियो आन भेला, जेहने अपन तेहने ने अहूँकेँ।”

ललितकेँ चुटका सुतरल। चुटकी लैत बाजल-

“ई की कोनो नव गप छी, सासुरमे भैयारीक कोन बात जे समाजे सासुर जकाँ नीक-अधला करैए। तहूमे छठि सन पाबैन, बिना ठकुआ-केरा-भुसबाक केना हएत।”

आन समय दिनेशजीकेँ पत्नीक बोल जेहेन मीठगर आकि तेलगर लगैत होनि मुदा अखन नीक नइ लगलैन। लाल आँखि बना ललौन बोलीमे दिनेशजी बजला-

“समाज जिगेसा करए एला, तिनकर स्वागत-बात छोड़ि चण्डी-काली बनि जाउ। जखन गड्डीक-गड्डी आनि कऽ दइ छी, तखन रसिक पिया बनि जाइ छी, आ अखन कपरजरूआ बनि गेलौं। पत्नी छी पत्नी जकाँ रहू!”

दिनेशजीक तामसकेँ रोकैत ललित बीच-बचाव करैत बाजल-

“भौजी, एतबो नइ बुझै छिऐ जे अखन भाय-साहैबक देहमे चोटोक दर्द छैन आ कपारमे लोहोक बीन-बीनी हेबे करतैन। जरलपर जारैन देबै तँ धधड़ा नै धधकत! चुप रहू। भाय-साहैब, अंगूर हमहूँ अनने छी, खाइक मन होइए?”

दुनू बेकतीक झगड़ा जे हौनु मुदा एकटा प्रश्न तँ ठाढ़े भऽ गेल। ओ ई जे पति-पत्नीक बीच सम्बन्धक रेखा केहेन हेबा चाही। कियो पति चरित्रसँ बिगड़ल छैथ आ पत्नी चरित्रवाती छैथ, तखन दुनूक बीचक सम्बन्ध केहेन होइ? कियो

पत्नी घूसखोरीक विरोधमे रहैथ आ पति दिन-राति घूस लथि तैठाम पत्नी-पतिक पाइक उपयोग नै करती?

दिनेशजीक बिगड़बसँ लाभे भेल। छुच्छे चाहक जगह जलखैयो आएल। दिनेशजीकेँ पुछलयैन- “अहाँ सन लोकले नीक भेल?”

दिनेश हरदा बाजि गेला-

“दिनक दोख छल। नइ तँ साल भरिसँ दुनू भैयारी एकठाम बैस चाहो ने पीने छेलौं। पीबो केना करितौं, हुनको अपन दुनियाँ छैन, अपनो अपन अछि। महिनामे साइते गोटे राति गाममे बीतैए, नइ तँ बाहरे रहै छी। साँझमे आएले रही। खाइ बेर पत्नी कहलैन जे सासुरसँ केराक आढ़ैत भेल। छठम्मे दिन छठि छिऐ। दू दिन घरोमे रहतै। ..पुछलयैन तँ कहलैन जे अपने बीटमे केरा अछि। सतबजिया गाड़ी पकैड़ पटना जाइक रहए ऑफिसमे केते रंगक काज पछुआएल छेलए। अनदिना ने भीड़ो रहै छै, पाबैन-तिहारमे तँ सेहो कमिए जाइ छइ। तँए अन्हरोखे हाँसू नेने केरे बीट लग पहुँचलौं।”

टोकलयैन-

“अन्हरोखक माने?”

दिनेशजी तिलमिला गेला। अन्हरोख भोरोमे होइ छै, साँझोमे होइ छइ। सौंझुका अन्हरोख बदलैत-बदलैत अन्हारमे बदैल जाइ छै मुदा भोरका तँ फरिच होइत-होइत फरिछा कऽ दिन भऽ जाइ छइ। तँए ने जेबोक समय होइ छइ।

ततमत करैत देखि दोहरबैत कहलयैन-

“साँप-कीड़ा अन्हार-धुन्हारमे करजान सभमे रहै छै, तखन किए गेलौं। अच्छा, ओते भोरमे ओ सभ केना पहुँचला?”

दिनेशजी बजला- “सएह ने बुझि पेलौं, जे नियारि कऽ गेल रहैथ आकि ओहिना देखलैन तँ पहुँचला।”

पुछलयैन- “ओ सभ तँ सतबजिया सुतनिहार छैथ तखन केना एकठाम भेला? खाएर छोड़ू। बुझा कऽ नै कहलिऐन जे कुटुमारे केरा जाएत।”

दिनेशजी-

“भातीजकेँ कहलिऐ, गणेश जेहने हमर सासुर तेहने ने तोरो ममहर भेलह। तखन तोहीं कहह?”

“गणेश की कहलैन?”

जाबे दिनेशजी बजितैथ तइ बिच्चेमे पत्नी झपैट कऽ बजली-

“हुनका सभकेँ धनबूबूक ने भऽ गेल छैन। हम तँ सहजे दियादे भेलिऐन। सभ जनै छी जे दियाद आ दालि जेते गलै छै तेते सुअदगर होइ छइ। अनको की ओ सभ जीहमे लगबै छथिन।”

दिनेशजीक पत्नी–केकैयी–क बात सुनि ललित बाजल-

“भौजी, अहीं कोन उतकिरना केलौं। जँ एक घौर केरे छठिमे नैहर पठबैक छेलए तँ दिनेश भायकेँ झंझारपुरेसँ कीनि कऽ पठा दइले कहितिऐन।”

केकैयी बजली-

“मास दिन पहिनहि कहि देने छेलिऐन जे अपने बीटमे केरा अछि, तखन केना कीनि कऽ पठबैले कहितिऐन।”

दुनू गोरे गपकेँ रोकैत बजलौं-

“खाएर जे भेल से तँ भइये गेल, मुदा कोनो धरानी नीक भऽ गाम चलू, तखन बैस अपनामे मुँह मिलानी कऽ लेब।”

हमर बात केकैयीकेँ नीक नै लगलैन। बजली-

“यएह कहौथ जे कियो बेसी समंगर रहत तँ कम समांगबलाकेँ गामसँ भगा देत!”

मुस्की दैत ललित बाजल-

“केकरा के भगौलकै हेन जे अहाँकेँ भगा देता। अनेरे मने-मन परेशान होइ छी। भैयारीक बात छी, हमसब समाज भेलौं, अहाँ जे कहै छी से बिना हुनकोसँ बुझने केना उत्तर देब।”

चिन्तित होइत दिनेशजी बजला- “देखियौ, एक तँ ओहिना ऑफिसक काज सभ पछुआ गेल अछि, तैपर ऐठाम बरदा गेलौं!”

ऑफिसक काज सुनि पुछलयैन- “अहाँकेँ ऑफिसक कोन काज अछि जे पछुआ गेल। नोकरी तँ नहि करै छी।”

दिनेशजी- “अपन काज कहाँ छी, जखन समाजमे रहै छी ऑफिस जाइ-अबै छी, तखन अनकर काज नइ करिऐ, से नीक हएत?”

दिनेशजीक बात सुनि भेल जे ऑफिस तँ अखन लेन-देनक अखाड़ा बनल अछि। जइसँ बिनु लेन-देन करैबला अपनो काज छोड़ि रहल छैथ, तैठाम दिनेशजी अनको काज झोरा भरि-भरि करै छैथ तेकर की माने। बेपार कऽ रहला अछि आकि समाज सेवा? खाएर जे हौउ। तही बीच डॉक्टर पहुँचला। ठाढ़े-ठाढ़ डॉक्टर साहैब बजला- “सुधारमे छी किने दिनेशजी?”

गिरगिराइत दिनेशजी कहलकैन- “डॉक्टर साहैब, देहमे दर्द तँ अछिए।”

जहिना गर्म चाहसँ मुँह पकल रहने, कनी कमो गर्म चाह ओहने गरम बुझि पड़ै छै तहिना दिनेशोजीकेँ होइत रहैन। मुदा पाबैनक लहकी देखि सभ बिसैर बजला-

“डॉक्टर साहैब, दबाइ सभ खाइते रहब, मुदा छुट्टी दऽ दिअ जे भोरुका सतबजिया गाड़ी ने छुटि गेल, जँ रौतुको एगरबजिया पकड़ा जाएत तैयो सबेर-सकाल काल्हि पटना पहुँच जाएब।”

हम दुनू गोरे विदा भेलौं। एक तँ अपनो ग्लानिसँ मन भरि गेल, दोसर ललितोकेँ किछु एहेन बात मनकेँ भटभटा देलकै जे बिसाइन होइत-होइत बिस-बिसाइत रहए। ओना दोहरा कऽ चाह पीऐक आग्रह दिनेशजीक बेटो आ पत्नियोँ करैत रहली मुदा सुचित मन जहिना खेबा-पीबाक इच्छा जगबै छै तहिना कुचित मन अनिच्छा सेहो जगैबते छइ। सएह दुनू गोरेकेँ भेल।

..हलाँकी दिनेशजी एते विचार जरूर केलैन जे ललितकेँ कहलखिन-

“ललित, एक तँ अहाँक समय लेलौं तैपर सवारियोक खर्च बढ़ा दी, से नीक नहि। तेलक पाइ लऽ लिअ।”

मुदा ललितोकेँ ठीकेदारीक ताउ रहबे करै बाजल- “गाड़ी तेलक जे हिसाब जोड़ब तखन काज चलत। एतबो आशा हमरा कमाइक नै अछि। अहाँ अखन डॉक्टर ऐठाम छी, केना नीक भऽ गाम पहुँचब ई दायित्व केकर छइ।”

कहि ललित आगू बढ़ि मोटर साइकिल पकड़लक। पाछूमे बैसते रही कि ललितक मुँहपर नजैर पड़ल। जेहने तुरुछल मन तेहने आँखिक भौ बुझि पड़ल। मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नइ बुझि चुपे रहलौं।

कनी आगू बढ़ि ललित बाजल-

“काका, तेहेन दुनू भाँइक किरिया-करम भऽ गेल छै जे कहू दस-दस

लाखक घर बनौने अछि। तैपर दस-दस लाख बेटी-बिआहमे खर्च करै छैथ! केतए-सँ आनै छैथ? दुनू भाँइ तेहेन बहुरूपिया बनि गेल छैथ जे यएह सभ समाजमे भाए-भैयारी बनए देथिन!”

ललितक गंभीर बात मन डोला देलक।

बजलौं- “ललित, बेसी तँ नइ बुझै छी जे असल बात बाजब, मुदा एते तँ मन मानिते अछि जे जे जेते नीच-सँ-नीच जगह परहक पाइ उठबैए ओ ओकर ओते बेसी बेवस भऽ गेल अछि। जे मानवीयताक विपरीत भेल। जँ से नै भेल तँ कहू एक धाप जमीनमे केराक बीट, कोन सोनाक बड़का खान भेलइ, ओहूमे हजार-बजार किछु ने अछि। से साए-सैकड़ाक लालचमे भैयारीक जे परिचए देलैन से तँ देबे केलैन, जे समाजोक परिचए तँ दाइए देलैन!”

समाजक नाओं सुनिते ललितोकेँ शतरंजक सह भेटल। बाजल-

“काका, हमहूँ ठीकेदारेक जिनगी जीबै छी, एकर माने ई नै जे नीक-अधलाक विचार नै करै छी। छाती खोलि गामक चौराहापर बाजि सकै छी, जे भाय समाजक एक्कोटा लाल ई कहि दैह जे फलनमासँ अधला भेल, जँ भेल तँ अखनो ओकरा चर्चमे आनए चाहै छी। मुदा ई दुनू भाँइ तँ कोनो मनुक्खे ने छी।”

“जाए दहक। जे जेहेन करत से तेहेन पौत।” ❑

मुसहैन

✳

भोरेसँ बेलबा घुसकीपट्टीवालीक हरियर मन देखि तारतम करैत रहए जे की बात छिऐ जे यएह घुसकीपट्टीवाली छी जे कहियोकाल जहिना खढ़ देखि लप-दे आगि पकैड़ जरा दइत तहिना बुझि पड़ै छल आ आइ की बात छिऐ..? मुदा चेहरा केतबो मेकअप किए ने कऽ लिअए मुदा हृदयक बात सोलहन्नी तँ नहियेँ बुझि सकैए...।

घुसकीपट्टीवालीक खुशीक कोनो अरथे ने बेलबाकेँ लगइ, दिन बीत गेलै मुदा भाँज नै लगलै। भाँज लगलै रातिमे खाइ-काल जखन मनोनुकूल खेसारी दालिक पाँचटा कचौड़ी थारीमे देखलक। सेहो भाँज सुपते कहाँ लगलै, पुछला पछाइत लगलै। भाँज लगिते बेलबाक मनो हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइत मुहसँ फुटलै-

“हँ-हँ चेनसँ सुतब किने। अनेरे नान्हिटा गपमे भरि दिन मड़ियाइत रहलौं।”

बेलबाकेँ अपन खेत-पथार नहि, ने हरे-बरद आ ने दोसर समांगे जे एक समांगक कमाइसँ गुजर चलैत आ दोसर बँटाइ खेत करैत, सेहो ने रहइ। मुदा भगवान जँ खाइले आ बजैले मुँह चीरलखिन तँ कमाइक चालि चलैले हाथो-पएर देलखिन। किछु हौउ, ई पैरुख तँ बेलबामे छइहे जे अपन बाँहुबलसँ गामक मुसहैनपर अधिकार बनेने अछि। ऐ भीर दोसराकेँ तँ नहियेँ आबए देने अछि। आबियो केना सकै छै, हल्लुक माटि ने बिलाइ तकैए, भारी-भीरमे किए जाएत। समुद्र मथन केलाक पछाइत यएह ने बँटवारा भेल जे माटिक ऊपरका अनका दिस बँटा गेल आ नुका कऽ तरमे रखलाहा बेलबाक हिस्सा भेल।

दोसर साँझ। दिन भरिक टालाक काज उसाइर, पोखैर-झाँखैर दिससँ

आबि चीलमक चौखरीमे बेलबा बैसल। घुसकीपट्टीवाली तइसँ पहिने चौखरीकेँ बहारि, चटकुनी बीछा, एकटा गोइठाँ सुनगा कऽ रखि देने छेली। बेलबाकेँ बैसते तेतरा, झिंगुरा, लेलहा सेहो पहुँचल। चारू गोरेक बीच अजीव प्रेम। जेना प्रेमास्पद होइत तहिना एक दोसर-ले जान अरपनिहार। ओना चारूक जिनगीमे दूरियो आ लगिचो परिवार बनौनहि छइ। अपन-अपन किछु चालियो-परकीत तँ छइहे। तेतराक पहिलुक घरवालीकेँ जहिया बम्बैया छौड़ा उड़हाड़ि कऽ लऽ गेलै तहिए-सँ जेना दुनियासँ विरक्ति भऽ गेलइ। मनमे सदिकाल होइ जे बिनु इज्जतक जिनगी ओहने होइए जेहेन बिनु गमकक फूल। ओना निर्णए करैमे तेतरा औगताएल जरूर। ओ ई नइ बुझि पेलक जे पतियो-पत्नीक बीच बेकतीगत चालि होइ छइ। जे इज्जतक खाम्हीक काज करै छइ। बुझबो केना करैत। अर्द्धांगिनी बुझि सभ किछु अदहा-अदही बुझैत। ओना, जइ दिन स्त्री घरसँ पड़ेलै तइ दिन तेतराकेँ ओते दुख नै भेलै, मुदा मनमे सोग तँ आइयो समाएले छइ। खाएर.., तैयो जिनगीमे हारि नहियेँ मानलक। हारियो केना मानैत एकटा गेलै, दोसर आनि तीनटा बेटा-बेटीक संग परिवार तँ बनौनहि अछि।

चारू गोरे एकठाम होइते जेना ऑफिसमे टेबुल-टेबुलक काज अलग-अलग अंगक होइत तहिना चारू गोरे अपन-अपन काजमे जुटि गेल। झिंगुरा गाँजा, चीलम निकालि आगूमे रखलक। आमदनी परहक टीपगर जहिना गाँजा तहिना समस्तीपुरक बड़की तमाकुल। ओना बेसीकाल चारू गोरे भाँगे पीबैत अछि। बाड़ी-झाड़ीमे फूलक समय भांगक फूलो झाड़ि लइए आ वसन्ती गाछ बीछि-बीछि सुखा-सुखा कऽ रखियो लइए, मुदा परसुका मुसहैन चारूक सुरखीए बदैल देलक, तँए जेहने टीपगर तमाकुल तेहने गाँजा। ओना चारू गोरेक परिवार एकरंगाहे छै, कनियेँ तल-बितल छइ। झिंगुराक दोसर आमदनी छइ जे दोसर-तेसरकेँ नै छइ। ओ छिऐ गछचढ़नी घरवाली जे गाछपर चढ़ि जारैन तोड़ै छै। ओना, लग्गियो रखने अछि मुदा केहनो-केहनो घोरनाह गाछपर चढ़ि कऽ फुदनी जारैन तोड़ि लइए। तइले कोनो रोको-राक नहियेँ छइ। सूखल जारैनक रोको किए हएत। गछचढ़नीए दुआरे सरही आमक गाछीक ओगरवाहि सेहो लोक दइते छइ...।

आगूमे गाँजा अबिते लेलहा लटबए लगल। बेलबा कटकीसँ चीलम साफ करए लगल। तेतरा गोइठाकेँ तोड़ि घुर जकाँ लगा गूल बनबए लगल। चीलम साफ कऽ बेलबा गिट्टी खोखरलक। गाँजा लटा, तमाकुल मिला चीलममे बोझि

लेलहा तेतरा दिस बढ़ौलक। गूल चढ़ा तेतरा बेलबा दिस बढ़ौलक।

चारू गोरेमे बेलबा सभसँ जेठ। बेलबामे सभसँ प्रमुख गुण छै जे केकरो बनहौटा जन नइ छी। ने नीक-बेजामे आ ने पाबैन-तिहारमे केकरोसँ एको सेर आकि एको पाइ कर्ज लइए। कियो 'भैया' तँ कियो 'गुरूकाका' सेहो कहै छइ।

आगूमे चीलम रखि बेलबा भोग लगबैत फुस-फुसा कऽ मंत्र पढ़ए लगल, 'जेकर जे हक-हिस्सा छह से अपन-अपन लऽ जा।' तीन बेर पढ़ि दम मारि, तेतरा दिस बढ़ौलक। मुदा धुँआ मुहँमे रखि शरबत जकाँ घोरए लगल।

दम मारि तेतरा जखन झिंगुरा दिस चीलम बढ़ौलक तखन बेलबा मुँहक धुँआ निकालि बाजल- "परसुका सगुन बढ़ियाँ रहल!"

बेलबाक सगुन सुनि लेलहा खिसिया कऽ बाजल- "सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।"

लेलहाक तामस बेलबा बुझि गेल जे भुखाएल बिलाइ खौंझाइते छइ। जखन ओहो दम मारत तखन ने मन असथिर हेतइ। ताबे लेलहा-हाथ चीलम पहुँच गेल। जिराएल लेलहा रहबे करए, तेते जोरसँ दम मारलक जे एक बित धधड़ा चीलमसँ धधैक गेलइ। दम मारि जहिना हाथसँ चीलमक धधड़ा मिझेलक तहिना अपनो मनक धधड़ा मिझा गेलइ।

..मुदा तेतरा लेलहाक बातकेँ पकैड़ लेलक। दोहरौनी भाँज जाबे चीलमक शुरू होइ तैबीचमे सवाल फँसि गेल। अपनेमे दू पाटी बनि गेल। दू गोरे कहै जे सगुन-तगुन किछु ने होइ छै आ दू गोरे कहै जे होइ छइ। तेहाला कियो नहि, जेकरा दुनू पंच मानि फरिछबैत। रूकल चीलमकेँ धुँआइत देखि लेलहा बाजल-

"झगड़ा ने दन चुन-तमाकुल किए बन्न हौ, गप्पो चलतै आ चीलमो चलए दहक।"

जहिना एकघोंट चाह पीला पछाइत आकि एक कौर खेला पछाइत दोसर अपने अबै लगैत तहिना लुबलुबाइत लेलहा बाजल-

"सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।"

दोहरा कऽ बेलबा दम मारि चीलम आगू बढ़बैत बाजल-

"सगुन बड़ पैघ गुण छिऐ, तँए एकरा दोखी बनाएब उचित नइ हएत?"

बेलबा आ तेतराक विचार एक बटिया रहै तँए एक दिस भऽ गेल आ

झिंगुरा, लेलहाक एक बटिया रहै तँए दोसर दिस भऽ गेल। दू-दू गोरेक पाटी चारू गोरेक बीच बनि गेल। बेलबाक विचारकेँ रोकैत झिंगुरा बाजल- "सगुनकेँ दोखी कहाँ कहै छिऐ, जँ गुण सगुन भऽ जाए तखन तँ जरुर नीक भेल, मुदा जँ कोनो काजे केतौ विदा होइ आ माछ-दहीसँ सगुन बनाबी एकरा हम नीक नै कहबै?"

बेलबाक प्रश्नकेँ ठमकैत देखि सोंगर लगबैत तेतरा बाजल-

"दुनियाँ बड़ीटा छै, रंग-बिरंगक खेल चलै छै तँए अनका छोड़ह, अपने बात लएह। परसू जे छ-छ पसेरी मुसहैन भेलह तेकरा की कहबहक?"

तेतराक बातकेँ लेलहा लपैक कऽ पकड़ैत बाजल-

"जँ माछे-दहीसँ सगुन बनिते तँ मछिबारे आ माले-जाल बलाकेँ सभ किछु भऽ गेल रहितै, दिन-राति ओकरे देखैत-सुनैत रहैए...।"

तैबीच पहिल चीलमक गाँजा जरि गेल। गुलाब तकथीपर लटाएल-काटल गाँजा रहबे करै, झिंगुरा चीलममे बोझि आगि चढ़ा बेलबा दिस बढ़ौलक। ओना, तइले अपना बीच कोनो मलिनता केकरोमे नै रहइ। करणो रहै जे एक्के-एक्के दम ने कियो लगबैए। बरबैरक हिस्सा ने भेल। बड़ बेसी हएत तँ कियो दमगर अछि तँ कनी बेसी जोरसँ दम खींच लेत, तइसँ बेसी की करत..!

मुदा तैसंग ईहो तँ रहबे करै जे पेटगरोकेँ बेसी खेनो पेटे भरै छै आ कम खेनहारकेँ सेहो पेट भरिते छइ। धुँआ फेकैत बेलबा बाजल-

"परसू जे अपना सभकेँ ओते मुसहैन भेल ओकरा नीक सगुन नै कहबै तँ की कहबै?"

जेना लेलहाकेँ प्रश्नक उत्तर बुझले रहै, तहिना बाजल- "तूँ सभ भलेँ जे कहक मुदा हमर मन नै मानैए। तीन सालक बाढ़िमे धान तँ उपैज गेल मुदा मुसहैन किए निपत्ता भऽ गेल। जे चीजे निपत्ता अछि ओ सगुन केना भऽ पौत?"

लेलहाक बातमे चोंगरा भरैत झिंगुरा बाजल- "दिल्ली गेल छहक, रेलबे टीशनमे जे मूस देखबहक तँ बिसवासे ने हेतह जे मूस छी आकि बिलाइ।

मुदा गाममे तँए देखिते छहक रौदी होइ छै तैयो मूसकेँ पड़ाइन लगि जाइ छै आ बाढ़िमे तँ सहजे, जँ नै भागत तँ डुबकुनियाँ काटि-काटि मरबे करत। ई तँ गुण भेल जे सुभितगर समय भेल तँए धानो उपजल आ मूसक बाढ़ि एने मुसहैनो भेल।"

तेसर चीलम चलैत-चलैत चारू गोरेक मन भरि गेल। कौल्हुका विचार करए लगल। तेतरा बाजल-

“काल्हि दू ठाम काज अछि। एकठाम तीनगोरेक आ दोसरठाम दू गोरेक।”

तेतराक बात सूनि झिंगुरा बाजल- “तीन गोरे तँ जोड़ियाएल छी मुदा पाँचम नै रहने दोसर केना हएत?”

बेलबा बाजल- “किए ने हएत? दुनू काजकेँ मिलानी करि कऽ देखहक। टुकड़ी बनै-जोकर जँ हेतै ओकरा टुकड़ी बना लेब आ जँ नै बनैबला हेतै ओकरा पूरा कऽ करब।”

बेलबाक बात सुनिते लेलहाक मन मानि गेलइ। बाजल- “बेस तँ भैया कहलहक। दुइए-टा ने भऽ सकै छै, या तँ पाँचम केनिहारकेँ भाँजह या तँ काजेकेँ टुकड़ी कऽ दहक।”

तेतराक मन सीकपर टाँगल, तँए खोलि कऽ तँ नहि बजैत मुदा मुड़ी डोला-डोला हुँहकारी भरैत रहए। सीकपर टाँगल ई रहै जे परसू जे मुसहैन खुनलक तइसँ नमहर दोसर रहइ। ओना, ईहो मनमे उठै जे ऊपरका काज ने हूसि सकै छै, तरका काजपर तँ एकाधिकार ऐछे, ओइमे दोसर कइये की सकैए। मुदा तँए की, काज करए जाएब तइसँ दोबर-तेबर बेसी ओइमे हएत, तेकरा पहिने करब आकि जइमे कम हएत, तेकरा करब...।

गाममे खेती छोड़ि दोसर काज नहि। जे छोट-छोट टुकड़ीमे विभाजित रहैए। छोट-छोट काज रहने कम केनिहारक जरूरत पड़ै छै, तँए बोनिहार-मजदूरक बीच संगठन नहि। मुदा शहर-बजारक बीच तँ से नहि अछि। पैघ-पैघ कारखाना रहने बेसी मजदूरक जरूरत पड़ै छइ। तहूमे खेती-बाड़ीक काज दिने भरिक होइ छै जखन कि कारखाना चौबीसो घन्टा बारहो मास चलैत रहैए। तैसंग ईहो होइ छै जे कारखाना घरमे बनल रहैए जइसँ हवा-बिहाड़िक संग झाँटो-पानिमे चलिते रहैए मुदा से खेतीमे तँ नहि होइए।

ओना शहरो-बजारमे कारखाना सभ रंगक भेने मजदूरक कमी-बेसी होइ छै। मुदा जेना-जेना बजार बढ़ैत जाइए तेना-तेना कारखानोक रूप बढ़ल जाइ छै, जइसँ खुदरा मजदूर थौकक रूपमे थकियाइत जाइए। जेकर विपरीत गतिए किसानी अछि। जेना-जेना समय आगू बढ़ैए तेना-तेना परिवारो बढ़ै छै आ परिवार

बढ़ने खेतो विभाजित होइत जाइ छइ। खेत विभाजित भेने काजक रूप सेहो छोट होइत जाइ छइ। दोसर ईहो होइ छै जे जेकरा बेसी खेत रहल ओ मशीनक सहेतासँ काज लइए जइसँ मजदूरक संख्यामे कमी अबै छइ। तँए जहिना शहर-बजारक श्रमिक संगठित होइत जाइए तहिना गामक मजदूर अंसगठित होइत जाइए। तैसंग दोसर ईहो छै जे गाम-घरक अधिकतर बोनिहार बन्हुआ बनल अछि, जखन कि शहर-बजारमे से नै छइ। ओना शहरो-बजारक रूप बदैल रहल अछि, लोकक (श्रमिकक) काज लोहाक मशीन हथियौने जा रहल छै जइसँ हजारक-हजार हाथ निकम्मा भेल जा रहल छइ। जहिना सभ गामक काज तहिना अँहू गामक काज रहने, ने काजमे एकरूपता आ ने श्रमिकक बीच एकरूपता रहल। रहबो केना करत, कियो पजेबाक घर बनबैए तँए ओकरा सीमेंट, बाउल, लोहा आ राज मिस्त्रीक जरूरत पड़ै छै। आ कियो फूसिक घर बनाबैए तँए ओकरा लकड़ी, बाँस आ खढ़क जरूरत संगे घरहटियाक जरूरत पड़ै छइ। जइसँ जहिना काजक एकरूपता नै रहै छै तहिना हाथ आ हाथक ओजारोक एकरूपता नै रहै छइ। मुदा छोटो-छोटो काज रहने किछु-ने-किछु एकरूपता तँ रहिते छइ। तीन गोरेक काज खढ़ अँटियेनाइ रहै आ दू गोरेक मटिकटियाक। दुनू काजकेँ टुकड़ी बनौल जा सकै छइ। खढ़ अँटियेला पछाइत चारि दिन खढ़ सोझ होइले जँकियाएल जाइ छै, तहिना खाधि भरैक सेहो अछि। मुदा एकरंग बोइन रहितो हल्लुक-भारी तँ अछिए। एकटा जहिना बैसारी-काज अछि तहिना दोसर ठढ़का काज अछि। तहूमे माटिक फेकब भारी भेल, जखन कि खढ़ अँटियाएब मात्र खढ़केँ सेरिया कऽ छोट-छोट आँटी बनाएब अछि। कौल्हुका काज सुनि बेलबा बाजल- "दुनूठाम एक्के काज अछि आकि दू रंगक?

तेतराकेँ दुनू काज बुझले रहै, बाजल- "काज तँ दू रंगक ऐछे एकठाम खाधि भरैक छै आ दोसरठाम खढ़ अँटियबैक अछि।"

बीच-बचाउ करैत झिंगुरा बाजल-

"अपना सबहक बीच बेलबा भैया बुढ़े भेल, आ हमरा देखनहि रहह जे सातमे दिन बोखारक पथ पड़ल, अखनो तक नीक जकाँ देहमे तागत नहियेँ आएल हेन, परसुए मुसहैन खुनैकाल देखलहक ने जे केते बेर बैसलौं। तँए हम दुनू गोरे खढ़ अँटियाबए जाएब आ तूँ दुनू गोरे खाधि भरए चलि जैहह। जुआन-जवान छहे।"

उठैत-उठैत लेलहा बाजल- “भैया, एहेन प्रेम रहतह तँए सभ दिन आनन्दे-आनन्द रहतह। नै तँए देखिते छहक.!”

‘देखिते’ कहैत लेलहा चुप भऽ गेल। बात खुजबे ने कएल। मुदा चीलमक भरल मन छोड़ियो तँ नहियेँ सकैए। झिंगुरा पुछलक-

“की कहलहक?”

लेलहा- “यएह ने कहिलयह जे दुनियाँमे केना उनटा-पुनटा होइ छै, जे महिला शरीरसँ पुरुखक अपेछा निरबल होइए ओकरा कारखानाक इंजन आ पुलिसक लाठी हाथमे थम्हा दइ छै आ जे पुरुख सबल होइए ओकरा हाथमे कागत-कलम थम्हा दइ छइ। एहने रीतकेँ ने वसन्त रीत कहै छइ!”

तेतराक आँखिपर निशाँ लटैक गेल, बातक चिड़ौड़ी देखि बाजल- “अनेरे समुद्र उपछैक कोन चिड़ौड़ीमे लागल छह, ठनका जेकरा माथपर खसै छै से बुझै छै ठनकाक गुण। चलह, अनेरे मनमे खुट-खुटी रखने छह। कौल्हुका काज काल्हि देखल जेतइ। चेनसँ खाएब, भगवानक नाओं लऽ निचेनसँ सुतनाइ छोड़ि अनेरे कौल्हुका चिन्तामे किए माथ धूनब?”

बेलबा- “दुनू काज सेरिया लएह, तखन ओहू मुसहैनकेँ खुनिए लेब।”

बेलबाक बात सुनि तेतरा बाजल- “भैया, भने खेतमे पड़ल छइ। परसुके धान तँ घरे-अँगने छिड़ियाएल अछि ओकरा सदहऽ दहक तखन खुनब।”

तीनू गोरेकेँ जाइते घुसकीपट्टीवाली बेलबा लग आबि बजली- “संगतिया सबहक भाँजमे पड़ि अहूँ दुइर भेल जाइ छी! कहू जे केते खान पहिने ठकुरवारीमे घड़ी-घन्टा बजलै, असतुत भेलै आ अहाँले थैनसन!”

पत्नीक खौंझसँ बेलबा मिसियो भरि डोलल-डालल नहि। किएक तँ पत्नीक खौंझक कारण बिनु बुझने डोलि-डालि जाएब नीक नहि।

बाजल- “ठकुरवारी ठाकुर सबहक छिऐ आकि हमर छी जे ओकर देखौंस करब। हमर तँ यएह संगतिया सभ ने छी जेकरा संगे जीबै-मरै छी।”

निरुत्तर भेल घुसकीपट्टीवाली पाछू नै हटली, पाशा बदैल लेली। जहिना शिवजी पाशा बदैल शिवानी भऽ गेला, तहिना। पाशा बदलैत बजली- “अन्न तीमनक सुआद टटकेमे होइ छै आकि सेरा कऽ पानि भऽ जाइए तखन होइ छइ!”

बेलबोक मन हल्लुक रहबे करै, तँए अवसरकेँ हाथसँ गमाएब नीक नइ बुझलक। किएक तँ अवसर गमौनाइ ओहने होइ छै जेहने डारिक चुकल बानरक होइ छइ। बाजल- “लोक सुआद-ले खाइ छै आकि पेट भरैले खाइ छइ। सरेने जँ ओकर गुणो निकैल जाए तखन ने।”

पतिक बात सुनि घुसकीपट्टीवालीक मनमे उठलैन- एना जँ बात छिड़ियाएत तखन तँ काजक गप बिसरिये जाएब। एक तँ ओहिना ओहन बिसराह छी जे आन तँ कनी मनो रहैए जे काजे बिसैर जाइ छी! काजे नहि तँ राज की? ..हृदए खुशीसँ भरल तँए घुसकीपट्टीवाली सोचलैन जे जे बात पति बजता तेकरा जँ मुँह-नाँगैर जोड़ब तखन ने, जँ से नै जोड़ि सोझहे अपने मनमे दोसर काज आबि गेल तखनो तँ गड़बड़ाइए जाएत। घरो घर जकाँ रहए तखन ने, से तँ सतरहटा भुरकी हरिदम रहिते अछि।

..हाथमे पानिक लोटा बढ़बैत घुसकीपट्टीवाली बजली-

“लिअ, अखने कलपर सँ अनलौं कुर्रा कऽ लिअ।”

आन दिनसँ बदलल बात सुनि बेलबाक मन खुट-खुटाएल। आन दिन कहाँ पानिक बात बजै छेली, आइ किए बजली? जरूर किछु रहस्य अछि! मुदा इशारोमे जँ रहस्यकेँ नै रखल जाएत, तखन तँ ओ तेना तरेमे दबा जाएत जेना कोनो सीखे-लीखे ने रहत...। बेलबाक आँखि तँ पत्निक आँखिपर रहै मुदा नजैर नजैर दिस बढ़ौलक। कुर्रा कऽ ओसारपर पतिकेँ बैसते घुसकीपट्टीवाली घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकैन। घरदेखिया थारी जकाँ साँठल थारी देखि बेलबाक मनमे उठलै जे बिनु कारणे टिटही थोड़े लगै छै, जरूर किछु बात अछि! लगले मन हुमरलै हम कि कोनो घटिया घरदेखिया थोड़े छी जे खेनाइयए-पीनाइमे केकरो गरदैन काटि लेबइ। भातक ऊपरमे पाँचो कचौड़ी तेना पसारल जे आगूमे सानैयोक जगह नहि। भात सानब छोड़ि बेलबा पहिल कचौड़ी उठा हिया-हिया देखए लगल। ई तँ पुड़ी जकाँ लगैए मुदा छी तँ कचौड़ीए! कचड़ी नै छी आ ने पकौड़ी छी, छी तँ सोलहन्नी कचौड़ीए। किएक तँ ओहिना खेसारीक सौंसका दालि, मिरचाइक टुकड़ी आ पिऔजक टुकड़ी टक-टक तकैए। नून-तेल ने तरे-ऊपरे सटि गेल छै, बाँकी तँ तकिते अछि।

कचौड़ीकेँ निहारि-निहारि देखैत पतिकेँ देखि घुसकीपट्टीवालीक छाती चहकए लगलैन। बजली- “ई तँ ओही भगवानकेँ धैनवाद दिऐन जे बेटाक पुसौठ

हएत, नइ तँ जहिना तीन साल नै केलौं, हाथ-पएर फाटए लगलै तहिना अहूबेर फटितै।”

तीन साल पूर्वक पुसौठ बेलबा बिसैर गेल छल। बिसैरो केना ने जाएत। एक तँ ओहिना गजेरी-भगेंरी गाँजा-भांगक प्रेममे दुनियाँ बिसरैले तैयार रहैए, तैपर बेलबा संगैतियो छीहे। संगैतियाक जिनगी तँ ओहन जिनगी होइ छै जइमे दस दिसक धार-नाशीक संग गंगा-जमुना सन धारक पानि मिलि समुद्र सिरजन करैए...। बेलबा बाजल- “पुसौठ केकरा कहै छइ?”

लहकी देखि घुसकीपट्टीवाली अवसरकँ हाथसँ नै छोड़ि, बजली-

“एहने मुनसा ने धिया-पुताक पाबैन बिसैर धियो-पुताकँ बिसैर जाइए!”

तैबीच बेलबा पहिल कौर तँ छुच्छे दालि-भातक खेलक मुदा दोसर कौरमे जे मिरचाइक टुकड़ी मुँहमे पड़लै, तँए सुसुआइते बाजल- “पाबैनमे की सभ होइ छइ?”

धनलक्ष्मी जकाँ घुसकीपट्टीवाली बजली- “किच्छो ने होइ छइ। जे होइ छै तइसँ तँ घर भरल अछि, किच्छो कथी ताकए पड़त।”

पत्नीक धारक प्रवाहमे बेलबा बाजल- “शुभ काजमे अनेरे देरी करब कोन कबिलती हएत, तइले पुछैक कोन जरूरी अछि। अच्छा ई कहूँ जे पाबैनमे की सब हएत?”

जहिना छोट बच्चाकँ माए-बाप सिखबै छैथ तहिना बिकछा-बिकछा घुसकीपट्टीवाली बाजए लगली- “पाबैनमे किछु ने होइ छै आ सभ किछु होइ छइ।”

उड़ैत चिड़ैक बोल जकाँ बेलबा किछु थाहि नै पबै छल। तँए जहिना धार थाहैक नाहक लग्गा होइ छै तहिना थाहैत पुछलक- “खेबा-पीबामे की सभ होइ छइ?”

“अगबे चाउरक चिक्कसक बगीया बनै छै, ओही लऽ कऽ बाल-बच्चाक हाथ-पएरक पुसौठ होइ छइ।”

“घीओ तेलक काज पड़ै छइ?”

“घी-तेल किए कहै छिऐ, नूनो-मिरचाइक काज नै पड़ै छइ।

“चिक्कसक मुँह-नाँगैर बना, छतिया-पीठिया बनौल जाइ छै, टटका

पानिमे नहा कऽ चुल्हिपर सिद्ध कएल जाइ छइ। सिद्ध होइते भऽ गेल बगिया।”

“एक्के रंगक होइ छै आकि दोसरो-तेसरो रंगक?”

“एकटा सुच्चा भेल, दोसर कुरथियो दालि दऽ कऽ आ तेसर गुरो दऽ कऽ बनौल जाइ छइ।”

“तब तँ नामो सबहक हेतइ।”

“होइते छै , जहिना आमक गाछ भेल आ दालि-दलिहन भेल ई जड़ि भेल। जड़िक पछाइत अमुख आम आकि अमुख दालि बनैए। तहिना बगिया जड़ि भेल। दलिबगिया, गुड़-बगिया किसिम भेल।”

“एक दिन तँ एक्के रंगक ने खाएब, दोसर-तेसर?”

“एना अनाड़ी जकाँ किए बजै छी। पहिल दिन टटका खाएब, दोसर दिन बसिया खाएब, तेसर दिन दलिबगिया खाएब, चारिम दिन गुड़-बगिया खाएब।”

“गुड़ दालिए जकाँ केना रहत?”

“खेबै तखन देखबै, जे केहेन रसगर छइ। एते पघिलल रहत जे छातीमे चुहुटि कऽ पकैड़ लेत।”

“जखन चारि दिनक ओरियान एक्के दिन केने भऽ जाएत तखन अहाँकेँ चारि दिनक छुट्टी दऽ दइ छी। तैबीच कुशेसर आकि सिंहेसर आकि जनकपुरसँ घुमि आउ।” ❑

दनगर घास

✺

कुसमय जहिना कोनो गाछीमे दिन-बिसरू गोटे मोजर निकैल टुकलाइत-जुआइत-कोसाइत आम पकि कऽ पूर्ण जिनगी पेब धरतीपर खसल केकरो भेटैत, जइसँ जहिना ओकर मन खुशियाइत तहिना सोनाय काकाकेँ सेहो भेलैन। अपन जिनगीक पचपनम बर्खमे एकटा नव विचार मनमे उठलैन। ओना, नव विचार नइ छेलैन, परम्परामे चलिए अबैत अछि, मुदा अपन जिनगीक अनुभवमे नव अनुभव भेने सोनाय काका नव बुझलैन तँए मन खुशियेलैन...।

एहेन नव विचार मनमे उठैक आ नव खुशी अबैक कारण की? कारण भेलैन दुरकाल समयमे जीबैक, माने एहेन समयमे केना जीब..?

जीबैले पहिल खाहिंस लोककेँ पेटक होइ छै माने भोजनक। केहेन हुअए भोजन ईहो मूल प्रश्न भेल। अन-पानि, तीमन-तरकारी, दूध-दही-घीक संग फलो-फलहरी तँ दूषित भइये गेल अछि तखन शुद्धता केना औत? जखन शुद्धते नइ औत तखन सही दिशामे स्वच्छ जिनगी चलत केना? दोरस हवा बहने जहिना मौनसून अबिसवासू बनैक उपक्रममे अबऽ लगैत तहिना सोनाय काका जिनगीकेँ अबिसवासू बाट पकड़ने देखलैन तँए सोचै-विचारैले मन मजबूर भेलैन। मजबूर होइते मनमे अनेको विचार एक संग उठि गेलैन, मुदा मन तँ मन छी, केकरो एकेटाक संग देत। चाहे साधु होउ आकि असाधु। अपन सभ सबालकेँ सेरिया कऽ चौपेत रोटीक पपड़ा जकाँ चाहे परती खेतकेँ जहिना कोदारिसँ उनटा-उनटा छबे-छह उनटौल जाइए तहिना एक-एकटाकेँ सोनाय काका ओदारऽ लगला। पहिने अपन जिनगीक पपड़ा ओदरलैन। छह गोरेक परिवार अछि। माने दुनू परानी अपने, बेटा-पुतोहु आ दूटा पोता-पोती। गनल-गूथल तीन कट्ठा घराड़ी आ पाँच कट्ठा जोतसीम खेत अछि जे कोनो बेजाए नहि, मध्यम

किस्मक अछि। मध्यम किस्मक खेतक माने भेल तीन फसिला उपजैबला।

अपन समटल ओकाइत, जइसँ समटल काजो आ जिनगियो सोनाय कक्काक छैन। छबो मुँह तँ खेबे-पीबे करत। मुदा तइ बिच्चेमे बड़का मोइन फुटैत रस्ता अवरूद्ध जकाँ भेल जा रहल छैन। अवरूद्ध ई जे अन्नक खेतीमे नव-नव चीजक सही उपयोग नइ भेने अन्न दूषित भऽ रहल अछि, जैठाम किसान परिवारमे दस बर्ख पुरान अन्नक रक्षाक बोध अछि ओ घटि रहल अछि...।

जैठाम दस बरखा-बीस बरखा घीओ आ मौधो सुरक्षित रखैक लूरि अछि तेकरो लोक बिसैर रहल अछि। बागुसँ अनाएल समय धरि अन्नक भण्डारन धरि जहर युक्त वस्तुक प्रयोग भऽ रहल अछि। ओना, सुरक्षाक दृष्टिये नीको अछि, मुदा उपयोगक बेढंगपनासँ गड़बड़ तँ भइये रहल अछि। तहिना पानियोंक दिशा-दशा बनियेँ रहल अछि। तीमन-तरकारीसँ खेबाक अधिकांश वस्तु एहने भेल जा रहल अछि। एहेन स्थितिमे केना जीब?

एकाएक पोखैरक असथिर पानि-हवा लगिते जेना डोलए लगैए तहिना सोनाय कक्काक मन डोलए लगलैन। जइसँ अखन धरिक जे जिनगी जीबैक सक्कत विचारक विवेक छेलैन ओ सिहरऽ लगलैन.! सिहरऽ लगलैन ई जे जिनगी नइ बाँचत, विवेकहीन भऽ जाएत। जहिना देहमे रोगक प्रवेश भेने मृत्युक शक्ति बढ़ऽ लगैत आ जिनगीक शक्ति क्षीणसँ क्षीणकाय हुअ लगैत तहिना हुअ लगलैन। खसैत मन ढलकैत पहाड़क चोटीसँ झहरैत विचार झहरऽ लगलैन...।

..जखन भँसैत धारमे छोट-छीन तनको-तिनको जान बँचा सकैए, पहाड़क तरहत्थीमे झाड़ो-झूड़क फूल-फड़ बँचा सकैए, तखन हम तँ पचपन बर्खक ओहन बुधिगर विवेकी छी जे डेगे-डेग पगे-पग अपन जाँघ असथिर रखैत मृत्युक मुहसँ किए ने बँचि सकै छी। ओना, हवाकेँ रोकलो जा सकैए, बँचलो जा सकैए। मुदा तइले विज्ञान पढ़ब जरूरी होएत, से तँ सोनाय काकाकेँ छैन्हे। कम पढ़ल-लिखल रहनौं काका एते बात तँ बुझिते छैथ जे जहिना अपन कुल-मूलक इतिहास अपने बुझने हएत तहिना अपन जिनगी अपने जिनगीक विज्ञान पढ़ने हएत। की खाएब, की पीब तइले खेबा-पीबाक उपाय जानि करए पड़त, से तँ सोनाय काका केनहिये छैथ, तँए मनमे जीबैक सवुरो छैन्हे। ईहो आशा छैन्हे जे जँ अपन अनुकूल नइ हएत, तइले बोन-झाड़मे बैरक फड़ तँ अनेरूआ रहिते छै, तहू खा किछु दिन गूदस कइये सकै छी, तखन अनेरे जे मनकेँ मारि ओछाइन

धड़बै छी ई अल्लढ़पना भेल। अपनो जिनगीक आगू बाट विचारि धरऽ पड़त। मन थीर भेलैन। समैयक किरदानी देखि जे तामस मनमे छेलैन तेकरा पानि पीब थीर केलैन।

ऐगला जिनगीक माने भेल काल्हि-ले करब, तखने ने काल्हि दिन जीब पएब। असथिर मन होइते तमाकुल खाइक मन भेलैन। चुनौटीसँ तमाकुल-चुन निकालि सानि चुनबऽ लगला। मुदा तइ बिच्चेमे अपन जिनगीक चुनियाएल विचार उपकऽ लगलैन।

..ओना, चुनौटीसँ तमाकुल-चुन निकालि दुनूकेँ औंठाक घुस्सासँ नीक जकाँ चुना कऽ मिला नेने रहैथ, तँए दुनूक गरदा झाड़ैक मन भेलैन। दुनू तरहत्थीक बीच तेना समधानि-समधानि एक-दोसरक बीच पटकलैन जे सभ गरदा हवामे उड़ि गेल। मुदा वएह उड़ि कऽ नाक लग पहुँच सुरसुरी भरलकैन तँए छीक भेलैन। पेटक सभटा बिकार-हवा नाक-मुँह दुनूसँ निकललैन। मनो हल्लुक भेलैन। भाय, हल्लुके मन ने हल्लुक खेनाइ-पीनाइक संग हल्लुक रहनाइयो नीक बुझैए, से तँ सोनाय काकाकेँ रहबे करैन। तँए बुधियो-विवेक ओते विचलित नहियेँ भेलैन।

सोनाय काकाकेँ मनमे उठलैन अपन काज, अपन परिवार आ अपन जिनगी। जिनगियो केतेटा, तँ छह गोरेक परिवारमे चारि गोरे काज करैबला दूटा टेल्हुक। टेल्हुक कि जे चारू गोरे जँ एक-एक कौरक घटबी कऽ लेत तहीसँ दिन-राति दुनू टनमन रहत। काजमे सुधार करऽ पड़त। तीन कट्ठा घराड़ीमे घर-आँगनसँ मालक थैर, घास-पात आ अगवास सहितमे दू कट्ठा अजवाइर अछि, एक कट्ठा चौमास अछि। चौमासक माने भेल सालो भरि तीमन-तरकारी उपजैबला खेत, तखन किए हाट-बजार दिस मुँह ताकब आ जहराएल-बिखाएल तीमन-तरकारी खाएब। अपन खेत अपन पेटक बीच समरस बनबैक जरूरत अछि। अपना खुट्टापर एकटा गाए रखने छी, जे छह मसुआ आमदनी अछि, आमदनियेँटा किए जे अपन भोजनो छी, मुदा ई केना बरहमसिया हएत? जँ से नइ हएत तँ आमदनी जे हुअए मुदा अपने केना जीब?

किछु क्षणक पछाइत सोनाय कक्काक नजैर थैरपर गेलैन, जाइते गाइक संग अठारह मासक गौड़ सेहो देखलैन। तीन मास पाल खेला तँ ओकरो भऽ गेल। खुट्टापर दूटा गाए रहत, छह गोरेक परिवारमे दूधेक धारमे बारहो मास बहैत रहब,

कखनो घासक बोझ नेने घाट टपब तँ कखनो कुट्टीकट्टा-संगे झूलब.! खुशी भेलैन।

गाइक सेवा-ले सुखल चाराक संग हरिअर घासो, खनिजो पदार्थ आ अन्नो खुअबऽ पड़ै छइ। समुचित आहार गाएकेँ भेटत तखने ने ओ दूधक धार बहौत। तखैन? जोतसीम जमीन पाँचे कट्ठा अछि। तखन गाइक भोजन केना पुरत? अपन तँ भेल गाइक देल धन, मुदा ओकरो धनक तँ विचार अपने करऽ पड़त किने.! सोनाय कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते पत्नियोँ आ बेटोकेँ शोर पाड़लखिन।

भिनसुरका समय, घरे-अँगनामे छिड़ियाएल दुनू गोरे, लगले आबि गेलैन। मुदा तैबीच जे आँगन बहारैत पुतोहु छेलैन, ओ अपन पुकार नइ सुनि बिच्चे आँगनमे बाढ़नि रखि कनसोह लइले दलानक देवाल लग कान सटा अखिहासऽ लगली। रघू तँ चुपेचाप आएल, बैसल। मुदा गोरहा पाथैत बुधनी गोबराएले हाथे आएल तँए पहुँचते बजली-

“कथीक हकवाहि छल, गोरहा पाथै छेलौं गोबराएले हाथ अछि। कहू।”

एक तँ भिनसुरका समय तैपर पारिवारिक विचार करब, तँए सोनाय कक्काक मन सरोवरक पानि जकाँ शान्त भऽ असथिर भेल रहैन, मुदा पत्नीक झटहा तँ लागिये गेल रहैन। बजला-

“गोबराएले हाथ अछि तँ की हेतै, कोनो कि खाइ-पीबैक अछि जे गोबराएल हाथ देखबै छी।”

पतिक झटहाकेँ झटवाहि करैत बुधनी काकी बजली-

“इहए गोबरधन पहाड़ किसुनजी ओढ़ि व्रजवासीकेँ जान बँचौने रहथिन किने.!”

पत्नीक बात जेना सोनाय काकाकेँ मनहर बनबए लगलैन तहिना मुस्कुराइत बजला-

“अपन गोबरधन पूजा बिसैर गेलौं जे दीयावातीक पराते गोबरक घर-आँगन बना, कोठी, ढक, बखारी बनबै छी आ ओइमे दूबि-धान सजा कऽ गोधन पूजा करै छी।”

बगलमे बैसल रघूक मन अकछाए लगलै। ओना, रघू तीस बर्खक जवान, पिता तुल्य रहितो माता-पिताक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पबैत। अकछाइत

मुँहक सुरखी देखि बुधनियोँ काकी आ सोनाइयो काका अपन पाशा बदललैन। पाश बदलैत बुधनी काकी बजली-

"किए शोर पाड़लौं से पेटेमे राखब आकि उगलबो करब?"

पत्नीक विचार सुनि सोनाय काका गम्भीर भऽ गेला। गम्भीरता अबिते विचारलैन जे समैयक चर्च माने प्रदूषित होइत जिनगीक चर्च करब अखन उचिन नहि, एक तँ काजक समय छी, दोखर आड़िए-कोण बान्हैमे रहि जाएब, तइसँ नीक जे किए ने काजेक विचार करी। रघू दिस आँखि घुमा बजला-

"बौआ, परिवार तोरे छिअ, तोरे जिनगी देखि हमरो खुशीसँ दिन बीतत, तँए तोरा नीक जकाँ बुझि लिअ पड़तह जे कौल्हुका दिन हमर केना चलत, केहेन चलत।"

सोनाय काका जे सोचि बाजल होथि मुदा बुधनी काकी बेटाक कान्हपर भार अबैत बुझलैन। बुझिते मनमे उठलैन जे माए-बाप अछैत बेटा भार तर पड़ि जाए, ई केहेन माए-बाप भेल.! मनमे उठिते विचार झन-झना गेलैन। बजली-

"अखैन रघुआ कोन-जोकर अछि जे अपने देह छीपै छिऐ.!"

सोनाइयो काका बुधनी काकीक बातमे ओझरा गेला। ओझरा ई गेला जे अपन हाथ-जुति नइ छोड़ऽ चाहै छैथ, आकि अखनो दूधपीबे बच्चा रघूकेँ बुझै छथिन। मुदा अपन विचारकेँ बेटा दिस मोड़ैत बजला-

"बौआ, जेना-जेना परिवार बढ़तह तेना-तेना खरचो बढ़तह। माने ई जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ रहनाइ, पढ़नाइ-लिखनाइ, बिआह-दान सहित अनेको काज परिवारमे बढ़तह। तँए कमसँ कम अपनाकेँ एक सीमाक अन्तर्गत रखि परिस्थितिकेँ देखऽ पड़तह। चारि गोरे अखन घरमे कमासुत छी, आगू दिवरखौक नइ होइ तँए अखने नीक जकाँ विचारि काजक जड़ि मजगूत करैमे लगि जा।"

अन्ध-भक्त जकाँ रघू बाजल-

"बाबू, जाबे अहाँ दुनू गोरे जीबै छी...।"

रघूक बात सुनि सोनाय काका ओझरा गेला। ओझरा ई गेला जे एकरा की बुझल जाए, कान्ह पटकब आकि उठाएब? मुदा बुधनी काकी अपन एकक्षत्र वर्चस्व देखि अठनियाँ हँसी हँसैत बजली-

"आब कि बेटा गरदेन उतारि कऽ पैरपर रखि देत तखन बुझबै। जहिना

सभ दिन बेटा बुझैत एलिऐ तहिना ओहो माए-बाप बुझैत रहए, सहए ने भेल...।"

झाँपन-तोपन करैत मेघ जकाँ सोनाय कक्काक मन हुअ लगलैन। कखनो होइन जे ई की भेल? बुढ़िया फूसि छोड़ि एकरा की कहबै। मुदा फेर होइन जे परिवारक गाड़ी तँ एक-सूत्रेसँ ने चलत। तँए सभकेँ अनुकूल दिशाक जरूरत पड़िये जाइ छइ। पत्नीक महतकेँ ऊपर रखैत बजला-

"बौआ, माए जे कहलखुन से नीके-ले कहलखुन। मुदा घर-परिवार ओहिना नइ चलै छइ। घर-परिवारकेँ चलैक अपन रस्ता छइ। रस्ताक दूटा मुँह अछि, एकटा अछि 'बुझब' दोसर अछि 'करब'। तँए...।"

पिताक विचार रघूकेँ नीक लगलै। मुदा बुधनी काकी महाभारतक वर्वरी जकाँ गरदेन कटा पहाड़पर जा बैसली। शान्त वातावरण देखि सोनाय काका रघूकेँ लगमे बैसबैत अपन पारिवारिक स्थिति बुझबैत कहलखिन- "बौआ, आब तोहू घीगर-पूतगर भेलह, तँए अपना गुजर-जोकर लूरियो-बुधि आ बातो-विचार नइ रहतह, तँ जिनगी बेठेकान बनि जेतह। तँए जहिना अखैन तक जहिना परिवारकेँ विचारक वा विचारवान परिवार बना जीबैत एलौं, तहिना आगूओ जीबैत रही, यएह भेल जिनगीक धार। एकरा बुझऽ पड़तह।"

पिताक बात सुनि रघू ठमैक गेल। ओना, सभ बात रघू नइ बुझि पेलक, मुदा सोलहन्नी नइ बुझलक, सेहो तँ नहियेँ भेल। होइतो अहिना छै, कोनो गम्भीर विषयक कियो नाँगैर पकैड़ नचैए तँ कियो मुँह पकैड़। एहेन स्थितिमे के केकरा किछु कहत। सवहिं नचाबे राम गोसाँइ, नर नाचे मरकट की माँही। मुदा से भेल नहि, पहाड़ेपर सँ बुधनी काकी बजली- "गाममे केकरासँ हमर घर-परिवार अदूस रहल जे कियो आँखि देखौत।"

ओना, बुधनी काकीक बात सुनि सोनाय कक्काक मनमे कुवाथ भेलैन, मुदा सबहक तँ सीमा छइ। बेटा आगू विचारक बातपर पत्नीकेँ डाँटबो ओते नीक नहि, जेते विचारकेँ मोड़ि परिवारक अनुकूल बनाएब हएत। तँए मनक तामसकेँ अपन खून अपने मने-मन पीब रघू दिस मुँह घुमा बजला- "बौआ, माए की कहलखुन 'अदूस परिवार' से बुझलहक?"

रघू चुप्पे रहल। बेटाकेँ चुप देखि सोनाय काका जिज्ञासु बुझि बुझबैत कहलखिन- "अदूस परिवार ओ भेल जेकरामे कोनो दोख नइ छै, से निमाहब...।"

'निमाहब' कहि सोनाय कक्काक मुँह ओहिना बन्न भऽ गेलैन जहिना

बिजली गेने वत्तीकेँ होइ छइ। पिताक मुँह बन्न होइत देखि जेना रघूक मनक फड़की खुजल। बाजल-

"बाबू, मुँह किए बन्न भेल?"

बेटाक जिज्ञासा आ समैयक गति-विधि देखि सोनाय कक्काक मन तड़ैप उठलैन। मनमे उठलैन जे जेहेन समय भेल जा रहल अछि ओ एहेन दुरकाल बनल जा रहल अछि जैठाम एक संग अन्हर-बिहाड़ि, झाँट-बरखा, ओला-पाथरक संग ठनको खसै-खसैपर अछि, तैठाम जँ रघूकेँ सभ बात कहि देबइ तँ मन उबिअए लगतै, तइसँ नीक जे जे परिवारक अछि ओ केहेन अछि आ केहेन बनला पछाइत ओ समैयक संग चलत।

बजला-

"बौआ, जखन समाजमे छी तखन बहुत बात बुझऽ देखऽ पड़तह, मुदा से नहि, लोके-लोक परिवार बनै छै, परिवारे-परिवार समाज बनै छै आ समाजे-समाज देश-बनै छइ। ई भेल अपन जिनगीक बाट-घाट। अही बीच अपनो जीबैत चलबह जइसँ परिवारोकेँ जिनगी भेटतह आ ओहो जीबैत चलतह।"

पिताक विचार सुनि रघूकेँ जेना जेठुआ बम्बै आमक बोनेलहा सुआद भेटल होइ तहिना बिहुसि उठल-

"बाबू, अहाँ खाली दहिना हाथक ओंगरीक इशारा करैत ने चलू, जेते देहमे दम अछि तइसँ पाछू नै हटब।"

सौनक पहिल फुहार जकाँ सोनाय कक्काक मनमे पड़लैन। आँखि उठा रघूक आँखिपर दैत बजला-

"बौआ, एकाएक समयमे भुमकम आबि गेल अछि.! अइमे केना थीर भऽ कऽ रहबह, एकर परीक्षाक कठिन समय आबि गेल अछि।"

रघू बाजल-

"ई तँ भेल संकट, मुदा एकर मोचन केना हएत से ते अहीं ने विचारि कऽ कहब।"

विचारक बाट बेटाकेँ पकड़ैत देखि सोनाय कक्काक मनमे स्वाति नक्षत्रक बून बाँसमे पड़ि गेने जहिना वंशलोचन बनि जाइ छै तहिना बुझि पड़लैन। छाती उघारि बजला- "बौआ, आठ कट्ठा जमीनबला कियो अपन मोल बुझैए.!

अपने सभ बिकाए चाहैए.! कीनिनिहारोक कमी छै, जे नइ कीनत। अहिना मनुखक खरीद-बिकरी दुनियाँमे होइ छै.! मुदा दुनियाँ-दारीक बात छोड़ह।”

बात छुटैत सुनि रघूकेँ मनमे भेल जे जखने बात छुटत तखने काज छुटत, जखने काज छुटत तखने घरक गति छुटत जइसँ परिवारक नोकसान हएत...।

मुदा ई नइ बुझि पेलक जे गामेक बाधक खेत जकाँ परिवारमे छोट-पैघ, नीच-ऊँच, धार-धूर सभ किछु रहै छइ। तहीमे जँ इचना माछ जकाँ ओझरा जाएब तखन समाजक परिवार केना बनत?

विचारक जे दिशा अछि ओ काजक दिशाक अनुकूल चलैए। मुदा ऐठाम बोनिहारक ओकाइतबला सोनाय काका अपन स्वावलंबी जिनगी बना जीबैत एला अछि, आ आइक परिस्थितिमे केना ठाढ़ रहता, यएह विचार मनक मोइन बनि फुटऽ चाहै छैन, मुदा धकमका रहला अछि। धकमका ऐ दुआरे रहला अछि, जे दूटा बच्चा स्कूल जाइबला अछि ओकरा प्राइवेट स्कूल जाए देब आकि सरकारी। सार्वजनिक विद्यालयमे केतौ मकान नइ छै, तँ केतौ शिक्षक नहि, केतौ शिक्षक अछि तँ पढ़ौनिहार नहि...।

..एहेन स्थितिमे समयसँ मुकाबला करैक संस्कार पोतामे केना औत? मुदा लगले मन घुमि परिवारेक बीच आबि गेलैन। बजला-

“बौआ, जेतबे खेत-पथार छह तेकरे नीक जकाँ परेखह। केहेन काज आ केतेटा काज सम्हारैक शक्ति छह। तइ हिसाबसँ अपनाकेँ असथिर रखैत आगू बढ़ैक कोशिश करह।”

बिच्चेमे रघू टोनैत बाजल- “बाबू, जाबे अहाँ मेहौत जकाँ परिवारमे छी, ताबे हम सभ पाइटे भेलौं किने, जेना-जेना अहाँ घुमब तेना-तेना हमहूँ सभ घुमब।”

बजैक बेगमे रघू बाजि गेल, मुदा ई नइ बुझि पेलक जे ई भेल अन्ध-भक्त। अहीठाम अबिसवास आ बिसवासक घाट छै, अबिसवासक घाटपर अन्धबिसवास सेहो बैसल अछि...।

सोनाय कक्काक मनमे ईहो नचैत रहैन जे बुधियारक काज बुड़िबकक खेलो तँ होइते अछि। जेना खुरपीक काज करैत माता-पिताकेँ देखि बालो-बोध अपनो हाथमे खुरपी लैत खाधि खुनऽ लगैए। अपना बुझने तँ काजे करैए मुदा

ओकरा खेलब छोड़ि की कहबै। कहबो केना ने करबै, मातो-पिताक सोभावो तँ काजक नहियेँ छैन, बाल-बोधकेँ बोधबे रहै छैन...।

मनक सभ काहो-कूह आ जालो-समाढ़केँ फरिच करैत सोनाय काका बजला- "बौआ, गाममे जँ लोक जेरगर गाए पोसौ चाहत तँ नइ भऽ सकै छइ। ओना, गाए अनमोल-रत्न छी, दूध सन वस्तु पैदा करैए, खेती-पथारीसँ जुड़ल उद्योग छी, मुदा गाम आ शहर-बजारक दू परिस्थिति अछि। जखन शहरमे नइ छी, तखन शहरक बात बुझनौं कोनो लाभ नहियेँ अछि।"

जेना रघूक तामस बजारवादपर उठल होइ तहिना ओही झोंकीमे बाजल-

"हँ-हँ छोड़ू शहर-बजारकेँ, अपन गामक बात बुझा दिअ।"

गामक बात आ अपन परिवारक बात, दुनूक दू सीमा छइ। परिवारक सीमा परिवारक आँट-पेटसँ अछि, गामक गामक आँट-पेटसँ। मुदा गाममे रहै छी, गामक बात नइ बुझबै तँ गौंआँ भेलिऐ कथीक। तँए गामक बातकेँ विचार रूपमे आ परिवारक बातकेँ काज रूपमे चलब नीक हएत। रघूकेँ बुझबैत सोनाय काका कहलखिन- "बौआ, मानि लाए कियो गाममे दसटा गाए पोसि उद्योग ठाढ़ करए चाहैए, तेकरा-ले दसटा गाइयक जगहक संग हरिअर चारा-ले घासक खेतीक संग सभ कथुक जरूरत पड़तै। मुदा अधिकांश परिवार अछि केहेन? केकरो घर-थैर बनबैक जगह नइ छै, तँ केकरो घास उपजबैक खेत। शहर गाममे ई अन्तर सोझा-सोझी अछि। गाममे घासक बिकरी नइ अछि, शहरमे अछि। तैसंग ईहो अछि जे जेकरा चीज छै तँ करताइत नइ छै आ जेकरा...।"

पिताक विचार रघूकेँ बेलक काँट जकाँ मनमे गड़ल। बाजल-

"बाबू, छोड़ू गामक गप। जानए जअ आ जानए जत्ता। अपन परिवारक बात खाली बुझा दिअ जेते करैत रहब।"

एकाग्रताक बाट बेटाकेँ पकड़ैत देखि सोनाय काका नवका बबाजी जकाँ रामधुन जकाँ तोपि देब नीक बुझलैन। ओ ई जे साइयो काज आगूमे रहतै, तइमे जेते कएल हेतै तेते बीछि-बीछि करत। कहलखिन- "बौआ, परिवारक हिसाबसँ अपना सभ किछु अछि। तँए कोनो उपार्जनक क्षेत्र बना खाली चलैक अछि जइसँ परिवार चलैत रहत।"

पिताक विचार रघूकेँ जँचल। बाजल- "खेती-जोकर खेत नइ अछि, तहूमे रौदी-दाहीक आफद सेहो ऐछे.! तखन?"

सोनाय काका रघूकेँ बुझबैत कहलखिन- "कट्ठा भरि जे वाड़ी अछि जइमे डेढ़िया परहक कलसँ पानियोँक काज भऽ जाइए, ओइमे बरहमसिया तीमन तरकारीक खेती केने बजारक जहरेलहा तीमन-तरकारी नइ कीनए पड़त। संगे परिवारमे जेते गोरे छी, तइ हिसाबे दूटा गाए परियाप्त भेल। नमहर काजसँ नमहर आमदनी हेबे करत, मुदा तइले नमहर खर्चक संग समैयोक तँ एकभगाह खर्च चाहबी करी...।"

पिताक बात सुनि रघूक मन जेना थीर भऽ गेल। मने-मन हिसाब जोड़ए लगल जे दूटा गाएकेँ खुअबै-पीअबै, दुहै-गाड़ै आ थैर-गोबर करैत परिवारक जेते गोरे छी, सबहक दिन खटि जाइए। छबे मास नइ ने तेकर पछाइत तँ दूटा दूधारू गाए खुट्टापर भइये जाएत। रघूक मन असथिर भऽ गेल।

बाजल-

"परिवारक लोकक समस्या समाधानक उपाए भऽ गेल, मुदा जे उपाइयक साधन भेल तेकर समाधानक उपाय केना हएत?"

योजनाबद्ध ढंगसँ अपनाकेँ चलबैत आबि रहल सोनाय काका बजला-

"बौआ, गाए पोसैले थैर-घर छहे, सुखल चारा-ले गहुमक भूसी कीनि लेब, दवाइ-दारू बजारेमे भेटैए मुदा, हरिअर चाराक जोगार बिसवासू ढंगसँ करए पड़तह।"

पिताक बात सुनि रघू टपैक पड़ल-

"से केना करब?"

हरिअर चाराक चर्च करैत सोनाय काका बजला-

"बौआ, हरिअर चारा एकटा भेल घास, दोसर भेल दुधिया घास। दुधिया घास दनगर चारा होइए। तँए नीक हेतह जे मक्कै दुधिया घास छी जे बारहो मास उपजैबला घास छी। तीन खलमे पाँचो कट्ठाकेँ बाँटि तीनू समैयक घास चक्रवत करैत रहब, दूधारू घास उपजबैत रहब, दूधारू गाए दुहैत रहब, दुधिया जिनगी जीबैत रहब, दूधखौका दूधा-वैष्णव कहबैत रहब।" ❑

हरवाहि

✳

बैशाख मासक अन्हरिया पख। फागुनेसँ जे बिआह-दुरागमन आ उपनैन-मुड़नक लगन पकड़लक से दिनो-दिन बढ़िते गेल। ओना चैतमे बिआह-दुरागमन रूकल मुदा उपनैन-मुड़न चलिते रहल। चैतक सकराँइत बितते उपनैन-मुड़नक संग बिआहो-दुरागमन जोड़ पकड़लक। जोड़ो किएक ने पकड़ैत, तेते ने लोककेँ केराक पौंच जकाँ सखा-सन्तान होइए जे बेटा-बेटीक बाढ़िये आबि गेल अछि। जखने परिवारमे बेटा-बेटीक बाढ़ि औत तँ बिआहो-दुरागमनक बाढ़ि एबे करत।

आन सालक बैशाखसँ ऐ बेरक बैशाखक रोहानी सेहो सोहंतगर बनि गेल। किएक तँ जइ हिसाबे ऐ बेर शीतलहरी नइ भेल आ अगतेसँ सूर्य अपन धाही देखबए लगल तइ हिसाबे बैशाखक धू-धू धधकैत मौसम रहैत मुदा से नइ भऽ वसन्त रीतुक जे उतार मासक मदमस्त मधुर-सत्ता हेबा चाही से भऽ गेल। तेकर कारणो भेल। कारण भेल जे शीत-पालामे आम-जामुनक फूलो आ मोजरो कठुआ-कठुआ झड़ि जाइ छल से नइ झड़ल। तँए अगते फागुनसँ गाछ-बिरीछक डारि-पल्लो फूल-मोजरसँ जमीन दिस लबि-लबि निच्चाँ-मुहेँ भऽ गेल।

सोहंतगर समय पौने गाछ-बिरीछमे दनो-फड़ नीक पकड़लक। जइसँ बैशाख चढ़ैत-चढ़ैत माने जुड़शीतल पाबैन होइत-होइत जहिना आमक गाछ तहिना जामुनक गाछ फड़सँ लदि लटैक गेल। ओना, सुभ्यस्त समय बनैक दोसरो कारण भेल। जहिना फगुआसँ तीन दिन पहिने तेहेन बरखा भेल जे दोहरा कऽ माघक मेघपनकेँ घुमा अनलक, जइसँ एक दिस सूर्जक प्रखर प्रभा–माने शीत-पालासँ स्वच्छ वायुमण्डल–तँ दोसर दिस माघक मेघपन पौने मौसममे मस्ती आबिये गेल। से खाली फागुनेक बरखा-टासँ नहि भेल। चैतक चढ़ैत प्रखरताक बीच रामनवमीक पराते, तेहेन झमझमौआ बरखा भेल जे बिगड़ैत मौसमक

चेहरामे पुन: जुआनी आनि रोहानी भरि देलक।

बैशाख मासक अन्हरियाक सप्तमी तिथि आ जुड़शीतल पाबैनक तेसर दिनक नौत रूपलाल भायकेँ मात्रिकसँ एलैन। ममियौत भाय–अधिकलाल–क पोतीक बिआह छिऐन।

ओना रूपलालक गामोमे–हित अपेछितक ऐठाम–तीन गोरेक बेटीक बिआह छिऐ, मुदा रूपलाल भाय मात्रिक जेबे करता। गाममे दोसरो-तेसरो समांग सम्हारि लेतैन।

रूपलाल भाइक मात्रिक चालीस किलोमीटरक दूरीपर छैन। जाबत किलोमीटरक नाप नइ आएल छल ताबत चौबीस-पचीस माइल बुझै छला, माने बारह कोस, मुदा आब तँ माइल मेटाइये गेल आ कोस सेहो कोसो दूर भेल जा रहल अछि। ओना, पहिने दुनू गाम–माने रूपलाल भाइक गाम- 'सोहनपुर' आ मात्रिक- 'रघुनाथपुर'–दरभंगे जिलामे छल मुदा आब सोहनपुर मधुबनी जिलाक उतरबरिया-पुबरिया आ 'रघुनाथपुर' दरभंगा जिलाक दछिनबरिया-पुबरिया दिगारमे पड़ैए।

बिआहक दिन सबेरे-सकाल रूपलाल भाय जलखै कऽ पोताक संग मोटर साइकिलसँ मात्रिक विदा भेला। ओना दरभंगा जिलाक पुबरिया इलाका–जे धार-धूरक इलाका छी, रस्ता-पेरा नीक नहियेँ छै, मुदा रूपलाल भाय मात्रिक नइ जेता से मन नहि मानि रहल छैन, जेबे करता।

चालीस किलोमीटर जाइमे मोटर साइकिलसँ घन्टो भरिसँ कम्मे समय लगैए मुदा रस्ता-पेराक दुआरे अढ़ाइ-तीन घन्टा लगलैन। साढ़े दस बजे रूपलाल भाय मात्रिक पहुँचला। बेटीक बिआह छी तँए सभ समांग सभ दिस काजमे लागल छल। ओना, अधिकलाल भाय पचासी बर्ख टपि चुकल छैथ। देह-दशासँ तँ दस बर्ख आउरो जीबे करता मुदा कानसँ तेहेन बहीर भऽ गेल छैथ जे अपनाकेँ अकाजक मानि नेने छैथ। भरि दिन दुआरे-दरबज्जापर रहै छैथ। दरबज्जेपर खेनाइ-पीनाइ-सुतनाइ-बैसनाइ होइ छैन आ दरबज्जाक आगूमे नहाइ-धोइले कलो छेबे करैन। बैसल-बैसल जखन मन अकछा जाइ छैन तँ दरबज्जेक आगूमे टहैलियो-बुलि लइ छैथ। परिवारमे एते सुविधो बेटा सभ देनहि छैन जे समैपर चाह, जलखै आ खेनाइ-पीनाइ सेहो भेट जाइ छैन।

तैबीच अधिकलाल भाय नहाइले कलपर पहुँचले छला कि रूपलाल

पहुँचला। रूपलालकेँ पहुँचते अधिकलाल भाय नहाएब छोड़ि कलपर सँ दरबज्जा दिस बढ़ला।

तैबीच मोटर साइकिलसँ उतैर अधिकलाल भाय लग आबि पएर छुबि गोड़ लगलखिन, मुदा बजला किछु नहि। किए तँ रूपलाल भायकेँ सेहो बुझले छैन जे अधिकलाल भाय सोलहन्नी बहीर छैथ। तँए कुशल-समाचार किछु ने पुछलखिन। ओना, अधिकलाल भाय कानेटा सँ बहीर छैथ मुदा बोलियोमे टाँस छैन्हे आ आँखियो नीक रहने देखबो करिते छैथ।

घरे-अँगनामे समांग काज करै छल तँए रूपलाल भाइक नाओं सुनिते एकाएकी सभ दरबज्जापर आबए लगल।

अधिकलाल भायकेँ गोड़ लागि रूपलाल कलेपर पहुँच हाथो-पएर धोलैन आ गरदा-सभ जे देहपर लटकल छेलैन तेकरा अंगपोछासँ झाड़ि लेलैन। दुनू ममियौत-पिसियौत भाय दरबज्जापर आबि बैसला। तैबीच अधिकलालक जेठ बेटा–जीबछ–दरबज्जापर अबिते रूपलाल भायकेँ गोड़ लागि बाजल-

“काका, रस्ताक झमारल छी, तहूमे तेहेन रौद अछि जे तबैध गेल हएब तँए पहिने कनी शरबत पीब लिअ। पछाइत नहाएब-सोनाएब।”

जीबछक बात रूपलाल भायकेँ सोहंतगर लगलैन तँए चुपे रहला। मुदा बिच्चेमे अधिकलाल भाय रूपलालकेँ कहलकैन-

“भाय, गरदा-धूरा सौंसे देह पड़ल छह, तँए पहिने नहा लएह।”

ओना, रूपलाल भाइक मन रहैन जे गरमाएल आएल छी तँए पहिने कनी काल जीरा ली, पछाइत नहाएब-सोनाएब। मुदा तैबीच दोहरा कऽ अधिकलाल भाय बजला-

“भाय, पहिने नहा लएह, पछाइत जे हेतै से बुझल जेतइ।”

अधिकलाल भाइक विचार रूपलाल भायकेँ कनी अधलो बुझि पड़ैन मुदा जेठ भाय दुआरे विचारकेँ रोकबो नीक नइ बुझैथ। एकताले अधिकलाल भाय तेहरा देलखिन-

“भाय, पहिने नहा लएह।”

तैबीच गिलास आ लोटामे शरबत नेने सुशील पहुँच गेल। सुशीलक हाथमे शरबत देखि अधिकलाल भाय आगू बजैसँ दम कसलैन।

रूपलाल भाय शरबत पिबते रहैथ कि पानो आबि गेलैन। पान खा रूपलाल भाय जीबछकेँ पुछलखिन-

"बौआ, केते गोरेक परिवार छह?"

ओना, रूपलाल भाय सालमे एक बेर, दू बेर मात्रिक अबिते छैथ, मुदा टोल जकाँ ममियौतक परिवार बनि गेल छैन। चारिटा बेटा आ तीनटा बेटीक संग पोता-पोती, नाइत-नातीनसँ घर भरल छैन। परिवारो तँ सभ दिन असथिरे नइ रहैए। धियो-पुता बढ़ने तँ परिवार बढ़िते रहैत अछि। ओना, मृत्यु भेने घटबो करैए। मुदा जन्म-मृत्युकेँ जनैमे कनी अन्तर अछिए। माने ई जे बाल-बच्चाक मृत्यु हौउ आकि चेतन-बुढ़क ओ घटना रूपमे बुझल जाइए तँए ओकर परसार बेसी होइ छै मुदा जन्म तँ से नइ छी, ओ तँ घटनाक घटित नहि वृद्धिक बढ़त छी, तँए ओते नइ पसरैए। तहूमे बहरबैया माने परदेशिया परिवार भेने आरो झँपाएल रहिते अछि। मने-मन परिवारक हिसाब जोड़ैत जीबछ बाजल-

"काका, एकसँ केतेक भेल से कहै छी।"

एकसँ अनेक भेल वा एकसँ एक्कैस भेल ई बात रूपलाल भायकेँ चनका देलकैन। मनमे उठलैन- छिड़ियाएल जगह रहने परिवारक रूप सेहो छिड़िया जाइते अछि मुदा एक विचारधारा रहने परिवारक धारमे केतौ बान्ह पड़ैक संभावना नइ रहै छइ। जेकरा लोक एकसँ एक्कैस मानि चलैए...।

मुदा लगले मनक कूह हटलैन माने रूपलाल भाइक मनकेँ जे कुहेस छाड़ए लगल छेलैन ओ छँटलैन। छँटिते बजला-

"से की बौआ?"

तैबीच जीबछ अपन परिवारक–जैठामसँ रूपलाल भाय फुटला तैठाम तकक–हिसाब मने-मन सेरिया नेने छल। रूपलाल भाइक मुहसँ खसिते जीबछ बाजल-

"काका, हमर परबाबा भेला आ अहाँक नाना। तैठामसँ कहै छी।"

बाँसक बीट जकाँ रूपलाल भाय ममहरकेँ बिटिया कऽ पकड़ेलैन। पकड़ाइते मन असथिर भेलैन। बजला- "बड़बढ़ियाँ।"

रूपलाल भाइक बात सुनि जीबछ सहैट कऽ परबाबा लग पहुँच सहचेत होइत बाजल- "परबाबाकेँ दू सन्तान। एक बेटी, जे अहाँक माए आ हमर परदीदी

भेली। आ एक बेटा जे अहाँक मामा आ हमर बाबा भेला।”

ओना दीदी तक रूपलाल भाय बुझै छला मुदा भातीजक मुहेँ ‘परदीदी’ सुनि मनकेँ आरो शान्त केलैन।

शान्त ई केलैन जे बुधि बपजेठ होइए तँए जँ निच्चोँ-खाढ़ीक मुहेँ आबए तँ मानि ली...।

मुड़ी डोलबैत रूपलाल भाय बजला- “हँ, से तँ भेबे केलाह।”

जीबछ बाजल- “परदीदीक हिसाबक भार अहाँक भेल आ परबाबाक हमर।”

रूपलाल भाय बजला-

“सेहो बड़बढ़ियाँ।”

जीबछ बाजल- “बाबाकेँ तीन बेटा आ तीन बेटी। तीनू बेटीक हिसाब छोड़ि दइ छी। तीनू भाँइसँ हमर तेरह भैयारी अछि। तेरहो भाइकेँ बाबन-तीरपनटा सन्तान अछि।”

जीबछक बात सुनि रूपलाल भाइक मुहसँ मखानी लाबा फुटए लगलैन, मुदा मने-मन अपनो परिवारपर नजैर खिरौलैन तँ बुझि पड़ैन जे ओइसँ हमरे कोन कम अछि। भलेँ अखन अठारहे गोरेक परिवार किए ने हुअए मुदा छी तँ टपले। मनुक्खक बाढ़ि कि अल्लू-कोबी जकाँ होइए जे कोबीमे एकटा फल हएत आ अल्लूमे कमसँ कम आठटा फड़ हेबे करत। भलेँ छोट हुअ कि पैघ खाली रोगहा गाछ छोड़ि कमसँ कम आठटा फड़बे करैए।

मुदा मनुक्खक वंश तँ से नहि अछि केतौ दर्जनो फड़त आ केतो एकोटा फड़त आ केतो नागा सेहो हेबे करत।

ओना अधिकलाल भायकेँ मने-मन दुनू गोरेक बीचक–माने जीबछ आ रूपलालक–गप-सप्पसँ खुशियो होनि आ तामसो उठैत रहैन। तामसक कारण रहैन जे अधिकलाल भाय पएरे सोहनपुर अबै-जाइ छला तँए चलैक थकान आ थकानक-भुखान केहेन होइए से अपन अंगेजल रहबे करैन। तँए होनि जे पहिने रूपलाल नहा कऽ खा लैथ पछाइत निचेनसँ गप-सप्प हेतइ। ओना दस बर्खसँ अधिकलाल भाय सोहनपुर नइ आएल छला। तँए बान्ह-सड़क आ गाड़ी-सवारी मनमे नइ उठै छेलैन।

हलाँकि रूपलाल सेहो गप-सप्प करैसँ बर्जित करए चाहै छला। तेकर कारण मनमे रहैन जे बेटी-बिआहक दिन छी, रंग-रंगक अनेको काजक बाढ़ि तँ परिवारमे आबिये गेल अछि, तँ जँ ओकरा छोड़ि गप-सप्प करब तँ काज पछुए-बे करत। जे अनुचित तँ भेबे कएल। अखन तँ ओतबे समय गप-सप्पमे गमेबा चाही जेते काजक दौड़क अछि, माने काजसँ जुड़ल अछि। परिवारक ऐतिहासिक गप तँ पछाइतो निचेन भेलापर कएल जा सकैए। मुदा जखन घरबैये ओइ महतकेँ मानि नइ दऽ रहल अछि, तखन...।

मुदा लगले रूपलालकेँ अपने मनक विचार उत्प्रेरित केलकैन। उत्प्रेरित ई जे जइ काजे आएल छी आ सोझमे बाधित भऽ रहल अछि तैठाम मुँह बन्न राखब–माने नइ बाजब–विचारक चोरि तँ भेबे कएल। ओना परिस्थितिवश अनेको खण्डन-मण्डन अछि मुदा से अखन नहि। ‘बहिरा नाचे अपने ताले’ जीबछक संग रूपलाल गप-सप्प करै छला आ अधिकलाल भाय मने-मन अपन जिनगीक इतिहासक पन्ना उनैट रहल छला।

उनटैत-उनटैत एकटा ओहन जगह आबि गेलैन, जैठाम अधिकलाल भाइक मन फुटि पड़लैन। फुटिते आँखिमे नोर लबालब भरि गेलैन। जे रूपलालो, जीबछो आ परिवारक आनो-आनो देखए लगला। देवालयक देव जकाँ अधिकलाल भाइक सुरता मुरत बनि गेलैन। टकटकी लगा सभ अधिकलाल भायकेँ देखए लगला।

समयक अवसर पाबि अधिकलाल भाइक विचार मनकेँ उद्वेलित केलकैन। उद्वेलित होइते मनमे उठलैन- डारिक चुकल बानर आ अवसरक चुकल मनुक्ख, दुनू बरबैर! कमसँ कम अखन एते तँ हेबे करत जे पाँच बर्खक बच्चा माने ओहन बाल-बोध जेकर बुधि अखन अँकुरिये रहल छै, आ अस्सी बर्ख आगूक जिनगी नेने ठाढ़ अछि, तैठामसँ लऽ कऽ सियान धरिक बीच जँ अपन इतिहास नइ लिख लेब तँ परिवारक इतिहास केना गढ़ल जाएत। के एहेन दाता-दिनानाथ छैथ जे हमरो सन लोककेँ ऐ धरतीपर देखता।

पचासी बर्खक अधिकलाल भाय सत्तैर बर्खक पिसियौत भाएकेँ कहलखिन-

“रूपलाल, तोरा ऐठाम बीस बरख हरवाहि केने छी।”

अधिकलाल भाइक बात मुहसँ खसिते सौन-भादोक बदरियाएल मेघ

जकाँ वातावरण बनि गेल। रूपलालक मनमे अधिकलाल भाइक बात विस्तारसँ बुझैक जिज्ञासा जगलैन।

जिज्ञासु रूपलाल बाजल-

“से की भाय?”

‘से की’ सुनिते अधिकलाल भाइक दुनू आँखिसँ दुखक ओ नोर जे सुखि कऽ सुखिया-सुखिया पचासी बर्खक नयन-कोणसँ टघरैत प्रेमिल धार बनि निच्चाँ उतरए लगलैन।

ओना बचपनक देखल रूपलालो भायकेँ छेलैन्हे, मुदा ऐठाम तँ परिवारक निच्चासँ ऊपरक खाढ़ीक नजैर नजरा देलकैन, तँए अपनो ओही रूपकेँ पकड़ैत रूपलाल पुछलखिन- “से कहिया भाय साहैब?”

‘से कहिया’ सुनिते अधिकलाल भाइक मनमे एकाएक ओ समय छड़ैप कऽ आबि गेलैन जइ समय दस बर्खक बच्चा छला, मोन पड़लैन-पिताक तीनू भाँइक भैयारीमे भिनौजी भऽ चुकल छल। नबे बर्खक रही तहिये बाबू मरि गेला। ओही बेर पूबसँ कोसीक पलाड़ी आ पच्छिमसँ कमलाक पलाड़ी आबि रघुनाथपुर सहित केतेको गामकेँ बाढ़िक इलाका बना देलक। एक जोड़ बरद आ सात बीघा खेत अपन हिस्सामे छल। माए बच्चेसँ मेहनती छेली।

ओना, भार पड़ने कोढ़ियोकेँ पानि चढ़िये जाइ छै मुदा से नहि, छेहा किसानक बेटी छेली, तँए किसानी जिनगीक सभ अनुभव छेलैन। माल-जाल पोसैसँ लऽ कऽ खेती-पथारीक सभ लूरि सीखनौं छेली आ करितो छेली। पिताकेँ मुइला पछाइत माए कहलक- ‘अधिकलाल, किछु भेलौं तँ हम जनिजातिये ने भेलौं। हर जोतब तँ लोक हँसबो करत आ खिदहाँसो करत। आब तँ तोहूँ गोठगो भेलह। अपन काज छी, नइ एक दिने तँ दू दिने चाहे तीन दिने कए तँ सकबे करै छह। बाँकी सभ काज हम सम्हारि लेब।’ नबे-दस बर्खक रहबे करी, हरवाहि करब शुरू केलौं...।

अपन जिनगीक अनुभवकेँ हथियार बना अधिकलाल भाय बजला- “भाय, तहिया हम बारह बर्खक छेलौं, गाममे छहमसिया बाढ़ि पकैड़ लेलक। माने शुरू जेठसँ कातिक तक बाढ़िक पानिसँ गाम डुमए लगल, जइसँ छह मासक खेतीए दहा गेल। माए कहलक- ‘बौआ, अपना लूरि छह, दीदीए ऐठाम जा हरवाहि करह।’ अपनो नीक बुझि पड़ल, किए तँ बाढ़िक पानि लगने गाछी-कलम

तँ सुखिये गेल जे गामक उजार सेहो शुरू भऽ गेल। ओइ समय कमला धार गामसँ कोस भरि पच्छिम आ कोसी तीन कोस पूबमे बहैत रहइ।”

ओना रूपलालकेँ माए सेहो सभ बात कहने रहथिन, बुझले रहैन। मुदा ऐठाम तँ मात्रिकोक परिवार आ कुटुमो परिवारक लोक सभ छैथ, जिनका सभकेँ नइ बुझल छैन, जँ बुझलो हेतैन तँ मनसँ हटने बिसैर गेल हेता, तँए सभकेँ बुझब जरूरी बुझि रूपलाल पुछलखिन-

“भाय, जखन गामसँ माने रघुनाथपुरसँ दुनू धार हटले छल तखन केना.?”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भायकेँ जेना मोन पड़लैन तहिना बजला-

“भाय, गाम केना उपटल से पछाइत कहबह। पहिने ओइसँ पैछला सुनि लएह। शुरूहे जेठमे जखन धार फुलाएब शुरू होइ, तखने जोड़ो भरि बरद नेने तोरा गाम–सोहनपुर–चलि जाइ छेलौं।”

बिच्चेमे रूपलाल पुछलकैन-

“सोहनपुर जाइमे केते समय लगए?”

अधिकलाल भायकेँ बुझले बात रहैन। बजला-

“रातियेमे माए रोटी-तरकारी बना कऽ रखि लिअए आ जखने तीन बजे भोरमे चिड़ै डकए लगै आकि उठा दिअए। उठिते दुनू बरदोकेँ खाइले दऽ दिऐ आ अपनो मुँह-हाथ धोइ कऽ खा ली। जखन रस्ता-पेरा सुझह लागए माने देखए लगिऐ कि संग केने माए तीन कोस आगू रसियारी तक टपा घुमि जाए आ हम भरि दिने तोरा ऐठाम पहुँची।”

बिच्चेमे रूपलाल पुछलकैन-

“रस्ता-पेरामे बरद हरानो करैत रहए?”

एकाएक जेना अधिकलाल भाइक मन अपन सत्तैर-बहत्तैर बर्ख पूर्व कएल काजपर पहुँच गेलैन। पहुँचबो केना ने करितैन। अधला काज थोड़े छी जे पनचैतीक पंचो सभ कहैत जे अखनसँ बिसैर जाउ। जे जिनगीक जीवंन्त इतिहास छी ओकरा केना लोक बिसैर जाएत। अधिकलाल भाय बजला-

“भाय, जइ बरदक संग चौबीस घन्टाक सम्बन्ध रहै छल ओ रस्ता-पेरामे

हरान किए करैत, कोनो कि मनुक्ख छल जे सभ किछुकेँ बिसैर पॉकैटमारी कैये लइत। पशु तँ पशु होइए किने।"

गप-सप्पक वृहद रूप देखि रूपलाल भाय जीबछकेँ कहलखिन- "बौआ, तोहर बेटीक बिआह छिअह, हम अनतैक भेलौं आ भाय बहीरे छैथ, दुनू निकम्मे भेलौं तँए मड़बाक तैयारी तँ तोरे करह पड़तह।"

रूपलालक विचार जीबछ जेना बुझि गेल तहिना बाजल-

"हँ काका, कौल्हुको कएटा काज पछुआएले अछि!"

जीबछकेँ एकाएक उजगुजाइत देखि रूपलाल कहलखिन-

"पछुआएल अछि तँ की हेतै, बिआहक प्रकरणो तँ अखन पछुआएले छह, आ साँझ तक ओरियान-बात करैक समैयो छहे। सभ समांग हाथे-पाथे लगि जाह, लगले काज समटा जेतह।"

काज करैबला सभ काज दिस बढ़ला। खाली आठ-दसटा धिया-पुता आ अधिकलाल भाइक संग रूपलाल दरबज्जापर रहि गेला।

लोकक भीड़ हटिते अधिकलाल भाइक मनमे खुशी एलैन। खुशीक कारण भाइक मनमे जे रहल होनि मुदा अपना बुझि पड़ल जे जेहेन शान्त-चित्तसँ अपन जिनगीक बात अधिकलाल भाय करए चाहै छैथ ओहने शान्ति भेटलैन अछि। धिया-पुताकेँ दमसबैत अधिकलाल भाय बजला- "चुपचाप शान्तसँ मनुक्खक बच्चा जकाँ बैस कऽ दुनू भैयारीक गप-सप्प सुनै जाइ जो नहि तँ जे जे कच्चर-कुच्चर करमे तेकरा कान पकैड़-पकैड़ भगेबौ।"

मुस्कियाइत अधिकलाल भाय रूपलाल दिस देखए लगला। ओना रूपलालो अपन बदलल जिनगीक विचारे अधिकलाल भाइक बदलल रूपकेँ देखिये रहल छला। जइसँ अधिकलालो भाइक मनमे बिसवास जागिये गेल छेलैन। किए ने जगतैन, जिनगीमे बिसवास तखन जगबे करै छै किने जखन जिनगीक अनुरूप लोक समयक मुकाबला करैत चलैए। से तँ अधिकलाल भायकेँ छेलैन्हे।

जहिना मनक बिसवास जगिते लोक बताह जकाँ बड़बड़ाए लगैए तहिना बड़बड़ाइत अधिकलाल भाय बजला-

"भाय, आइ केहेन शोभा-सुन्दर अछि जे दुनू भाँइ एकठाम बैस घर-

परिवारक यज्ञकृत्ति देखि रहल छी!”

अधिकलाल भाइक कान ने बहीर भऽ गेल छैन मुदा जहिना मन निरोग छैन तहिना देहो-दशा चाकर-चौरस छैन्हे।

रूपलाल बजला-

“भाय, आब तँ लोक तीस-चालीस बर्ख धरि केन्सर-सन रोगकेँ देहमे पचबैत जीब सकैए, अहाँ तँ सहजे सोल्होअना निरोग छी, तखन पचास बर्ख आरो किए ने जीब।”

ओना, कानक बहीर अधिकलाल भाय छैथ तँए सोल्होअना नै सुनि सकला मुदा इशारामे पनरहअना तँ बुझबे नहि मानबो केलैन। मानबो किए ने करता- कोन आन्हर अपनाकेँ आन्हर बुझैए आकि बहीरा बहीर बुझैए जे अधिकलाल भाय बुझितैथ। सभ जखन अपने ताले नाचैए तखन अधिकलाले भाय किएक नहि नचता।

नचैत अधिकलाल भाइक मुहसँ निकललैन-

“भाय की कहबह आ केते कहबह। हमरे सन अखज लोक अछि जे अखनो तक जीबैए।”

अधिकलाल भाइक बात जेना रूपलालक मनकेँ हिला देलकैन, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत अधिकलाल भाइक कानमे मुँह सटा पुछलकैन-

“भाय साहैब, सोहनपुरमे हरवाहियेटा करै छेलिऐ आकि दोसरो-तेसरो काज?”

कानमे सटि कऽ कहने रूपलालक सोल्होअना बात अधिकलाल भाय सुनि बजला- “भाय माइयक तेते दुलारू बेटा छेलौं जे हरवाहि छोड़ि ने दोसर-तेसर काजे करए दिअए आ ने सीखए देलक। सभ काज अपने करए।”

बजैत-बजैत अधिकलाल भाइक मुँह मुस्कियाए लगलैन।

भाइक मुस्की देखि रूपलाल बजला- “एतेटा जिनगी एक्के लुरिये जीब लेलिऐ।”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भाय वेरागी जकाँ बजला- “भाय, दुनियाँ किछु छी जे अनेरे हाय-हाय करितौं। एकोटा लूरिकेँ जँ बिसवासक संग, माने ओकरे वृहद ज्ञान बनबैत, जिनगीमे उतारि चलैत रही तँ जिनगी कटिते

अछि।

ओना वृन्दावनक जंगल-झाड़, बाध-बोन, धार-धुर आ गाछ-बिरीछपर झुलैत रासमे रसियाइत हँसैत-खेलैत राधा-कृष्णक विराट जिनगीक क्रिया-रूप सबहक सोझमे अछिए।”

अधिकलाल भाइक मनक बुलन्दी देखि रूपलाल बजला-

“भाय साहैब, जखन कोस भरि पच्छिम कमला-धार आ तीन कोस पूब कोसी-धार छल तखन गाम केना उजैर गेल?”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भाय पाछू उनैट साठि-सत्तैर बर्ख पैछला धियान केलैन। धियानमे अबिते बजला-

“भाय, कोसीमे बान्ह बनल, कमला ओहिना छल, माने छहर नइ बनल रहै, उत्तरमे माने तोरा सभ दिस जमीन ऊँच अछि, ओम्हरेसँ धार अबैए। दुनू कातसँ ऊपरका पानि घेराइत अबैत बान्ह तोड़ि देलक आ पच्छिम दिस धारे खुनि देलक, जइसँ सन्मुख कोसी एकेबेर दू कोस पच्छिम घुसैक आएल। तहिना पच्छिमसँ कमला सेहो गाम आबि धार खुनि लेलक, जइसँ गामे उपैट गेल।”

बजैत-बजैत अधिकलाल भाइक मन महाभारतक अभिमन्युक मन जकाँ बेथित हुअ लगलैन। जखन अभिमन्यु चक्रव्यूहमे फँसल छला। जिनगीमे ओहन अनेको समय अबिते अछि जैठाम जीवन-मृत्यु करीब रहैए आ एहनो तँ ऐछे जैठाम दुनूक दूरीमे अन्तर सेहो रहिते छइ।

अधिकलाल भाइक मन्हुआइत मुँह देखि रूपलालक मनमे उठलैन जे कहिऐन- ‘भाय साहैब! नव घर आ नव घराड़ी सभकेँ ने नीक लगै छै, तइले अहाँ किए मन्हुआइ छी।’ मुदा बजला नहि। ❑

पाइक मोल

हथिया नै बरसने बाड़ी-झाड़ीक काज अगते शुरू भऽ गेल। काल्हि कोजगरा छी। ओना, समय रौदियाह जकाँ भऽ गेल अछि। मुदा समैयोक तँ अपन गुण-धर्म होइ छइ।

चटाएल ओस रहितो जमीनमे ठण्ढ तँ पसरिये गेल अछि। भोरुका सुरूजक जे सोहनगरता एबा चाही से तँ आबिये गेल अछि। बाध-बोनमे भलेँ रौदी बुझि पड़ैए, मरहन्ने-मरहन्ना देखि पड़ैए मुदा बोन-झाड़क रूप तँ ओते नहियेँ बिगड़ल अछि। तहूमे जाड़क उसरन थोड़े छी जे पालाक पल्ला पड़ि ठिठुरल रहत, वरसातक ने उनाड़ी छी! सरलो भुन्ना तँ रहुक दुना! लत्तियो-फत्ती आकि झाड़ो-झूड़ जे अगते अर्थात् वरसातसँ पहिनहि पुरना वस्त्र बदैल नव वस्त्रक संग नव कलशक नव मुड़ीमे नव फूलक संग नव फलोक जोरन तँ जोरनाइये गेल अछि।

नव सुरूजक संग रविकान्त नव दिनक नव काज दिस नजैर उठौलैन तँ देखि पड़लैन जे दारीमक बाड़ी जाएब जरूरी अछि। केते रंगक कीड़ी-मकौड़ी, उपद्रव शुरू कऽ देने हएत। बिना केम्हरो तकने ओ दारीमक बाड़ी विदा भेला। बाड़ीक मुहाँनीबला गाछपर नजैर पड़िते दीपकक चिट्ठी मोन पड़लैन। मोन पड़लैन दुर्गापूजाक छुट्टीमे आएल सिनेहकान्त। कलशथापने दिन चिट्ठी देने छल। जइमे लिखल छेलै जे 'बीसम दिन परीक्षाक फारम भराएत, कौलेजक पैछलो बाँकी जे अछि सेहो लागत।' नाओं लिखौला पछाइत एको-पाइ देनौं ने छेलिऐ।

दारीमक बाड़ीसँ चोटे घुमि रविकान्त दरबज्जाक चारक ओलतीक बत्तीमे खोंसल चिट्ठी निकालि दोहरा कऽ पढ़लैन। परीक्षाक फारम भराएत तइले पाइक ओरियान करब छेलैन। ईहो लिखल छेलैन जे दीपक अपने गाम आबि मात्रिकक कोजगरो पूरि लेत आ तेसर दिन आपसो भऽ जाएत। ओना, केते पाइक ओरियान

करब अछि से स्पष्ट नहियेँ अछि मुदा बेटाक पढ़ाइक अन्तिम घड़ीमे किछु बजलो तँ नहियेँ जा सकैए। तहूमे कौलेजक आखिरी परीक्षा छिऐ। अन्तिम परीक्षा मनमे अबिते रविकान्तकेँ खुशी उपकलैन-

बेटाक स्नातक भेने परिवारक ऐगला सीढ़ीक एकटा पजेबा जोड़ाएत। एक पजेबा जोड़ेने एक सीढ़ीक रूप बनि जाइए। तेतबे किए, ई की नै भेल जे साधारण पढ़ल-लिखल बाप, बेटाकेँ स्नातक बना दुनियाँक बीच ठाढ़ सेहो करत। स्नातक तँ स्नातक होइए। जेकरा राज-काज चलबैक बुधि भऽ जाइ छइ। खाएर जे हौउ, जेहेन मन पकैड़ मेहनत करत तेहेन बनत। अपन जे कर्मक संकल्प दुनियाँक संग छल से तँ अबस्से पूर्ति हएत। जिनगीमे सभकेँ अपन-अपन दायित्व होइ छै, तेकरा जे जेहेन संकल्पक संग पूर्ति करैए से तेहेन बनि ठाढ़ होइए।

कोजगरा दिनक सुरूज उठि कऽ एक बाँस ऊपर भेला, करीब आठ बजैत। दीपक रेलबे स्टेशनसँ गामपर पहुँचल। जहिना दीपकक मनमे तेल-बातीक जोगाड़क विचार मर्ड़ाइत तहिना रविकान्तोक मनमे ओही तेल-बातीक चिड़ै चकभौर लैत रहैन। दीपककेँ देखिते रविकान्त बजला- “बाउ, तोरे बात मनमे घुरि-फीरि रहल अछि बहुत दिन जीबह।”

ओना, पिताक असीरवादसँ दीपकक मनमे मिसियो भरि हलचल नै उठल, कारणो स्पष्टे अछि। शब्दवाण अकास मार्गसँ छोड़ल जा सकैए मुदा कर्मवाण तँ धरतीए पकैड़ चलत। पएर छुबि प्रणाम करब तँ बिना स्पर्श भेने नहियेँ भऽ सकत। ओना, दुनू हाथ जोड़ि शब्दवाणो चलैत अछि मुदा ओ अपना सीमामे। पिता-पुत्रक बीचक जे सीमा होइ छै ओ बिना स्पर्श भेने जँ हएत तँ हाथक आँगुरक अधिकारक हनन हएत। आँगुरोक अपन कर्मभूमि छै जे रणभूमिसँ रंगभूमि धरि पहुँचबैत अछि।

लग अबिते दीपक पिता-रविकान्तकेँ गोड़ लागि, बाजल-

“बाबू, काल्हि चलि जाएब। पाँचे दिन फारम भरैक बाँकी अछि संगे.?”

पीठपर हाथ दैत रविकान्त बजला-

“एना किए अदहे मुहेँ बजलह। जे खगता तोरा हेतह, ओकर पूर्ति जहाँ धरि सम्भव हएत से करनाइ अपन संकल्पक अंग बुझै छी। मुदा हम तँ पीठेपर ने रहबह, असल काज तँ तोरे हाथ रहतह। तइले जे सम्भव हएत तइमे पाछू नै हएब, तेतबे आश ने हमर करबह। अच्छा ई कहऽ जे केना-केना कार्यक्रम बना

आएल छह?”

दीपक-

“मामाकेँ तँ अपन परिवारमे काज नहियेँ छी, वएह हकार देलैन, तँए हुनका रातिमे पूरि काल्हि भोरे गाम चलि आएब, भरि दिन गाममे रहब, परसुका गाड़ी पकैड़ लेब। तीने मास परीक्षाक अछि, अखन एमहर-ओमहरमे समय गामाएब नीक नै हएत?”

दीपकक बात सुनि रविकान्त बजला-

“भने एक दिन पहिने आबि गेलह। किछु पाइ तँ अपना हाथमे अछि मुदा तोरा केते चाही, से तँ खोलि कऽ कहबह, तखने ने आरो ओरियान करब।”

पिताक प्रश्न सुनि दीपक ठमैक गेल। ठमकैक कारण भेल जे फारम भरैक हिसाब तँ बुझल अछि मुदा किछु नव पोथी कीनैक ने ठेकान अछि आ ने सबहक दामे बुझल अछि। अखन धरि तँ एके सेट किताबसँ काज चलेलौं, मुदा परीक्षा तँ परीक्षा होइ छइ। तइले सीमित दायरासँ बाहर हुअ पड़ै छइ। मुदा लगले मनमे संतोख उठि गेलै, बाजल-

“तीन मास परीक्षामे शेष अछि कोर्सक जे एक लेखकक पोथी अछि ओ तँ ऐछे तइसँ बेसी पढ़ले केते जा सकैए, तैयो किछु कीनब।”

नव पोथीक नाओं सुनि रविकान्तक मनमे उठलैन, केहेन हएत जे भोजक बेर कुमहर रोपल जाएत। मुदा धड़फड़मे किछु बाजबो उचित नै हएत। जे काज जे करैए वएह ने ओकर भूतसँ भविस धरि गौर करत। दोसर तँ अनाड़ीए भेल। अनाड़ियो तँ एके रंगक नहियेँ होइत। कियो बुझल-गमल अनाड़ी तँ कियो बिनु बुझल-गमल हेबे करैत। ओना, अपनो साक्षर छी मुदा स्नातक धरि तँ नै जनै छी। तँए बुझल-गमल नै बिनु बुझल-गमल भेलौं। ओह! अनेरे मनकेँ औनाबै छी। दीपक कियो आन छी, किए ने सभ बात पुछिऐ कऽ बुझि ली। बजला-

“बौआ, हम तँ अपनो केलौं आ अनको देखैत एलिऐ जे पढ़ाइ शुरू होइते समयमे सब किताप-कॉपी कीनि लइ छेलौं आ भरि साल पढ़ि कऽ परीक्षा दइ छेलौं, तूँ किए.?”

पिताक पश्न सुनि दीपककेँ दुख नै भेल एक विचार मनमे उठल। विचार ई जे कोर्समे किछु पोथी शासन पद्धतिक अनुसार चलैत आ किछु अलग। विषय

एक रहितो भिन्न-भिन्न लेखकक विचारधारामे किछु दूरी रहने विषयक पोथीमे सेहो किछु दूरी बनि जाइ छै, तैसंग शिक्षकोक बीच किछु-ने-किछु रूपमे पढ़ेबा समय अपन विचार प्रस्फुटित होइते रहै छै, मुदा पढ़निहार तँ कोरा कागत रहैए जइसँ मन-मस्तिष्कमे किछु-ने-किछु भिन्नता आबिऐ जाइत अछि, तहूमे विचारक भिन्नता काँपी जाँच करबा समय सेहो मुड़ियारी दइते रहैए जइसँ किछु प्रभाव पड़िते छै, तँए आनो-आन लेखकक पोथी परीक्षा लेल जरूरी भऽ जाइए।

विद्यार्थी तँ निष्पक्ष ढंग यएह ने कऽ सकैए जे फुटा-फुटा विचारक व्याख्या करत। तइले आनो-आन पोथी पढ़ब ऐछे तखन ने परीक्षाक तैयारी भेल। किए ने पितोजीकेँ अपन विचार सुना दिऐन। बाजल- "बाबूजी, किछु आनो-आन लेखकक पोथी परीक्षामे देखब जरूरी बुझि पड़ैए, पोथी तँ अनेको लेखकक अनेको छै मुदा जे चलैनमे अछि तेकरा देखि लेब तँ जरूरीए अछि किने, तँए किछु नव पोथी कीनब अछि।"

दीपकक बात रविकान्त बुझि गेला। मुदा कम पाइबलाकेँ अधिक पाइक खर्चबला काज गरूगर भइये जाइ छै, जे रविकान्तोकेँ भेलैन। मुदा विचारोक तँ अपन समुद्र छै जइमे रंग-रंगक हिलकोर उठिते रहै छइ। मनमे दोसर विचार उठि गेलैन। उठि गेलैन ई जे तखन ओकरे इमान बुझतै जे भाँग पढ़ै छी आकि बथुआ। अपन काज एतबे भेल जे जे खर्च कहत से देबइ। कियो व्यायाम आकि मनोरंजनक विन्यासकेँ जीविके बुझि लेत तेकर हम की करबै। समगम होइत रविकान्त बजला-

"बौआ, फुटा-फुटा कऽ सभ काजक खर्च बुझा दएह, तइ हिसाबसँ पाइक ओरियान कऽ देबह। ई नै जे झाँपल-तोपल तहूँ बाजह आ हमहूँ दिअ। तइसँ काजमे बेवधान हेतह। घटी-बढ़ी भऽ जेतह। आगूसँ जे काज करबह ओ बढ़ि जेतह आ पैछला छुटि जेतह। जइसँ काजमे खाँच औतह। काजेक खाँच जिनगीकेँ खँचाह बनबैए।"

पिताक प्रश्न सुनि दीपक असमनजसमे पड़ि गेल जे नापल-जोखल काज अछि ओकरा तँ स्पष्ट बाजि सकै छी मुदा बिनु नपलो-जोखल काज तँ अछिए। तखन? तखन की, दू श्रेणीक काज बना बाजल-

"कौलेजमे तीन हजार लगत, महिनाक खर्चा बुझले अछि तखन नव पोथी लेल अन्दाजेसँ काज चला लेब।"

दीपकक बात रविकान्तकेँ जँचलैन। बजला-

"छह-सात हजारसँ काज चलि जेबा चाही?"

उत्साहित होइत दीपक बाजल- "जँ कनी-मनी घटबे करत तँ मोबाइलसँ कहि देब अहूँ ए.टी.एम.मे पठा देब।"

सोझ-साझ रस्ता देखि रविकान्तक मनमे काजक अँटकार तँ भऽ गेलैन मुदा हाथमे केते अछि आ केते ओरियान करए पड़त से अँटकार लगबैक विचार उठलैन।

मने-मन रविकान्त खर्चक अँटकार लगैबते रहैथ आकि पत्नी-चन्द्रावती आबि झटैक बजली-

"रस्ता-पेराक थाकल-ठहियाएल बच्चा आएल अछि पहिने किछु मुँहमे कहाँसँ दैत तँ अपन रमा-कठोला सुनबए लगलिऐ। बातो केतौ पड़ाएल जाइ छेलै जे पहिने सएह पसारि देलिऐ।"

चन्द्रावतीक विचारक मोड़ कनी आगूए रहैन तैबीच दीपक निहुरि कऽ पएर छुबि गोड़ लगलकैन। पैछला बातकेँ ब्रेक लेल साइकिल जकाँ एकाएक रोकि, असीरवादक प्रमुखता बुझैत बजली-

"अखन हाथी सन दुनू परानी जीविते छी।"

माइक बात जहिना दीपककेँ उत्साह भरलक तहिना रविकान्तक उत्साहकेँ दबलक। दबलक ई जे जइ काजसँ दीपक आशा बान्हि आएल अछि ओकरा आगू केना जीवित राखल जाए ओ बिना बुझने केना हएत? बुझल रहत तखन ने अखनेसँ लागि ओकरा पुरबैक परियास करब आकि गुमे-गुम रहि, जेबाकाल बाजत जे एते पाइक काज अछि। कोनो कि अपना हाथमे कागतक रुपैआ छपैक मशीन अछि जे बटम दाबि देबै आ हरहरा कऽ खसत। अपना हाथक तँ ओहन मशीन अछि जे काज रूपमे जन्म लऽ समैयक संग चलैत समयानुसार दइत। मुदा ई तँ भेल बुझनिहार लेल, कम बुझनिहार आकि नै बुझनिहार लेल तँ दोसर उपए अछि। बेटा सोझहामे जँ ओ बजली तँ उचिते बजली, अपन अधिकारक प्रयोग केली।

अपन अधिकार ई जे जन्मेसँ बच्चाक खेबा-पीबाक माने पेट-भरैक भार हुनके ऊपर छेलैन, जइसँ भूख अबै-जाइक बाट बुझै छथिन। ठीके कहलैन जे

मुजफ्फरपुरसँ अबैमे चारि-पाँच घन्टाक समय लगले हेतै, तहूमे चुल्हिक ओरियानक आदति लगले छैन। आदति ई जे भानसक बेर उनहल जाइए घरमे नून नै अछि आ अहाँ अपना तालमे बेताल छी। खाएर जे हौउ, मुदा ई बात दाबियो कऽ राखब परिवार लेल नीक नहियेँ भेल। बजला-

"दीपक केतए आएल, किए आएल से जँ अबिते नै पुछि लेतिऐ, तखन समयपर ओकर ओरियान केना होएत?"

पतिक बात सुनि चन्द्रावती ठमकली। मोन पड़लैन पाबैनक उपास। दीपककेँ खाइमे कनी अबेर भेल हेतै, मुदा अपनो तँ पाबैनक व्रत भरि-भरि दिन सहि कऽ करिते छी। कहाँ पराण छुटि जाइए। तहूमे की दीपकक रस्ता-बाटक दोकान-दौरी आकि इनार-कल बन्न भऽ गेल छेलइ। रस्ता-बाटमे तँ लोककेँ अपने आशापर ने चलए पड़ै छइ। कियो जे केतौ जाइए तैठाम जँ संगबे रहल तँ तेकर आशा भेल जँ सेहो नै रहल तँ अपने आशा करि कऽ ने चलए पड़ै छइ। एना मुँह झारि बेटा आगू बाजब नीक नै भेल।

चन्द्रावतीक मनक ग्लानि रविकान्त बुझि गेला। बुझि एना गेला जे मुँहक ठोर सिकुड़ए लगलैन। मुदा बेटा सोझहामे किछु अनर्गल बाजबो उचित नै बुझि, बात बदलैत बजला- "पाँच हजार रुपैआ जे रखैले देने रहौं, से तँ हेबे करत किने? बच्चाकेँ हजार-पान साए आगर करि कऽ नै देबै तँ आनठाम केकर मुँह ताकत?"

रुपैआक हिसाब सुनि चन्द्रावती सकपकेली। अखन धरि जे खर्च पतिकेँ कहै छेलखिन, रविकान्त घरक खर्च बुझि टोक-चाल नै करै छेलखिन मुदा आइ! बेटाक पढ़ैक ओरियान करब अछि, जहिना पाइ-पाइक खर्च हएत तहिना ने पाइ-पाइक ओरियानो करब अछि। बजली- "एक हजार तँ खर्च भऽ गेल?"

पत्नीक खर्च सुनि रविकान्त ठमैक गेला। मनमे उठलैन जे जहिये मातृनवमी-पितृपक्ष (आसीनक पहिल पख) चढ़ल तही दिन बजारसँ महिनो दिनक सभ खर्चक ओरियान कइए देने छेलिऐन, तखन खर्च केतए कऽ लेलैन। पचास रुपैआ फुटा कऽ दसमी मेला देखैले देनौं रहिऐन। तखन? बजला- "कथीमे खर्च भऽ गेल?"

उत्साहित होइत चन्द्रावती बजली- "दुर्गा-पूजाक नवमीए दिनक मेलामे एक हजार उठि गेल।"

पत्नीक बात सुनि रविकान्त बजला- "अखन छठि पाबैनकेँ बीसो दिनसँ

ऊपरे अछि तखन एते अगुरवार ई सब किए कीनि लेलौं? अच्छा ई कहू जे की सभ कीनलौं?"

चन्द्रावती- "चारिटा कोनियाँ, सूप, डगरी, छिट्टा, कूर, हाथी इत्यादि ने कीनि लेलौं।"

मने-मन रविकान्त हिसाब जोड़ि अँटकाइर लेलैन, मुदा अनेको प्रश्न एक संग उठि गेलैन। सोझहामे बेटा-दीपककेँ देखि बाजब उचित बुझलैन। बजला-

"एक तँ कोनियाँक काज सूपेसँ होइ छै तहूमे एकटाकेँ मानलो जा सकैए, ऐ जुगमे माटिक हाथीक कोन काज छै आ आब केतए घैलक काज चलैए जे अनेरे पाइकेँ पानिमे फेक देलिऐ?"

पानिमे फेकब सुनि चन्द्रावती उमैक बजली- "पुरुख-पात्र अहिना पाबैनक वस्तुकेँ दुसै छै!"

पत्नीक बात सुनि बेसी तामस करब उचित नै बुझि रविकान्त मने-मन विचारए लगला जे काजो तेहेन अछि जे छोड़ब बेबकूफी हएत मुदा जँ अहिना मौका पाबि होइत रहल तखन जिनगीक गाड़ी केना ससरत?

लगले दोसर प्रश्न मनकेँ घेर कऽ पकैड़ लेलकैन। घेर कऽ ई पकड़लकैन जे एक परिवार एक पुरुख-नारीक बीच ठाढ़ अछि तैबीच दू रंगक विचार किए चलि रहल अछि। मुदा जे धारा चलि रहल अछि ओहो तँ बरखा पानिक धारा नहि, स्थायी धारक धारा जकाँ अछि! मन ठमैक गेलैन। तीनू गोरे दीपक, चन्द्रावती आ रविकान्त तीनू तीन दिस तकैत, मुदा मुँहक बोल सबहक हराएल। रविकान्तक मन औनाइत जे, जे काज सालतनी छी अदौसँ होइत आएल अछि ओ काज जिनगीक गाड़ीकेँ रोकि देत, ई केहेन भेल?

जिनगी चलबैक काज जिनगीए रोकि देत तखन आगू मुहेँ गाड़ी ससरत केना? लगले आगूमे ठाढ़ दीपकपर नजैर पहुँचते मनमे उठलैन, काल्हिए भरि समय अछि तैबीच दोसर काजमे समय गमाएब उचित नहि। जिनगीक बहुत पैघ काजक परीक्षा छी। काल्हि दिन बेटाक मुहेँ सुनब केते ग्लानिक बात हएत जे कहत पढ़ैक खर्च पिताजी नै जुमा सकला तँए आगू बढ़ैमे बाधा भेल। ओना, जेकर पिता समयसँ पहिने मरि जाइ छथिन, ओ केना पढ़ि पौत। मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि। जिबठ बान्हि पढ़निहार तँ पढ़िये लैत अछि। खाएर जे हौउ, जैठाम एहेन परिस्थिति बनैए तैठामक प्रश्न ई भेल। ऐठाम तँ से नै अछि। अपन मनक

अभिलाषा अछि जे बेटाकेँ स्नातक बना दुनियाँक बीच ठाढ़ करी। सघन बोनमे हराएल जकाँ माइक मुँह देखि दीपक बाजल-

“बाबूजी, आइ जेते खर्चक पाबैन भऽ गेल अछि, ओहेन खर्चक पाबैन पूर्वज केना बनौलैन जे परिवार-लोक तंग होइत रहैए।”

दीपकक प्रश्नक गंभीरता रविकान्तक मनकेँ ओहिना घकेल देलकैन जहिना कियो घारक महारपर सँ बहैत बीच धारमे धकेल दइ छइ। मुदा अपन गुरुतर भार देखि रविकान्त बजला-

“बौआ, तोहर प्रश्न ओहेन छह जेहेन मनुक्ख आ मनुक्खक छापल कागतक चित्र हुअ। अदौसँ रहल जे आजुक श्रमक फल आजुक जिनगीकेँ केते फलित केलक। तँए किछु बँचा कऽ काल्हि लेल राखब अनुचित भेल, एहेनठाम पाबैन-तिहार केना हएत? मुदा...।”

विस्मित होइत पिताकेँ देखि दीपक बाजल-

“मुदा की?”

एक दिस काज आ दोसर दिस आराम कुर्सी, तैबीच जहिना कियो ठकुआ जाइत तहिना रविकान्त ठकुआ गेला। बेटाक जिज्ञासा भरल प्रश्न स्वाति नक्षत्रक अमृत बून जकाँ भऽ गेलैन, जइसँ एक दिस मोती बनैत तँ दोसर दिस बिष सेहो बनैत अछि। ओना, केकरो प्रश्नक उत्तर पाबि जे संतोख होइ छै ओ वएह उत्तर लदलासँ कम होइ छै, तँए एक दिस दीपककेँ बुझा देब रविकान्त जरूरी बुझैथ तँ दोसर दिस जिनगीक एक सीढ़ी टपैक काज देखैथ। दुनूमे सँ कोनो छोड़बैबला नहि। कारण, जँ समयपर पाइक ओरियान नै हएत, फारम नै भराएत तँ परीक्षा केना देत? तहूमे अपना हाथमे पाइ कम अछि कोनो ब्यौंत करए पड़त। अनका हाथक काजक ठेकाने केते। मुदा दीपको तँ परीक्षामे बैसैबला विद्यार्थी छी, अखन जेते ओकरा बरावरीकेँ भरल जेतै, तेते ने परीक्षामे असान हेतइ। ताल-मेल बैसबैत रविकान्त बजला-

“बौआ, किसानी जिनगीमे किसानसँ लऽ कऽ काज केनिहार धरि अगहनमे धान घर अनैए। चाहे खेतक उपजा होइ आकि बोइन आकि आरो-आरो उपए, जेना-जेना अगहनक पछाइत समय आगू बढ़ैए तेना-तेना खर्च होइत जाइ छै, माने घटबी होइ छइ। एक दिस, भदबारिमे जे भदइ-धान आकि मरूआ होइ छै ओकरा पाबैन-तिहारमे अशुद्ध मानल जाइए। दोसर दिस आसीनक पनरह

दिन खएन-पीअनि होइए आ ऐगला पनरह दिन दुर्गापूजासँ कोजगरा धरि होइए। तहिना कोजगरा प्रात जे कातिक चढ़ैए, ओकरा धर्ममास मानि अनेको तीर्थ-व्रत आ पाबैन-तिहार होइए। एहेन स्थितिमे की कएल जाए.? मुदा अखन बेसी कहैक समय नै अछि। केकरो हाथे बच्छा बेच पहिने तोहर काज आगू बढ़ा देबह पछाइत कहियो निचेनसँ आगूक बात कहबह।”

पतिक बात सुनिते चन्द्रावतीकेँ जेना कोजगराक पुनोचान आ दीपककेँ दिवालीक ज्योति जगि गेलैन। ❑

कर्जखौक

✺

आइ भोरे चाह पीला पछाइत करियाकाकाकेँ लालकाकीक संग तेहेन टक्कर भेलैन जे भेला पछाइत दुनूक मन हरदा बाजि निर्णयक सीमापर पहुँच गेलैन, भोरे-भोर एना टक्कर हएब नीक नै!

भेल ई जे करियोकाका आ लालोकाकी दुनू गोरे चाह पीविते रहैथ तखैने तरकारीवाली पहुँचल। दुनू परानी मिलि तरकारी कीनलैन। महगक समय तीनियेँ किलोक दाम अस्सी रुपैआ भऽ गेलैन। पाइ देबाकाल करियाकाका बजला-

“सात तारीककेँ दरमाहा उठैए। आठ तारीककेँ तोरा पाइ भेट जेतह।”

तरकारीवाली चुपे रहल। नगद-उधार गाममे चलिते अछि। वेपारो तँ वेपारे छी नगदो चलैए उधारो चलैए। मुदा पतिक बात लालकाकीकेँ नीक नै लगलैन। नीक नै लगैक कारण भेल जे जे तरकारीवाली मन भरि तरकारी माथपर नेने गाममे भोरेसँ बेचब शुरू करैए आ तेकर समान उधारी लगि जाए तखन ओकर कारोबार केना चलत।

तखन तँ यएह ने जे या तँ ओहो वेपारी वा गिरहतसँ उधार लिअए, वा तेना कऽ दाम लिअए जे सुदिखोर महाजनक सुइद चुकबए। ओना, नफ्फा ओइठाम नै होइ छै जैठाम अछि। जैठाम नै अछि तैठाम दोसरो विचार सम्भव अछि।

लोहैछ कऽ करियाकाकाकेँ लालकाकी कहलखिन- “सभ दिन अहाँ कर्जखौके रहि गेलौं! आबो चलन-पियारा भेलौं, तैयो चालि नै छूटल?”

दुनू परानीक बीच विवाद बढ़ैत देखि तरकारीवाली अपन छिट्टा उठा विदा भऽ गेल। मनमे एलै अनेरे कोन झमेलमे बरदाएल रहब। तहूमे दुनू बेकतीक झमेल छी। आइ नै पाइ देलैन तँ की हेतै, परसुए तँ सात तारीक छी चारिम दिन

दइए देता।

तरकारीवाली चलि गेल, मुदा जहिना करिया-काकाकेँ तहिना लालोकाकीकेँ बघजर लगि गेलैन। तरकारी बीचमे राखल दुनू दिस दुनू परानी एक-दोसरापर नजैरो खिड़बैत आ नजैर नीचो करैत। दुनू अपन-अपन सीमामे घेराएल।

लालकाकीक मनमे उठैत रहैन- अनेरे तेहल्लाक बीच नीच-ऊँच बात बजलौं। जँ कहबे छल तँ परोछमे कहितिऐन अपन परिवारक नीक-अधला काज अपने नै सम्हारब तँ आन केकरा के सम्हारत, सभकेँ तँ परिवारो छइहे आ किछु ने किछु बक-झक होइते अछि।

मुदा लगले मन पाछू दिस घुसैक विचारक दुनियाँ–भव मण्डल–पहुँच गेलैन। पहुँच गेलैन ओइठाम जैठाम अपनो आर्थिक स्थिति देखैथ आ तरकारीवालीक सेहो। जेकरा हजारोसँ कम पूजी छै, भरि दिनक श्रमक मूल्य सेहो ओहीमे ने राखत, जँ दाम चढ़ा कऽ लेत तँ सौदोबला तँ बुझबे करत जे फल्लाँ तरकारीक दर ई छइ। तही हिसाबसँ ओहो दाम लेत। दुनू दिससँ तरकारीवालीक गरदैन फँसल रहैए...।

अपन ओहेन दब स्थिति नै अछि जे खाइ पीबैक वौस उधार ली। किए लेब? जिनगीमे लोक कमाइ-खटाइ किए अछि, किए कियो केकरो कर्जखौक हएत...।

मुदा लगले लालकाकीक मन घुमि गेलैन। घुमलैन ई जे जेकरा हाथमे पाइ नै छै दिनका खेनाइक सवाल छै, तैठाम की कएल जाए! कएल की जाए, यएह ने भेल सामाजिकता; जे सबहक दुख-सुख सभ बुझि सभकेँ सभ संग दैथ। मुदा हमर अपने कोन जोगदान समाजमे रहल? जँ किछु देलिऐ नै तँ लेबोक अधिकार तँ नहियेँ अछि! मन तरंगलैन। तरैंगते पैछला जिनगी दिस बढ़लैन- पैंतीस सालक नोकरीमे दरमाहाक संग उलफियो आमदनी छेलैन। तहूमे किरानीक नोकरी। मुदा कहियो एहेन नै रहल जे दूधवालीक उधार आकि तरकारीवालीक उधार, किराना दोकानक उधार नै रहल! जखन कि दरमहे ओते छेलैन जे मासो भरिक खर्चसँ किछु बेसीए भऽ जाइ छेलैन। मुदा जेकरासँ हम उधार लइ छी, जँ नगदे लेब, आकि अगुरवारे ओकरे लग जमा रखि ली जे मासो भरि तरकारी चलत, तहिना दूधोवालीक भऽ सकैए। तैबीच अपनाकँ कर्जखौक

बना जिनगी चलबैत रहलौं! हथ-उठाइ केकरा के दइ छै, बड़ दइ छै तँ एक कप चाह आ एक खिल्ली पान खुआ दइ छइ। जँ लेबालक अगुरवार पाइ वेपारी हाथ पहुँच जाए तँ ओकरा पूजीमे बढ़ोत्तरी हएत। जइसँ अहाँक अपन काज भेल आ दोसर परिवारकेँ जीबैक आशा भेटलै।

समाजक माने दस टोलक लोके सोझहे नै ने छी, ओ छी जिनगीक संगी आ कारोबारक संगी, विचारोक संगी...।

फेर लालकाकीक मन कड़कड़ेलैन। कड़कड़ेलैन ई जे कहू केहेन भुच्चरपना चालि जिनगी भरि पकड़ने रहि गेला जे सभ दिन अभावेमे रहि गेला। कहियो भाव बुझबे ने केलैन। नचनियाँ सभ ठीके गबै छै-

"दुख ही जन्म लेल, दुख ही गमौल सुख कहियो ने भेल...।"

हँ! समाजमे अखनो एहेन अछि जे केतेकेँ भरि पेट अहारो ने भेटै छै, उचित अहारक तँ चरचे बेसी। मुदा अपना तँ से नै अछि। जिनगीक पैंतीस बर्ख धरि पति सरकारी सेवामे रहला। तैपर सँ उलफियो कमाइ भेलैन। जँ से नै भेलैन तँ तीनू बेटीक बिआह, ओतेत धुम-धामसँ केना भेल? दुनू बेटाकेँ पढ़ैमे जेते खर्च भेल, ओते गाममे केते गोरे कऽ पबै छैथ? तैपर सँ नीक मकान, पानिक नीक बेवस्था, सभ किछु केना भेल? जेते दरमाहामे कटौती भेलैन तइसँ बेसी बैंकसँ सुइद अबिते अछि...।

मन घुमलैन, जइ काजे आइ हम हिनका लोहैछ कऽ कहलयैन ओ चालि तँ शुरूहोमे छोड़ौल जा सकै छल, मुदा अपनो नीक लागल।

बिनु पाइयोक कोनो चीजक अभाव कहियो ने भेल। ओह! गलती अपनो भेल। पति-पत्नीक बीचक जे सम्बन्ध अछि तइमे कमी जरूर भेल। मुदा जे दिन पाछू ससैर गेल, तेकरा केना मोड़ि सकब? जे आगू अछि ओकरा तँ मोड़ल जा सकैए। मुदा कोनो धार जे धारा रूममे प्रवाहित भऽ रहल अछि, ओइ धाराकेँ रोकैकाल तँ संघर्ष हेबे करत। लक्कड़-झक्कड़ हुअए आकि रस्सा-कस्सी, किछु-ने-किछु तँ हेबे करत। मुदा एहनो तँ नीक नहियेँ हएत जे धारक मुहेँ भोथिया जाए आकि धारे मरना भऽ जाए।

फेर मन घुमलैन, जे भेल से भेल, दिनक दोख छल, भेल। मुदा दिनोक दोख तँ एकरा नहियेँ कहल जाएत, भोरे-भोर भेल, तँए भोरुका दोख मानल जा सकैए। भोरुका माने बाल-बोधक, बाल-बोधक गलती गलती थोड़े होइ छै, तहूमे

बारह बर्खक निच्चाँक...।

लालकाकीक मन पुलकलैन। पुलैकते पति दिस तकली। मुँह बीजकेने करियाकाका अपने छगुन्तामे पड़ल रहैथ।

करियाकक्काक छगुन्ता ई रहैन, जे जहियासँ मोन अछि तहियोसँ कहिया नै केकरोसँ उधार लेलौं। दरमाहा भेटै छल सबहक चुकती करै छेलौं, कियो मुँहपर कहि दिअए तँ जे एको पाइ बेइमानी केलिऐ...। ऑफिसेमे जेकरासँ पाइ लेलिऐ ओकर काज केकरो बाँकी रखलिऐ...।

जे काज नै होइबला रहै छेलै, तेकरासँ थोड़े एकोटा पाइ लेलिऐ। ओना, परिवारे छी, शासनसँ सत्ता धरि तँ चलिते अछि। एक दिस परिवारक अनिवार्य काज, जइसँ परिवार आगू मुहेँ ससरत, दोसर दिस परिवारक श्रम-शक्तिक संग वौसक खाँहिस।

लगले लालकाकीक मन आगू घुसकलैन। आगू घुसैकते अपन सेवा निवृत्ति दिस बढ़लैन। पाइक आमदनी तँ ठीके-ठाक अछि, मुदा हाथक काज छीना गेल, भरिसक अकाजक तँ ने पत्नी बुझि रहली अछि? भऽ सकैए, अपन काज ने हाथसँ ससैर गेल, मुदा हुनकर काज तँ ठामक-ठामे छैन, भरिसक तँए ने ओ शासन करए चाहै छैथ। ईहो तँ भऽ सकैए जे ओ नोकरीक अवस्थामे अपनाकेँ अक्षम बुझि पौने हेती तँए नै रोकलैन।

मुदा आब तँ ओ सोल्हो-अना घरक कर्ता-धर्ता भऽ गेली। जँ कहीं हमर आदत हुनका नीक नै लगैत होइन, तखन जँ कहली तँ उचिते कहली। करियाकाकीक मन ठमकलैन! ठमैकते नजैर अपन चालिपर पड़लैन, जखन महिनाक दरमाहा उठा दोकानदारसँ, दूधवाली, तरकारीवाली तककेँ चुकती कइये दइ छेलिऐ, तखन जँ दरमाहाकेँ उनटा कऽ चलितौं तँ ओही पाइसँ ओकरो बाल-बच्चाकेँ चहरा भेटतै, से चुकती तँ भेबे कएल। मुदा उपाय?

उपाय यएह ने जे तरकारीवालीक सोझहामे पत्नी उझट बात कहि देलैन, मुदा तरकारियोवाली कियो आन तँ नहियेँ अछि, जहिना केतौ पत्नी गुरु बनती केतौ शिष्या, तहिना ने हमहूँ जखन ओ गुरु बनती तखन शिष्य आ जखन शिष्या बनती तखन गुरु बनैत हँसैत-खेलैत चलैत रहब...।

चलू, मामला फड़िया गेल। घुड़छीक भत्ता खुजि गेल। मुस्की दैत करियाकाका लालकाकीकेँ कहलखिन-

“कान पकैड़ मानियोँ लेलौं आ कानेपर कन्हेट कऽ रखनौं रहब जे ओहन काज सदिखन करब जे केकरो कर्ज अपना ऊपर नै आबए?”

पतिक सुमैत सुनि लालकाकी बजली-

“अहाँक चालि शुरूहेसँ रहल जे जेबीमे पाइ रहितो अनके खाइक ताकमे रहै छी। मुदा मरैयो बेर जँ बुझलौं तँ ऐगला जिनगीक बात बुझलौं तँए खुशी अछि।” ❑

एकाधिकारी जाति

✺

बाढ़ि एला पछाइत सुन्दरपुर गामक सुरखी एते बदसुरत भऽ गेल जे भुतलग्गू लोक जकाँ देहमे खून बुझिये ने पेब रहल छल...। मन पाछू दिस उनैट तकलक तँ अदौसँ अबैत गाम-घर आ ओइमे रहनिहार लोककेँ एहेन-एहेन बिपैत केता बेर आएल हएत। केतबो मनुखक आकि आने-आन जीव-जन्तुक महाकाल आएल तैयो तँ आइयो अछिए आ आगुओ रहबे करत...।

मन कहलक जँ बाढ़िमे डुमि कऽ मरि गेल रहितौं तँ एते तँ मरैकाल जरूरे बुझि नेने रहितौं जे ई दुनियाँ ठकहरबा अछि, जिनगी भरि खटा लेलक आ मरै बेरमे, सनेसो रूपमे किछु ने देलक..! मुदा से तँ भेल नहि, भलेँ अधमरू किए ने भेल होइ मुदा रहलौं तँ जीविते। ई जीवितपन केना जिन्दा रहत तइले तँ किछु करैये पड़त।

अखन तक जे मन उचैट कऽ दुनियाँसँ कात भेल संयासी बनैक विचार आबि रहल छल तेकरा त्यागि मनमे रोपि लेलौं जे नइ! दुनियाँ तँ जहिना सभ दिन जीव-जन्तुसँ भरल रहल अछि तहिना ने आगुओ रहत, तहीमे तँ सबहक ने अपन-अपन अधिकारो छै आ कर्तव्यो तँ छइहे। हम कि कोनो नोकरीदार लोक छी जे आदेशानुसार काज करब, अपन जीवनक संग परिवारो आ समाजोक जीवन अछिए...।

मनमे जेना जीबैक जीब जागल। लगले दरबज्जापर सँ उठि आँगन गेलौं आ पत्नीकेँ कहलयैन- "बजारक कोन-कोन काज अछि, से एकटा पुरजापर लिखा दिअ।"

ओना, आइ धरि एना कहियो ने पत्नीकेँ पुछने छेलिऐन, तँए कनी अचरजमे पत्नी पड़िये गेल छेली। मुदा लगले कि मन फुरलैन कि नहि, आकि

फुरलैन जे बाढ़िक दुआरे एना कहलैन, से वएह जनती। ओना, आजुक जे नोकरिहाराक बेवहारमे बदलाव आएल अछि जे जँ बाजार जेबाकाल पत्नीकेँ पुछबैन जे बाजारक की खगता अछि, तँ ओ सोझे मुहेँ बजती जे ‘सभ कथुक खगता तँ अछिए..!’ भलेँ घरमे ओहन-ओहन वस्तु किए ने नष्ट भेल जाइत हुअए। मुदा ओहनोकेँ खगताक सूचीमे जोड़बे करती। भलेँ घरमे हजार जोड़ साड़ी आ हजार जोड़ जूत्ता-चप्पल किए ने हुअए...। ओना, नोकरिहारोक जीवनक बीच केतेको रंगक खाढ़ी सभ अछिए।

सुशीलाक मनमे से सभ किछु ने उठलैन। बीस दिनक बाढ़ि सुशीलाक करेजकेँ डोला देने छैन। जइसँ दिन भोगबकेँ बिसैर दिन काटब बुझए लगली अछि...। सुहरदे मुहेँ सुशीला बजली- “अखन जेहेन बेर पड़ल अछि तेहने ने बुधियो आ बेवहारो बना कऽ चलब नीक हएत, नहि तँ पौल जाएब किने।”

अपना जनैत पत्नी अपन पल्ला झाड़ि लेली, मुदा अपने जखन खेबा-पीबाक वौस दिस देखी तँ अपन इज्जत मेटपन दिस बढ़ैत देखि पड़ए। माने ई जे बाजारमे जइ दोकानपर जाएब आ डेढ़-साए-दू-साएमे अँचार आ चटनी कीनै छेलौं तैठाम जँ बनियाँ कहत जे ओइसँ नीक ब्राण्ड विदेशी कम्पनी आएल अछि, से तँ अहीं सभ ने पसिन करबै। तखन की उत्तर देबइ..?

मुदा लगले मनमे आबि गेल जे सभदिना जे खाइ-पीबैक खर्चक वस्तु अछि तेतबे ने एहेन समयमे जरूरी भेल आकि एक बिपैत भगवान देलैन आ ओहूसँ नमहर बिपैत अपने आराइध ली..!

चुपचाप आँगनसँ निकैल दरबज्जापर आबि कहात् जिनगीकेँ कटैत हिसाब जोड़ि मनमे बैसेलौं जे वस्तुओकेँ कटौती करब आ कीमतोमे कटौती करबैक अछि, तखने एहेन समयसँ अपनाकेँ बँचा सकै छी...।

करीब आठ बजे भिनसुरका समय, साइकिलमे झोड़ा टाँगि बाजार विदा भेलौं।

सुन्दरपुर आ सघनपुरा अगले-बगलक गाम छी। सुन्दरपुरसँ आगू सघनपुरा गाम अछि। अपन गामक सीमापर पहुँचबे केलौं कि रामखेलावनकेँ पाछूसँ खूब रेसमे साइकिलसँ अबैत देखलौं।

सड़कक कातेमे आमक गाछ अछि, ओही गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ रामखेलावनक रस्ता देखए लगलौं। दसे लग्गा पाछू रामखेलावन छल,

साइकिलसँ अबैमे केते देरिये लगैत, आएल। मुँहक दुनू ठोर कारी भेल, जेना फुफरी उड़ैत होइ तहिना रामखेलावनक चेहराक रूप देखलिऐ..!

मनमे भेल जे जखन दुनू गोरे साइकिलसँ छी तखन किए ने रस्तो काटब आ गपो-सप्प करैत चली। मुदा लगले फेर भेल जे साइकिलक जरकीनमे केते बात सुनबो करब आ केते बात नहियेँ सुनब।

साइकिलसँ उतैर गाछक निच्चाँमे बैसलौं। तमाकुलक बहाना बनबैत बजलौं-

“रामखेलावन, जखन बजार विदा भइये गेल छी तखन पहुँचबे करब किने। गामपर काजे कोन अछि जे औगताइये रहत।”

अपन मनक बेथाक कथा कहैले कि दिनक दुरदिनपन कहैले रामखेलावन मानि गेल आकि की कहैले मानलक से तँ ओ जानए, मुदा हमर बात सुनिते मानि जरूर गेल। लगमे आबिये गेल छल, ओहो साइकिलसँ उतैर आगूमे साइकिल लगा लगमे बैसल।

रामखेलावनकेँ लगमे बैसते, तैबीच अपनो तमाकुल-चुन निकालि तरहत्थीपर औंठासँ दू-तीन मर्दन दऽ देने छेलिऐ। जइसँ थोड़-थाड़ निशाँएल हवो नाकमे लगिये गेल छल तँए मन कनी-मनी फुहराम हुअ लगल छल। ओना, मनमे विचार घुरियाइये रहल छल जे पहिने आन दोसर गप नहि बाजि रामखेलावनकेँ पुछिऐ जे ‘रामखेलावन, मुँहक सुरखी किए एना बेदरंग भेल छह!’ मुदा मनमे ईहो हुअए जे तेज गतिसँ साइकिल चला कऽ आएल अछि, जँ कहीं कहि देलक जे हमर मुँहक सुरखी बेदरंग देखै छी आ अपन ऐनामे नइ देखलौं अछि..! तखन तँ अनेरे कहा-कही हुअ लगत। से नहि तँ जहिना भूमिपर घर बनौनिहार पहिने भूमिक भूमिका बन्हैए आ पछाइत घर ठाढ़ करैए, तहिना अपनो अपने लगसँ भूमिबन्धन करैत बजलौं-

“रामखेलावन! बुझह तँ अन्तिमे भेँट छी, आब नइ जीब।”

ओना, अपना जनैत ठिकिया कऽ, ठिकियाकऽ माने भेल लक्ष्य बनाकऽ, निशान साधिकऽ, नइ बाजल छेलौं, बाजल अही उद्देश्यसँ छेलौं जे जखने अपन दुखक बात आगू भऽ कऽ बाजब तँ पाछूसँ रामखेलावनो अपन जिनगीक दशाक दिशाक दशा सेहो बाजत जइसँ जे बुझए चाहै छी, तेकर पता चलि जाएत। मुदा ई नहि बुझि पेब सकल छेलौं जे अखन रामखेलावन चारू पायासँ हारल-मारल

अधमरू भेल, मुँहचुरु अछि, जइसँ मनमे दुनियाँक आन कोनो राग-विराग जीवित नहि रहि गेल हेतै, मात्र अपन अन्तिम क्षणक क्षिनाएल शेष जिनगीक सीमापर पहुँच गेल अछि तँए मनमे विचारक मात्र एतबे जगह शेष छइ।

तमाकुल बनब सेहो तैयारे जकाँ होइपर छल मुदा विचार कोनो उठल नहि, तँए मनमे कनी खुदबुदी छेलाए-हे। मिचरा-मिचरा कऽ तरहत्थीपर तमाकुलमे रग्गर दइये रहल छेलौं जे कहुना रामखेलावनक मुहसँ अपन जिनगीक क्रिया सोझहामे आबए..!

रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब! गामे-समाजक मुँह देखि जीब रहल छी, नइ तँ अपन साँस तँ कनी दिन टिकबो करैत जे घरवालीक साँस कहिया ने टुटि गेल रहितैन।”

अपना जनैत रामखेलावन अपन सभ बात बाजि गेल मुदा घाट परहक घटल कोनो विचार स्पष्ट नहियेँ भेल। ओना, मनमे एते ठना गेबे कएल जे हाट-बाजार कि केतौ पड़ा जाएत, अखन नइ जाएब, बेरेमे जाएब। मुदा एक जिनगीक वृतान्त तँ एक संसारक निर्माण करैए..! ओकरा ने पहिने जानब अछि। बजलौं-

“बौआ, की कहबह! ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा तँ घर-घरक एक्के लेखा..! जहिना तूँ बजलह जे समाजेक मुँह देखि जीवित छी तहिना ने तोरे सबहक मुँह देखि हमहूँ जीवित छी।”

रामखेलावनक जन्म ओइ जातिमे भेल छल जे बरेबकेँ बाड़ी-फुलवारी बना माली जकाँ दिन-राति ओइमे लगल रहैए। संस्कारसँ भरल-पुरल लड़का रामखेलावन मैट्रिक पास अछि। अपन जाइतिक एकाधिकार पूजी–जाइतिक हिसाबसँ विभाजित उद्यम–केँ रामखेलावन परेख चुकल अछि। बाजारक जीवित रूखि देखि मने-मन लक्ष्य बेध चुकल छल जे अपन बपौतीक इतिहासकेँ पुनर्जीवित करब। मुदा वाह रे समाज, मैट्रिक पास रामखेलावनक क्रिया, जिनगीक कर्मकेँ देखि यत्र-कुत्र बजैत- ‘पढ़े फारसी बेचे तेल, देखू भाइ कर्मक खेल।’

अपन जाइतिक समाजमे पहिल मैट्रिक पास रामखेलावनकेँ गाम-समाजक धिकारैत बोली बरदास नइ भेलइ। गामसँ भगैक विचार मनमे जगि गेलइ। बुझल छेलैहिये जे गामसँ बाहर जँ कियो अधलो-सँ-अधला वृत्ति अपना पाइ कमाइ छैथ तँ ओ विदेशीए कमाइ ने भेल। एहेन मानसिकता समाजक बनियेँ

गेल अछि। घरसँ भगैक दू रस्ता अछि, पहिल परिवारक विचारसँ आ दोसर परिवारक बिनु विचारे।

जखन परिवारक विचार रामखेलावनक मनमे उठलै तखन माता-पिताक विचारपर मन गेलइ। मन जाइते विचार उपकलै जे बाबू तँ नहियोँ किछु बजता-माने 'हँ-हूँ'; किए तँ गाममे हमरा सन-सन पढ़ल-लिखल सभकेँ बाहरक कमाइक आशा देखबे करै छैथ, मुदा माए तँ सुनिते पेटकान लाधिये देत जे जखन सुति-उठि बेटाक मुस्कुराइत मुँह नइ देखब तखन दुनियाँमे हमरा-ले रहिये कि गेल जइ देखैले अनेरे धरतीकेँ अजवाड़ने रहब।

किछु करैत रामखेलावनकेँ किछु बनियेँ ने पेब रहल छल। बनबो केना करैत, एक दिस नव मनुख–माने बिनु पढ़ल-लिखलसँ पढ़ल-लिखल मनुख–बनि समाजमे रामखेलावन ठाढ़ भेल अछि तँ दोसर दिस कर्महीन मनुख बनैक संभावना सेहो बनियेँ रहल छेलइ..! जँ बंशगत पेशासँ जुड़ि गाममे रहै छी तँ हँसियापर रहए पड़त- माने हँसीक पात्र बनि जीबए पड़त। जँ बाहर जाइ छी तँ परिवारो आ समाजोक ओ शक्ति निकैल रहल अछि जइसँ परिवार-समाज शक्तिशाली बनत।

एकाएक रामखेलावनक मनमे तेसर विचार जागि उठलै। ओ उठलै जे ने माइये-बाबू केतौ पड़ाएल जाइ छैथ आ ने गामे-समाज, किए ने किछु दिन निकैल दुनियाँकेँ देखिऐ..!

रामखेलावनक मन जेना सक्कत बनए लगलै जे गामसँ चलि जाएब। ऐठाम गामसँ जाइक दोसरो माने अछि जे समाज जइ स्तरक बनि गेल अछि ओइ स्तरसँ आगू उठि समाजक जीवनकेँ परिष्कृत रूपमे आगू करैक विचार।

राता-राती घरसँ भगैक विचार रामखेलावन करए लगल। जँ कियो बुझि जेता तँ माए-बाबूकेँ कहबे करथिन, जइसँ बिच्चेमे बाधा उपस्थित भऽ जाएत। मुदा घरसँ कोन मुहेँ निकलब ईहो तँ प्रश्न अछिए। चारू दिस चारि रंगक दुनियाँ अछि। जखन केतौ दिन होइ छै तखन केतौ रातियो तँ होइते छइ..!

कोनो गर रामखेलावनक मनमे बनियेँ ने रहल छल। जहिना आफत-असमानी एने माए-बाप लोककेँ मोन पड़ै छै आ भगवानोक नाम बिसैर जाइए तहिना रामखेलावनोकेँ भेल। भेल ई जे अपना सबहक बाप-पुरुखा कमाइले ढाका-बंगाल तक जाइ छला। जे पूभर अछि। केते गोरे कहबो करै छैथ जे हमर

बेटा 'पूभर' कमाइले गेल अछि। पूभरक माने भेल- नेपालक पुबरिया भाग, बंगालक ढाका, जे बंगलादेशक राजधानी छी, तैसंग कामरूप कामाख्या तक जाइ छला।

पुबरिया पार मोन पड़िते रामखेलावनक मनमे सिलीगोड़ीक अस्पताल आबि गेलइ। ओतए तक तँ देखले अछि, मौसीक संग अस्पताल गेल रही। सिलीगोड़ीक ओहो चौमैत तँ देखले अछि जैठामसँ बस सिक्किम, भूटान, दार्जिलिंग, आसाम, कलकत्ता इत्यादि सभठामक चलैए...। चारि बजे भोरमे निर्मलीक गाड़ी अछि। तीन बजे पहिल पहरक तेसर घड़ीमे, गाम छोड़ि निकैल जाएब। आठ बजे तक सुतनिहार छीहे, खोजो हएत तँ नअ बजेक बादे ने। ताबे तँ हम अपन सीमा कि जे देशोक सीमा टपि नेपालक सीमामे पहुँच राजबिराज-ककरभिट्टाक बसमे बैसल रहब।

सिलीगोड़ी पहुँचलापर रामखेलावन खेलक। एते सस्ता, अपना घर लग, जे देहातसँ सटल बाजार मधुबनी अछि, तेतो नहि अछि जेते सिलीगोड़ीमे रामखेलावनकेँ बुझि पड़लै। खाइतेकाल दोकानदारसँ रामखेलावन नोकरी-चाकरीक विषयमे बाजल- "भाय साहैब! नोकरी करए एलौं हेन से केतौ ठौर...।"

सड़कपर रहनिहार दोकानदारक मनमे छेलैहिये जे जँ गिरहस्तीकाजक अनुभव हेतै तँ किसान ऐठाम दिसक रस्ता धड़ा देबइ..!

दोकानदार बाजल- "बौआ, कोन-कोन काज करैक लूरि छह?"

अखन तक गाम-घरमे एहेन परिवेश बनले अछि जे जाधैर बच्चा पढ़ैए ताधैर माता-पिता अपन घर-गिरहस्तीसँ अलग रखैक चेष्टा करै छैथ। मुदा ओहीमे परिवारक हिसाबसँ विचार सेहो चलैए। पानक खेतीपर आश्रित परिवार जे बिनु केनहु अनेक रंगक काज देखियो कऽ जहिना नजैरपर चढ़ि जाइए तहिना नजैरपर चढ़बैत रामखेलावन बाजल-

"पानक खेतीक सभ लूरि अछि।"

ओना, किनुआ सर्टिफिकेटबला जकाँ रामखेलावन नहियेँ छल। एते मनमे आबिये गेल छेलै जे जहिना बोलियो-वानि आ पानियोँ कनी-मनी हटलपर बदैल जाइए तहिना काजो करैक ढंग बदैलते छइ। जँ केतौ काज करैमे उनटा-फेर हएत तँ कहबै जे हमरा सबहक गाममे अहिना होइ छइ। ऐठाम तँ अहीठामक बेवहार ने चलत तँए अहाँक लूरि सीख लेब अछि।

दोकानदार जलपाइगोड़ीक रस्ता रामखेलावनकेँ धड़ा देलक।

जलपाइगोड़ीमे पानक खेती देखि रामखेलावनक मनमे जगि गेल जे, भने घरसँ पड़ेलौं। ऐठाम कमा कऽ अपन कमाएल पूजियो बना लेब आ विकसित लूरि सेहो सीख लेब।

दू सालक लगनक मन रामखेलावनकेँ एक नव इंसान रूपमे देखलक। मने-मन जिनगीकेँ अजमा, जिनगीकेँ अजमबैक माने भेल- काजोक हिसाबसँ आ लागत-खरचोक हिसाबसँ...। रामखेलावन गामेमे जीविकोपार्जनक रस्ता देखए लगल।

दू सालक पछाइत रामखेलावन गाम आबि एक बीघा पानक खेती नव तकनीकसँ केलक। पहिल साल बीत चुकल छेलै जइसँ किछु-किछु आमदनी सेहो भइये गेलइ। दोसर साल सम्पन्न खेती, सम्पन्न खेतीक माने भेल पानक पातक नीक फड़ी देखि रामखेलावनक मन मानि चुकल छल जे अनेरे लोक दुनियाँ जा-जा वौआइ-ढहनाइए। जँ नीक लगन, नीक लगनक माने भेल समयकेँ परेख बिसवासक संग कोनो काजकेँ समरपित ढंगसँ करैमे डेग बढ़ा हाथ लगाएब। मुदा भेल अपन लगनक मुहूर्त। प्रकृति प्रदत्तक प्रभाव अपन मुहूर्तसँ प्रवल अछि।

बरेबक सभ उपाय केलाक पछातियो रामखेलावनक सभ किछु नष्ट भऽ गेल। जैठाम जिनगीक कर्मशील जीवन प्रकृति प्रकोपसँ ढंस भऽ जाइ छै तैठामक जिनगी, अपन बनल-बनाएल सभ किछु नष्ट भेल देखैए।

रामखेलावन बाजल- “भाय साहैब, एक तँ ओहिना मनुखक जिनगीक नमरक तरमे पड़ल छी, तैपर जेतबोपर जिनगीकेँ अनने छेलौं सेहो एक हिसाबे मेटा गेल।”

रामखेलावनकेँ दुनियाँक (बाहरक) हवा किछु लगिये गेल छल तँए बजै-भुकैक लूरि थोड़-थाड़ भइये गेल छेलइ। रामखेलावनक बात अधा-छिधा बुझबो केलौं आ अधा-छिधा नहियोँ बुझलौं। ओना, अपन मनक भरास निकैलते रामखेलावनक मन रनैक कऽ चनैकिये गेल छल जइसँ मुँहक रूखिमे सेहो कलितपनसँ हरितपन-ललितपन आबिये रहल छल। बजलौं- “से की रामखेलावन?”

रामखेलावनक मनमे जेना अपन अरजित जीवन उतैड़ गेल होइ तहिना

बाजल- “भाय साहैब, बजारक काजे जाइ छेलौं, आब अखन नइ जाएब। बेरुपहर बुझल जेतइ।”

रामखेलावनक विचारमे अपनो मनक सोंगर लगबैत बजलौं-

“धीरे-धीरे रौदो बढ़बे करत। तहूमे बाढ़ि परहक रौद छी, बेसी तीख हेबे करत। भने तोंहू बेरुके विचार केलह, हमहूँ सएह करब।”

विचारक सह पेबिते रामखेलावन अपन दुखक मोटरी खोलि बाजल-

“भाय साहैब, गामसँ जखन जलपाइगोड़ी पहुँच अपन बदलल जिनगीकेँ निरमाएब शुरू केलौं, तैठामसँ कहै छी।”

बजलौं-

“सुनह! जखन पत्नीकेँ कहि बजार विदा भेल छी तखन जँ दुपहरियामे पहुँचब तँ दोखी बनब। मुदा कनी-मनी जे बिलम्मो हएत तँ कहबैन जे पाइयक जोगारमे समय लगि गेल, बेरुपहर जाएब।”

हमर बात रामखेलावन जेना सोल्होअना बुझि गेल हुअए तहिना बाजल-

“भाय साहैब, तेकर चिन्ता माने समैयक चिन्ता मिसियो भरि नहि करू। एकदम मुड़कट्टीमे कहि दइ छी।”

बजलौं-

“भूमिका बान्हब छोड़ि मूल बात खाली बाजह।”

रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब, नेपालक रस्तासँ जखन जलपाइगोड़ी पहुँचलौं, तैबीचमे नेपाल गेबो केलौं आ निकलबो केलौं, तखन जहिना अपन बाप-दादाकेँ पानक चास छेलैन तहिना पानक चासमे काज करब शुरू केलौं।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“रामखेलावन, लोक तँ काजोकेँ छोट-पैघ बुझैए..!”

रामखेलावनक मन जेना फरिच भऽ गेल होइ तहिना मुस्कियाइत बाजल-

“समाजमे भगवान बुझैबला डॉक्टर तँ लोकक लघी-बिरतीक संग पीजो-पाज आ परो-पैखानाकेँ हाथसँ उठा नाकसँ सूँघि जीबैक जोगार करै छैथ, हम-

अहाँ कोन खेतक सीम-भँट्टा छी।”

हँसी लगि गेल। बजलौं-

“बिसरजन दिस बढ़ह..!”

रामखेलावन बाजल-

“ठीक्कापर बरेबक काज शुरू केलौं। दू सालक कमाइसँ बीघा भरि गहींरगर खेतकेँ भरि पानक खेती केलौं। अपनो सालो भरिक काज सृजित भऽ गेल आ ओते आमदो होइत जइसँ परिवार चलैत। मुदा बाढ़िमे सभटा दहा गेल..!”❑

पसेनाक मोल

✳

कातिक मास। गोबरधन पूजा-दिनक अढ़ाइ बजेक उम्मस आ टहटहौआ कतिका रौद। ओना, अपने निकलल रही हुरियाहाक टोहमे, हुरियाहा भेल सुग्गरकेँ गोला-लाठी भरि गाए-महींसिक सिंगसँ रगड़ाएब। कनी फरिक्केसँ एकटा घासवालीकेँ दच्छिन-सँ-उत्तर मुहेँ घासक बोझ माथपर नेने चलि अबैत देखलिऐ। एक तँ कनी फरिक्को रही आ दोसर बोझक लटकल घास सभसँ मुँह-कान झँपाएल रहने चीन्हि नहि पेलौं। तैबीच मनमे उठि गेल गामक पाँच बर्ख पूर्व होइबला हुरियाहा। भाय! मिथिलांचल छी, रंग-रंगक पावनिक संग हुरियाहा सेहो होइते अछि। मुदा आन गाम जकाँ मनुखक हुरियाहा नहि, गाए-महींसिक संग सुगरक हुरियाहा हमरा गाममे होइए।

पाँच बर्ख पूर्व धरि, केते पूर्वसँ तेकर तँ ठेकान नहियेँ अछि मुदा अन्तिम छोर तँ मोन अछिए। जहिया नीलकण्ठ काका मुइलाह तहियासँ गामक हुरियाहा बन्न भऽ गेल।

नीलकण्ठ काका मोन पड़िते जेना अपनो मनक राग-विराग मेटा गेल। जखने मनक राग-विराग कमल आकि बजा गेल- “अहिना उदय-प्रलय सभ दिनसँ होइतो आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत।”

तैबीच अल्लापुरवाली भौजी घासक बोझ रखि डेढ़ियापर ठाढ़ भेली। अपनो लगमे पहुँचते अल्लापुरवाली भौजीक देहक पसेना आ पसेनाक मोल आगूमे नाचि उठल। ओना, मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे अल्लोपुरवाली भौजी किछु बाजए चाहि रहली अछि। मुदा बाजैथ किछु ने।

मनमे भेल जे देहक थकान मनोमे थकान अनैए, आकि अगुआ कऽ किछु नहि बाजए चाहै छेली से भौजीए जानैथ, मुदा हुनकर मुँहक रूखि एहेन जरूर

बनि गेलैन जइसँ स्पष्ट भऽ गेल जे किछु गप-सप्प करए चाहि रहली अछि। बजलौं-

"भगवान घरवाली देलखिन तँ सिंहेसर भायकेँ! एकटा हम छी जे सभसँ अभागल मनुख कपारमे साटि देलैन।"

अपन प्रशंसा, तहूमे मुँहपर, सुनैमे जहिना सभकेँ नीक लगै छै तहिना अल्लापुरवाली भौजीकेँ लगलैन। मुदा अप्पन खुशीकेँ मनमे दाबि बजली-

"अहाँ-घरवालीकेँ की चोरा छुबि देने छैन?"

अल्लापुरवाली भौजीक बात सुनि मनमे भेल जे एतेक दूरसँ–माने डेढ़ किलोमीटरसँ–घासक एहेन भारी बोझ माथपर उठा कऽ अनला पछातियो, तहूमे एहेन टहटहौआ रौदमे भौजी मिसियो भरि भारीपनक थकान नहि बुझि रहली अछि। यएह छी मेहनतकेँ अङ्गेजब.! जखन लोक मेहनतकेँ, अभ्याससँ अङ्गेज लइए तखन अपन जीवनक भार स्वत: फुलकुमारि जकाँ उठा चलैए। ओना, एहेन परिस्थिति इलाका-इलाका आ गाम-गामक जाति-विशेष परिवार सभमे अलग-अलग रीतुए अछिए, मुदा किछु एहनो तँ अछि जे सामुहिक रूपमे अछि...। बजलौं-

"चोरा की छुबने रहत भौजी, हमरा घरवालीक नैहरे भोथिया गेल छैन।"

ओना, हमर बात अल्लापुरवाली भौजी नीक जकाँ नहि बुझि पेली। नीक जकाँ तखन बुझितैथ जखन अपन इलाका आ आन इलाकाक सामाजिक जीवनक क्रिया-कलापक बोध रहितैन, से तँ छेलैन नहि। रहबो केना करितैन, एक तँ किताबी ज्ञान–माने जेकरा पढ़ब-लिखब बुझै छी–नहि छेलैन, दोसर भौगौलिक बनाबटक चलैत इलाका-इलाकाक बनाबट सेहो विचित्र अछिए आ तेसर जेहेन परिवारक अल्लापुरवाली भौजी छैथ ओ आर्थिको आ सामाजिको स्तरपर पछुआएल अछिए...। अल्लापुरवाली भौजी बजली-

"गामो कोनो भोथियाह होइ छै! अहाँ अपने भोथिया गेल हएब!!"

गर भेटल। गर भेटैक कारण भेल जे भौजी हमर सासुरक इलाकाकेँ नहि जनै छेली। बजलौं-

"भौजी, सिंहेसर भाइक घरवाली अहाँ अल्लापुर परगनाक छी, तँए केहेन चाकर-चौरस हाड़-काठ अहाँक अछि, हमर तँ बुझले अछि जे बछोर परगनाक

छी, सभ दिन बछौड़िये रहत किने।"

गपक क्रमक भाँज नहि बुझने अल्लापुरवाली भौजी अकबका गेली, मुदा जखन गप-सप्पक पाशापर दू गोरे बैसल रहब तखन गोटी भलेँ उफाँटि किए ने चलए मुदा पाशापर कियो लगले हारि मानए थोड़े चाहैए। जखन कियो ने चाहैए तखन अल्लेपुरवाली भौजी किए हारि मानती। अपन विचारकेँ ऊपर चढ़बैत अल्लापुरवाली भौजी बजली-

"कोन कुत्ता घिसियेने छेलौं जे हमरे जकाँ एहेन टहटहौआ रौदमे वौआइ छी?"

ओना, भौजी अपने विचारे हारि रहल छेली किएक तँ जहिना अपने भरि डाँरक घासक बोझ माथपर दलिहारा चौरसँ अनने छेली, माने कठिन परिश्रम केने छेली, तेकर जोड़ा लगा हमरो कहलैन, मुदा अपनो तँ किछु इमान अछि। बजलौं-

"भौजी, जे कुकुर घिसियाएब अहाँ कहलौं से कुकुर तँ नइ घिसिएलौं हेन, मुदा मनक अपन कुत्ता जरूर घिसिया रहल छी।"

हमर बात सुनि भौजी पछड़ली जरूर मुदा पाछू नइ हटि बजली- "एहेन कुत्ता की अहीं पोसनिहार छी?"

भौजीक बात सुनि मनमे ने मिसियो भरि जलन भेल आ ने मिसियो भरि आनियेँ-अवगराइन लागल, मुदा एकटा सिनेह मनमे जरूर भैव गेल। बजलौं-

"भौजी, अहूँ कि कोनो नव-नौतारि छी जे लगले बिसैर जाएब, आइ हुरियाहा पाबैन छी। पाँच बरख पूर्व धरि अपनो गाममे होइ छल। अढ़ाइ-तीन बजेसँ शुरू भऽ जाइ छेलै, आ जखन सुग्गर मरि जाइ छेलै तेकरा बाद धिया-पुता सभ कुश्ती लड़ै छल।"

विचारकेँ सूहकारि अल्लापुरवाली भौजी बजली- "बौआ, कहबियो छै जे 'जे पुत हरवाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल', हम तँ सएह भेलौं। गाममे नीलकण्ठ काका छला जे साले-साल गामक अगुआ-बहान बनि हुरियाहा पाबैन करै छला।"

ओना, अल्लापुरवाली भौजीक विचारमे जेना रंग-रंगक अनेको विचार गाँथल छेलैन तहिना बुझि पड़ल, मुदा दुइये गोरेक बीच गप-सप्पक क्रम रहने

फाँक जगहो तँ अछिए। बजलौं- “भौजी, नीक भेल जे नीककण्ठ काका मरि गेला। भने हुरियोहो चलि गेल आ जितिया दिनक ओटगन पाबैनो, ओटगन पाबैन-दिन लोक भोरमे चूरा-दही खाइ छल आ भरि कातिक ढों-ढों करैत रहै छल। आसीन मासक दही केहेन होइए से भादवेसँ चेतौल अछि- ‘भादवक दही सँ हटले रही.!”

ओना, नीलकण्ठ कक्काक मृत्यु सुनि अल्लापुरवाली भौजी मने-मन चुचकारी दिअ लगली जे अनर्थ भेल। मुदा अपनो गर भेटल। गर भेटते सुसकारी दैत बजलौं-

“भौजी, अनेरे लोक बपहारि कटैए जे मौगीमे मजगूती आबए, माने नारी-सशक्तीकरण., ऐठामक नारी-जीवन बिसैर लोक बजैए।”

हमर बात सुनि अल्लापुरवाली भौजी अकबकाए लगली मुदा मनक इमान जगि चुकल छेलैन, बजली-

“नइ बुझलौं बौआ?”

अपना दिस बढ़ैत अल्लापुरवाली भौजीक सिनेहसँ सिनेहिल होइत ससिनेह बजलौं- “भौजी, अहीं छातीपर हाथ रखि बाजू जे हमरा घरवाली सन चमचिकनी-ललमुँही जँ अहाँ रहितौं तँ एहेन गाममे बास होइत?”

अपन जीवन अल्लापुरवाली भौजीक मनमे जेना नाचि उठलैन तहिना अप्पन तीन मासक बीतल दुरकालकेँ स्मरण करैत बजली- “बौआ, गाममे ते सभ देखिते छिऐ जे भैया केहेन छैथ। भरि दिन गपे-सप्प आ ताशेक पाछू लगल रहै छैथ। विधातेकेँ की दोख देबैन। रंग-रंगक कलम रखने रहै छैथ विधाता, जखैन जेहेन मन रहलैन तखैन तेहेन कलमसँ लिख दइ छैथ।”

भौजीक बात सुनि हँसी लगि गेल। हँसी लगैक कारण भेल जे दुनियाँक आदि-अन्त तँ सभ जनैए जे जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। मुदा बीचक जिनगीमे केतए भोथिया जाइए से बुझबे ने करैए। एहने बुधिआरि बुझनिहारि अल्लापुरवाली भौजी सेहो छथिए। ओना, अल्लापुरवाली भौजी सासुर अबिते, बिना सासु-ससुरक कहने, गाइयक थैर-गोबरसँ लऽ कऽ खुआएब-पियाएब माल-जालक शुरू कऽ नेने रहैथ, जइसँ साउसो-ससुर अपन परिवारक प्रमुख काज–माने पशुपालनक सभ काज–सँ निसचिन्त जकाँ मने-मन भइये गेलैथ। बजलौं- “भौजी, अहाँ जनिते छी जे ने खुट्टा रखने छी आ ने तइमे बन्हैले माल-

जाल पोसने छी। लऽ दऽ कऽ एक गाही मनुखेटा हमरा घरमे अछि। तइमे ऐबेरक बीतल तीन मास जे रहल अछि आ अखनो अछि ओ नाकोदम केनहि अछि, तैठाम बलिहारी अहाँकेँ अछि जे एहनो समयमे दूटा गाए सम्हारि दस किलो दूधक आमदनी परिवारमे केने छी।"

जहिना कोनो बीतल घटना वा चलैत जिनगीक क्रियाक बीचक बिचड़ैत विचार मनकेँ उत्फुलित करैए तहिना अल्लापुरवाली भौजीकेँ भेलैन, बजली- "बौआ, केलहे देह अछि तँए एहेन समयमे अपनाकेँ सम्हारि रखलौं, नइ तँ बिलैट जइतौं।"

अल्लापुरवाली भौजीक विचारक प्रवाहमे अपन कोनो परवाह नहि रहल। खापड़िमे देल मकइ जकाँ अनेरे मुँह फुटि गेल-

"भौजी, ऐ तीन मासक बैसारीमे माने बाढ़ि एलहा समयमे, गामक यएह देखै छी जे जँ बोड़ो-कट्ठाक हिसाबसँ धान भेल रहैत तँ आइ गाम धनमण्डल भेल रहैत मुदा से भऽ गेल पौकेट कटलाहा परदेशिया जकाँ, जेकरा कानब छोड़ि मुँहमे कोनो बोल नहि रहैत। गाममे जेतबो माल-जाल, गाए-महींस छल ओहो रंग-बिरंगक कारणे–रंग-बिरंगक कारण भेल, खुएनाइ-पीएनाइसँ लऽ कऽ बरसाती खढ़क रोगक संग-संग रखैक घर-दुआर धरि–सभटा उपैट गेल। धन्यवाद अहाँकेँ दी, जे अखनो अपन मुँहक लाली ओहने रखने छी जेहेन नीक समयमे रहै छल।"

हमर बात सुनि अल्लापुरवाली भौजीक विचार-धारमे जेना मोइन फुटि गेलैन तहिना बजली-

"बौआ, मनुख बनि जखन धरतीपर जनम नेने छी तखन जँ अपनो जीबैक उपाय सोचि नहि चलब तँ जीब केते दिन सकै छी।"

भौजीक विचार सुनि मन जेना पसीज गेल। जँ एहेन विचार-शक्ति नारी कि पुरुखोमे जगि जाए तँ ओ जरूर अपनो आ अपना संग आनो-आनकेँ मनुखक शकलमे मानव बास स्थापित कऽ लेत। मुदा...। अपन जिनगीक बेवहारिक प्रवाहकेँ नुका वैचारिक धारमे भँसियाइत बजलौं- "भौजी, लोक कि कोनो झुठे बजैए जे बुधि बपजेठ होइ छइ। तहूमे जँ ओ बेवहारिक भऽ जाए तँ घीबोसँ चिक्कन होइते अछि।"

'घीबोसँ चिक्कन' आकि 'बुधि बपजेठ' सुनि अल्लापुरवाली भौजीक मन

जेना प्रेमास्पदक अवस्थामे पहुँच गेलैन तहिना भव-विह्वल होइत बजली-

“बौआ, भगवान ओहने माए-बापक परिवारमे जन्म देलैन, जिनका दुनियाँक सम्पैतमे किछुओ ने हिस्सा छैन, छैन सिरिफ अपन देह भरिक सम्पैतटा, तैठाम जँ देह धुनि नहि चलब तखन पार लागल। एक तँ ओहुना देखै छी मनुखक ओहन चालि अछि जे अनेरो लोकक चीजो चोरबैए आ दुब्बर-दानर देखि बलजोरियो छिनैए, तैठाम जँ अपनो भरि नहि करब तखन कए दिन चलब.!”

अल्लापुरवाली भौजीक विचार सुनि अवाक भऽ गेलौं। स्त्रीगण रहैत अल्लापुरवाली भौजीक काजो आ विचारो देखि-सुनि अपने मन अपनाकेँ धिक्कारए लगल। मुदा एक तँ भौजीक आगूमे छी, दोसर झड़ले झाँखुर किए ने होइ मुदा छी तँ पुरुखे किने। लगले हारियो मानि लेब उचित थोड़े हएत। तहूमे गोबरधन पावनिक दिन छी.! बजलौं-

“भौजी, औझुका जे पाबैन अछि ओ माल-जालक, असलमे ओ अहींक छी। भोरे उठिकऽ गाइयक थैरमे अन्नसँ लऽ कऽ करमीक फूल तकक बरवारी अहाँ बनौनहि हएब।”

‘औझुका पावनिक नाओं सुनिते भौजी जेना भरि गामक सुड्डाह भेल मालक थैड़ सभपर नजैर दौड़बैत बजली- “जखन तीन बजे रातिमे ढोलक आवाज भेल आकि उठि कऽ हाँइ-हाँइ पहिने पोखैर जा करमी-लत्ती अनलौं। लगले थैर-गौबर करैत खरैड़-बरैड़ कऽ सौंसे चिक्कन-चुनमुन करैत निपलौं। पछाइत हाथ-पएर धोइ गोधनपूजा शुरू केलौं।”

अनेरे मुहसँ खसि पड़ल- “वाह.!”

हमर मुहसँ खसल ‘वाह’ सुनि अल्लापुरवाली भौजी जेना अपन जिनगीमे भँसियाइत बजली- “दिन उगिते जँ दलिहारा चौर नइ जाएब तँ काज पार लगत। भोरे अँगनाक काज सम्हारि किछु मुँहमे लऽ लइ छी आ घोड़ा जकाँ दौड़ल जाइ छी। जान उपैछ घास कटै छी, तखन तँ अबैत-अबैत बेर खसि पड़ैए आ जखन कनियोँ काजमे ढीली-सील्ली हएत तखन तँ भरि दिनमे पारो ने लागत।”

दलिहारा चौर अढ़ाइ-तीन साए बीघाक अछि, जइमे किछु हिस्सामे पानि सुखने उपजो होइए आ किछु हिस्सा, लगभग साठि-सत्तैर बीघाक रकबा ओहन अछि जइमे बारहो मास पानि रहने अनेरुआ घास सभ सेहो अछि, ओही दलिहारा

चौर सँ अल्लापुरवाली भौजी तेसरा दिनपर घास आनि दुनू गाइक सेवा करै छैथ। तीन माससँ बाढ़िमे डुमल गाम रहने घासक खेतियो नहियेँ भऽ सकल, संगहि खेत-पथारक आड़ि-धुरमे जे घास होइए, सेहो ने भेल।

अल्लापुरवाली भौजीक नहाइक समय देखि अपने मन कहलक जे बेवकूफ जकाँ अप्पन समय नष्ट करिते छी जे एकैसमी सदीमे गाए-सुगरक लड़ाइ देखै छी आ कर्मकारिणी अल्लापुरवाली भौजीक समय सेहो दुइर करै छिऐन। उठि कऽ विदा भेलौं कि दच्छिन दिससँ रामेसरकेँ अबैत देखलिऐ।

रामेसर गामक मध्यमवर्गीय परिवारमे सचेष्ट किसानी जिनगी धारण केने अछि। एगारहटा गाए पोसि परिवारमे कृषि उत्पादित कारोबार पसारने अछि। बीस बीघा जमीनबला किसान- रामेसर समुचित ढंगसँ घासक खेती करैत दस बर्खसँ दूधक कारोबार करैत आबि रहल छल जे ऐ साल बाढ़िक चलैत सभटा नष्ट भऽ गेलइ...। मनमे रामेसरक प्रति दया जगले छल, मुदा हम कइये की सकै छिऐ, एतबे ने जे बोल-भरोस देबइ। लग अबिते रामेसरक कननमुँह देखि अपनो छाती फाटि गेल। बजलौं-

“रामेसर, किम्हर-किम्हर?”

रामेसर बाजल-

“केतए जाएब। वौआइ छी।” ❑

कृषियोग

✺

आठ बजे भिनसुरका समय। कहब जे भिनसुरका आठ बजेक समय सभदिना एक्केरंगक होइए से नइ होइए। बैशाख-जेठक आठ बजे भिनसुरका समय जेहेन होइए तेहेन पूस-माघक नहियेँ होइए। मुदा से सभ अखन नहि, अखन बस एतबे जे सामा पाबैन कहियौ आकि मास असनान, चाहे हरिहर बाबाक पूजा कहियौ आकि बराह बाबाक पूजा-मेला, ओइ सभकेँ भेना आइ छअ दिन भऽ गेल तँए अगहनक अन्हरियाक आइ छठम दिन छी, माने अठारह नवम्बर।

एते कहैक प्रयोजन किछु खास नहियेँ अछि मुदा तारीखो-तिथि तँ अपन धरम बिगाड़िते अछि बस तेतबए...।

किसान छी, बाध दिस जाइत रही कि टोलसँ निकैलते रस्ते कातक आमक गाछक निच्चाँमे योगियो बाबा आ समदर्शियो बाबाकेँ बैसल देखलयैन। रस्ते धेने आगू बढ़ल जाइत रही कि योगी बाबा ठहाका मारि हँसला।

एते तँ बुझले अछि जे योगी बाबा हमरा सभकेँ बाल-बोध बुझै छैथ तँए जँ कोनो गलतियो करब तँ बुझौता, चेतौता मुदा ठहाका मारि हँसता तँ नहि।

ओना, हुनका दुनू गोरे–माने योगियो बाबा आ समदर्शियो बाबा–सँ रस्ता काटि अपन काजक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ि गेलौं। गाछक छाहैरसँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि मनमे उठल जे योगी बाबाक हँसीक ठहाका जरूर किछु शुभ सन्देशक इशारा छी...।

शुभ सन्देशक इशारा मनमे अबिते जहिना सभकेँ नीक बात शुभ समाचार सुनैले जिज्ञासा जगैए तहिना अपनो भेल। घुरि कऽ योगी बाबा लग पहुँच बजलौं-

“बाबा, तेहेन रामधुनिमे मन फँसि गेल छल जे अहाँपर नजैरिये ने पड़ल

तँए आगू बढ़ि गेलौं। पछाइत जखन धियान टुटल तखन अहाँपर नजैर पड़ल, तँए घुमि एलौं।”

ओना, योगी बाबा अपन योग क्रिया (जीवन योग) सँ हमरा-दे बुझि गेला तेहेन उचक्का अछि जे एक किलोमीटर हटलेसँ देखि नेने हएत आ केहेन ओरिया कऽ बाजल अछि! मुदा तइसँ हमरा कोन मतलब। जहिना वेदकेँ कोन मतलब अहाँसँ छै; ओ तँ अहाँक जिनगीक ओहन रस्तापर ठाढ़ अछि जइसँ अहाँक पूर्ण स्वतंत्र जीवन भेट रहल अछि आकि नै भेट रहल अछि; तेकर लेखा-जोखा राखत। जखन स्वतंत्र जीवनक बाट भेट रहल अछि तखन किए ने पूर्ण स्वतंत्र भऽ जिनगी बिताएब, मुदा तइले अहाँकेँ ने अपन वेद बुझए पड़त...। योगी बाबा बजला-

“बौआ, गाम-घरक की हाल-चाल अछि?”

जहिना कियो गामक चालि देखि बजैमे गामेकेँ ढठिया दइए तहिना हमहूँ गामकेँ ढठियबैत बजलौं-

“बाबा, अनकर हाल-चाल की कहब! अपने ऐगलो साल देखब कि नइ देखब से चिन्ता मनमे बनल अछि।”

जाधैर हम बजैत रहलौं ताधैर योगी बाबा अपन मुड़ी डोलबैत रहला, मुदा बजला किछु ने।

ओना, अप्पन मन लटकल छल ओइ हँसी–ठहाका–क फल सुनैले मुदा से उनटे दिस योगी बाबा भँसिया रहल छला। अपनाकेँ संयमित करैत बजलौं-

“बाबा, अपनेटा ठहाका मारि हँसब आकि अनको हँसाएब?”

‘अप्पन’ आ ‘आन’ सुनि योगी बाबा बजला-

“हम केकरो मनाही करै छिऐ जे तूँ नइ हँसह। तखन तँ हँसैले मन चाही, से तँ ओ अपने ने बनौत।”

जहिना योगी बाबा अप्पन पल्ला झाड़ि कात भेला तहिना हमहूँ अपन पल्ला हुनके ऊपरमे दैत बजलौं-

“बाबा, अहाँकेँ समाजेक बाबाटा नइ बुझै छी, गुरुओ बुझै छी, तँए सदिखन मनमे रहबे करैए जे गरुगरकेँ सरुगर योगी बाबा जरूर बनौता।”

ले बलैया! बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं मुदा अप्पन विचारमे केतए घोंच

भऽ गेल से बुझबे ने केलौं। ओना, योगी बाबा बुझि गेला तँए ठहाका मारि तँ नहि हँसला मुदा मन जरूर मुस्कियेलैन।

आब, ठहाका सुनि जेते मन नइ घबड़ाएल छल तइसँ बेसी योगी बाबाक मुस्की देखि घबड़ाएल। मनमे उठल- ठहाका केकरापर मारने छला केकरापर नहि, तइसँ अपना कोन हानि-लाभ अछि मुदा मुस्की तँ सोल्होअना हमरेपर मारलैन अछि जे अपना आँखिएसँ देखलौं.!

मुदा लगले मनमे ईहो भेल जे दोहराकऽ जँ फेर पुछिऐन आ जँ कहीं पहिलुके जकाँ फेर केतौ घोंच भऽ जाएत तखन तँ दोबर मुस्कीसँ ने मुस्कीएता। मुदा बाबाक बातो तँ ताबे धरि नहियेँ बुझब जाबे तक पेटसँ निकालि धरतीपर नै रखता। तखन?

तखन तँ यएह ने जे जहिना भक्त सोल्होअना भगवानसँ अभक्त होइत अपनाकेँ समर्पित केने रहैए तहिना करब बेसी नीक हएत। बजलौं-

“बाबा, अहीं जखन खेल खेलबै तखन हम–छौड़ा-माड़ैर–सभ की करबै?”

जेना लहका बंशीक घाव माछक गलफड़मे लगैए वा जहिना वृन्दावनमे गोपी सभकेँ कृष्णक बंशीक लगलैन तेना तँ योगी बाबाकेँ नइ लगलैन मुदा विचारमे किछु-ने-किछु लाव लगबे केलैन। बजला-

“अनुप! तोहर नामे ‘अनुप’ छह तँए तोरा नइ कहबह तँ केकरा कहबै।”

योगी बाबाक विचार सुनि मन थोड़ेक अपनो थीर हुअ लगल आ थोड़ेक अपनो शक्ति लगा थीर केलौं। जँ से नइ करितौं तँ योगी बाबाक जोड़-घटाव छिऐन किने, निच्चाँमुहेँ अधियाइत घटत आकि ऊपरमुहेँ बढ़ियाइत बढ़त से सूत्र जँ सुनबे ने करब तखन तँ दिनका नाच रातिमे लालटेनक इजोते देखब.!

मुदा एतेक रच्छ जरूर रखलौं जे किछु बजबे ने केलौं। जँ किछु बजितौं तँ तही बातक नाँगैर पकैड़ योगी बाबा धार-पोखैरमे हेल जइतैथ, मुदा नइ बजने एते तँ भेबे कएल जे अपना फुरने अप्पन विचारक बात योगी बाबा बजता। सएह भेल। योगी बाबा बजला-

“अनुप, अखन तक तूँ गुरुए ने बुझै छहक।”

योगी बाबाक मुहसँ सोझगर बात सुनि, जहिना पतराएल धारमे मोटाएल

धारा मिलते मोटाए लगैए; तहिना योगी बाबाक विचार सुनि अपनो मनमे भेल। बजलौं-

"बाबा, ओहूमे की कोनो रोख-वृख अछि।"

हमर 'रोख-वृख' सुनि योगी बाबाक मुस्कीमे गम्भीरता आबए लगलैन। मने-मन बाबाक चिन्त चिन्तनधार लग पहुँचा विचार देलकैन जे अनुप प्रशान्त महासागरमे हेलै-जोकर अखन नइ भेल अछि तँए किए ने ओहन बाट पकड़ा दिऐ जे जेहेन गतिये चलत तेते समयमे पहुँचत...। योगी बाबा बजला-

"बौआ अनुप! गुरु तक तँ बुझै छहक मुदा सतगुरु नइ बुझै छहक।"

योगी बाबाक मुहसँ खसल 'गुरु' आ 'सतगुरु' आइये सुनलौं! मुदा अनेरे किए बेसी लाड़-झाड़ झाड़ितौं, सुपुट शब्दमे बजलौं-

"नइ।"

हम्मर बात जेना योगी बाबाक मनकेँ झमारि देलकैन तहिना विचलित हुअ लगलैन। मन तेना विचलित भऽ गेलैन जे अपने धिक्कारए लगलैन। धिक्कारए ई लगलैन जे केते लोक समाजमे एहेन अछि जे कर्म-ज्ञानक संग वर्तमानमे भक्त बनि ठाढ़ अछि। दुनूक बीचमे जेकर जे दूरी बनल छै ओ तँ अपना आँखिये सभ देखैए। मुहसँ बाजह वा नै बाजह।

ओना, अपन मन अखन तक योगी बाबाक ठहाकापर लटकले छल मुदा तैबीच दोसरे-तेसरे विचार सभ उठि गेल। तहूमे जखन मुहसँ खसि पड़ल जे गुरुक ऊपर सतगुरु नइ बुझै छी, तखन उनैट कऽ केना पुछिऐन जे बाबा 'ठहाका' किए मारलिऐ? सभ देखिते छी जे परिवारमे वृद्ध-वृद्धक की गति छैन। जैठाम सबहक आँखिक नोर पीड़ासँ पीड़ित भऽ भऽ झहैर रहल छैन तैठाम योगीबाबा केना ठहाका मारि रहला अछि.! मनमे ओना बेर-बेर विचार उमैक जाए मुदा तेकरा मनेमे जाँतिकऽ रखने रहलौं।

योगी बाबा आ समदर्शी बाबा, दुनू एक-बतरिये छैथ, एक्के गामक एक्के टोलक सेहो छैथ, मुदा जेना योगी बाबाक परिवारजन ठहाका मारि हँसै छैन तेना समदर्शी बाबाक परिवारमे नहि छैन। ओना, समदर्शी बाबा अपने सभ दर्शनोक विचार बुझै छैथ आ सभ शास्त्रो-पुराणक संग सामाजिक रीति-रेवाज सेहो बुझै छैथ। पढ़ल-लिखल सेहो छथिए, मुदा ने अप्पन विचारक ने कोनो कोण-ठौर छैन,

ने समाजेक रीति-रेवाजक ठेकान-ठौर आ कोनो अप्पन जीवनक संग परिवार-समाजक रूप गढ़ैक दिशा छैन! जइसँ सभ किछु बेठेकान बनलो छैन आ बनितो छैन्हें। कहब जे तखन योगी बाबाकेँ गप-सप्पक मिलान समदर्शी बाबाक संग केना रहै छैन? यएह ने सिद्धान्त आ बेवहार अछि।

जहिना कियो श्रमिक उत्साहक संग श्रम करैत श्रमण बनि आगू बढ़ैए तहिना योगी बाबाक मन तैयार भेलैन, बजला-

"बौआ अनुप, पचास बर्खक कृषि यज्ञमे हमरो योग रहल अछि।"

बजा गेल-

"एकरा के काटत।"

हमर बात सुनि योगी बाबाक मनमे बीस बर्ख पूर्वक बात आगूमे आबि गेलैन। बजला-

"बौआ, एक साल तेते धान अपनो, अपन गामो आ अपना इलाकोमे भेल जे धनमण्डल भऽ गेल। लेबाल नइ रहल। जेतबेमे जेकर बिकाएल से तेतबेमे अपन धान बेच जान हल्लुक केलक।"

बजा गेल- "वाह.!"

जहिना खेतक कोण लग हरवाह अप्पन हर मोड़ि लइए तहिना योगी बाबाक विचार हमर 'वाह' सुनि मोड़ि लेलैन। मोड़ाइते बजला-

"बौआ, पचास बर्खक जिनगीमे केतेको रौदी देखलौं। एक-सलियो रौदी देखलौं, दू-सलियो देखलौं आ पन-सलिया सेहो देखलौं। देखबेटा नइ केलौं, ओहन विपैत्तिक मुकाबला सेहो केलौं। तइसँ आरो जे भेल से भेल मुदा आँखि तकैत जीबैत तँ अखनो देखिते छह किने।"

बजलौं- "बाबा, सुनै छी जे बारह बर्खक रौदीमे जनकजी हर जोतलैन जइमे सीतो भेटलैन आ खूब बरखो भेल.!"

योगी बाबा स्पष्ट बजला- "तेहेन रौदी तँ नइ देखलौं मुदा गामक इनार-पोखैर सुखा गेल से तँ देखबे केलौं, संगे ओकर भोग सेहो भोगबे केलौं।"

अपनो विचारमे जेना कोनो नवगछुलीक मुड़ीमे कनोजैड़ छुटै छै तहिना कनोजैड़ छुटए लगल। बजलौं- "बाबा, ऐ बेरक बाढ़ि जकाँ पहिनौं बाढ़ि अबै छल?"

रौदीक संग बाढ़िक चर्च सुनिते योगी बाबाक मनमे अनेको गुणा आत्मवलक शक्ति जगलैन। मनक शक्ति जगिते योगी बाबा बजला-

“बौआ अनुप, बाढ़िये-रौदीटा किए कहै छह, केते झाँट-बिहाड़ि, पानि-पाथरक संग छोट-पैघ भुमकमक प्रकोप सेहो भोगनहि छी। मुदा.?”

योगी बाबाक मुहसँ खसल ‘मुदा’ सुनि अपनो मनमे भेल जे भरिसक ‘मुदा’ कहि बाबा विपैत सभकेँ बिसरए चाहि रहला अछि। पुछलयैन-

“मुदा की बाबा?”

हमर पुछबसँ योगी बाबाक मन ठंढाएल इनहोर पानि जकाँ ठंढाए लगलैन। बजला- “बौआ, आब ऐ सभ घटनाकेँ मोन पाड़ि अनेरे किए मनकेँ तड़पाएब। छोड़ह ऐ सभकेँ।”

स्पष्ट भऽ गेल जे अपना जनैत योगी बाबा अपनो भोगल जीवनकेँ बिसरए चाहि रहल छैथ, मुदा अपना तँ बुझल नहि छल तँए मनमे बेर-बेर जिज्ञासा जगिये रहल छल जे आरो की सभ भेल। पुछलयैन- “बाबा, बिनु बजने जँ छोड़ि देब तखन हम सभ–ऐगला पीढ़ी–केना बुझब?”

हमर बात सुनि योगी बाबाक मन ठमकलैन। कने-काल मने-मन विचार करैत बजला-

“बौआ! जे जिनगी बीत गेल आ जिनगीक संग सुखो-दुखो आ समैयो बीत गेल, जेकरा भूतो कहै छिऐ आ अतीतो कहै छिऐ। अतीतेपर ठाढ़ भेल वर्तमानो चलैए, मुदा पुन: घुमि अतीतमे थोड़े जाएत। यएह अतीतक अनुभव-ज्ञान गुरु रूप धारण करैए। मुदा सतगुरु.?”

अदहा बात माने ‘गुरु’केँ जानब तँ बुझबे केलौं जइसँ मनमे कनी चैन आएल मुदा ‘सतगुरु’ बुझैक जिज्ञासा मनमे तेते जोर मारलक जे मुहसँ अनेरे खसि पड़ल- “की ‘मुदा सतगुरु’ कहलिऐ बाबा?”

हमर बात सुनि योगी बाबाक मनमे जेना प्रसन्नता जगलैन तहिना प्रसन्न होइत प्रसन्नचित्तसँ बजला- “बौआ अनुप! वर्तमानकेँ बुझब-जानब आ बुझि-सुझि चलबे ‘सतगुरु’ भेला।”

योगी बाबाक बात मनमे नीक जकाँ जगहो ने बनौने छल कि समदर्शी बाबा उठान हारैत योगी बाबाकेँ कहलैन- “भाय, ई साल नहि खेपब।”

समदर्शी बाबाक बात सुनि योगी बाबाक मनमे अनेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। चारि-पाँच बर्ख उमेरोमे समदर्शी छोट अछि, कोनो तेहेन बिमारियो देहमे नइ देखै छिऐ जे बिछानो धरत, तखन एहेन बात किए बाजल जे ऐ साल नइ खेपब.!

योगी बाबाक ठहाका अपनो मनमे ठहैर-ठहैर उठबे करै छल मुदा जखन दू गोरेक बीच योगी बाबा छैथ तखन तँ दुनू गोरेक बात ने बुझता। यएह सोचि अपने चुपचाप रही। तैबीच योगी बाबा बजला-

“किए ने ई साल खेपबह समदरसी?”

जहिना योगी बाबा चारि बीघा खेतबला खेतिहर तहिना समदर्शी बाबा सेहो छैथ। ओना, बीचमे जे दुनू बेटीक बिआह केलैन तइमे कट्ठा पनरहे करीब जमीन बिकाएल छेलैन, मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, जहिना खेत-बिकाइसँ पहिलुका रहन-सहन आ चालि-ढालि छेलैन तहिना अखनो छेबे करैन। समदर्शी बाबा बजला-

“योगी भाय, अखन तक जे बनल-बनाएल जिनगी छल ओ एकाएक ऐ साल बाढ़िक चलैत टुटि गेल, ऐगला कोनो आशा नहि देखि रहल छी।”

समदर्शी बाबाक सतही विचार योगी बाबाकेँ सेहो अपन घटित जीवनसँ अनुभव छेलैन्हे तँए नीक जकाँ महसूस भेबे केलैन। मुदा बाढ़िक पछातिक जीवनमे दुनू गोरेक बीच अकास-पतालक अन्तर जकाँ भऽ गेलैन। योगी बाबा बजला-

“समदरसी, बाढ़िक जेहेन घटना ऐबेर भेल तेहेन की कहियो नइ भेल छल। केतेको बेर भेल, मुदा मनुख तँ सभ किछु अङ्गेज अपन वंश-धारकेँ जीवित रखनहि अछि किने, आकि नहि?”

समदर्शी बाबा बजला- “हँ, से रखनहि अछि।”

योगी बाबा बजला-

“जहिना तोहर कि गामेक आन लोकक आकि इलाके-लोकक तँ एक्के गति अछि किने?”

समदर्शी बाबा बजला- “हँ, से तँ अछिए।”

धारक पानि जहिना समुद्रमे मिलिते तुष्टि प्राप्त करैए तहिना अप्पन

किसानी जिनगीक धारमे बहैत योगी बाबा बजला-

“समदरसी, खेतमे लगौल जे किछु स्थायी वा अस्थायी सम्पैत–गाछ-बिरीछ–छल, सभ किछु नष्ट भS गेल। मात्र खेतटा बँचल रहल। अखन जँ हम लोककेँ कहबे करबै जे फल्लाँ साल एहेन उपजा भेल वा आमे फड़ल छल, तइसँ अपन भुखाएल पेटक भूख मेटाएत?”

समदर्शी बाबा मुड़ी डोलबैत कहलखिन-

“से तँ नहियेँ मेटाएत।”

योगी बाबा बजला-

“सभ आदमीकेँ ने अपन-अपन होश करए पड़तै जे जीवन धारमे केना हेलब?”

समदर्शी बाबा बजला-

“हँ से तँ होश करए पड़तै.!”

योगी बाबा बजला-

“भरिसक अही बीचमे तूँ बेहोश भS गेलह तँए जिनगी खेपब भार बुझि पड़ि रहल छह। मानै छी घटना भेल, मुदा अप्पन टुटल जिनगीक जोड़ो-जाड़ तँ अपने ने करए पड़त।”

मुड़ी डोलबैत समदर्शी बाबा बजला-

“हँ से करए पड़त।”

योगी बाबा अपन जीवनक योग क्रियाक संग फसलचक्र देखबैत बजला-

“आइ अठारह नवम्बर छी, धानक उपज नइ भेल मुदा समयपर गहुमक खेती तँ पकड़िये लेलौं। गहुमक पछाइत खेरही हएत, खेरहीक पछाइत आगू सालक धान हएत।”

फसलचक्रक योग नजैरपर पड़िते समदर्शी बाबा अवाक भS गेला।

समदर्शी बाबाकेँ अवाक होइते योगी बाबा ठहाका मारि हँसला। ❑

गामक जमीने पथरा गेल

✳

बन्धु, अपनासभ मिथिलांचलक मैथिल छी। सभ जनिते छी जे अपना ऐठाम जनक सन चिन्तक सेहो भेला आ अष्टावक्र सन ब्रह्मज्ञानी सेहो भेला। याज्ञवल्क्यो भेला आ विद्यापति सेहो भेला। नारदेकेँ किए छोड़ि देबैन, ओहो तँ चौरासी श्लोकक आसन करैत 'मनुस्मृति' लिखबे केने छैथ। अहाँ भलेँ हुनका जनैत होइऐन वा नहि, मुदा हुनकर देल मनुसूत्र जनितो छी आ मानितो तँ छीहे, भलेँ करैत होइ वा नहि। चौरासी श्लोकक स्मृतिसूत्रमे जीवनक चौरासी पद्धतिक चर्च भेल अछि, माने चौरासी आसनक। अहूँ जनै छी जे जीवन जीबैक चौरासी आसन अछि। खाएर जे अछि से अछि ओ तँ सभक छी, अहाँ अपने हिस्सारस्तीक ने अधिकारी छी। बुझल अछिये जे अपना सबहक जीवन, माने जे सभ किसानक भूमि मिथिलामे रहैबला मैथिल छी, 2022 इस्वीमे मोटाकऽ दोबर भऽ गेल। भलेँ रौदी-दाहीक इलाकामे किए ने छी, रौदी भेलापर एकोटा गाम नहि बाँचत जे रौदियाएत नहि। सिंचाइक सुविधा नहियेँ अछि आ दाही हएत तँ धार-धूरक जे छहर-महर अछि आकि बान्ह-सड़कक, ओकरा मूसे काटि कऽ तेना जाल बना दइए जे तीन किलोमीटरक बीचमे पाँच ठाम टुटबे करैए। जइसँ गामक खेती-पथारीक कोन चर्च जे घरो-दुआरक ठेकान-पता साले-साल बदैलते रहैए। खाएर अछि से सभकियो देखिते-जनिते छी। कखन बास उपटत आ कखन खेत धारमे कटि जाएत, तेकर कोनो ठेकान नहि। सीताराम भाय ओहिना नहि ने कहलैन, 'धनीक घर लगक बास आ धारक कातक चास, एकर कखनो नहि करी बिसवास'।

जिनगीक एहने मचकीपर सभकियो मचमचा कऽ झुलिये रहल छी, तखन चलू बुझल जेतइ। जहिना एक-सँ-एक तत्ववेत्ता, एक-सँ-एक

दार्शनिककेँ मिथिलाक उर्वर भूमि पैदा केलक, तहिना एक-सँ-एक तांत्रिककेँ सेहो पैदा करबे केलक आ एक-सँ-एक ऋषिकाकेँ सेहो केनहि अछि। आब अहाँ कहब जे जखन महिला शिक्षाक लेल हजारो वेरियर लागल अछि, तखन ओ सभ ऋषिका पदक उपार्जन केना केलैन? तेतबे किए, हजारो बरख पूर्व जइ मिथिलाक उर्वर भूमिमे सिंचित लेल सरोवर-सरिताक भरमार छल ओ की भेल, सूखि गेल आकि आइयो अछिए?

मिथिलाक ओ सरोवर-सरिता सुखल कि जीवित अछि, तइले तँ पोस्टमार्टम करए पड़त। पोस्टमार्टम ऐ दुआरे करए पड़त जे जीवनशील मरणशील केना भेल आ मरणशील जीवनशील केना अछि? अहिल्या स्थान मिथिलाक धरोहर छीहे। केना अहिल्या उर्वर भूमि मिथिला जकाँ रहितो माटिसँ पाथर भऽ गेल जे हजारो-लाखो बर्खसँ पाथरनूमा मृत्युचेत अवस्थामे रहली। मृत्युचेत अवस्था ई जे प्राण तँ च्यवन ऋषि जकाँ जीवित छेलैन मुदा सौंसे देह दिवारक माटिक संग लत्ती-फत्तीसँ छड़ा गेल छेलैन। ओ तँ धन्य त्रेतायुग जइमे राम सन ब्रह्मचर्यकेँ विश्वामित्र सन ऋषिक संग दरस-परस भेलैन जइसँ पुन: फुरफुरा कऽ उठि अहिल्या ठाढ़ भेली। एकर माने ई नइ बुझब जे मिथिलाक ओहन भूमिक चर्च कऽ रहल छी जे अखन तक बाढ़ि-रौदीक चपेटमे पड़ल अनछू बनल अछि। मिथिलाक हजारो एकड़ भूमि, जे रौदसँ पथरा गेल अछि वा पानिमे डुमल-डुमल कठुआ गेल अछि। प्रश्न अछि अहिल्या जकाँ ओइमे जान केना औत?

सभकियो जनितो छी आ मानितो तँ छीहे जे अप्पन मैथिल समाजमे आइये नहि, बहुत पहिनहिसँ ओझा-गुणीक वर्चस्व रहल अछि। माने तांत्रिक विचारधारा मिथिलामे अदौसँ चलैत आबि रहल अछि। हम ई नइ कहै छी जे तांत्रिक धारा अवाह अछि, मुदा एते कहैमे हिचक नहि अछि जे गामे-गाम ओइ पद्धतिक चोला पहीरि एक-सँ-एक गुणोक आ एक-सँ-एक वस्तुओक परसादी नहि बाँटि रहला अछि, जइसँ समाज भ्रमित भेल भ्रमजालमे फँसल अछिए।

देखिते छी जे उच्च शिक्षा पबैले, भागीरथ जकाँ केतेक प्रयत्न करए पड़ैए। अनेको रंगक युक्तिक पछाइत शिक्षा प्राप्त होइए। तेहेन यज्ञकर्मी कृत्यकेँ, चुल्हीक छाउर जकाँ केना एक्के चुटकीमे आँच पजारि देने अछि जे बच्चेमे हाथ आ हाथक रेखा देखि आसीरवाद दऽ देल जाइत अछि जे फल्लाँ महाज्ञानी हएत आ फल्लाँकेँ विद्याक रेखे मेटाएल अछि.! यएह तँ छी अप्पन समाज, जइमे सभकियो बास कऽ रहल छी। समाजक बीच जीवनक वास्तविकता की अछि,

तेकरा बिना देखने-सुनने जँ अनुमान आकि अन्दाजसँ किछु कहबै तँ सहीए भS जाएत, तेकर कोनो ठौर-ठेकान नहि अछि। ओझा-गुणी जकाँ सोझे दैछना पेब कहि देबै जे 2022 इस्वी तक देशक किसान मोटाकS दोबरा जेता, माने उन्नति करिकS दोबर भS जेता, तइसँ नहि ने हएत।

अप्पन मिथिला उत्तरसँ पहाड़सँ घेरल अछि जे हजारो-हजारो फीट ऊँच अछि, दच्छिन गंगासँ आ पूब ब्रह्मपुत्रसँ घेराएल अछि। तँए ऐठामक भूमि सोल्होअना चौरस नहि, ढलान बनल अछि, माने उत्तर-सँ-दच्छिन ढालुनूमा अछि। एहेन देखिमे तखन अबैए जखन पानिक बहाउ उत्तर-सँ-दच्छिन मुहेँ होइए। ओना, अपना सभ धारक पेटमे सेहो छी, माने ई जे उत्तरमे जे पहाड़ अछि तही सभसँ धार-धूर बनि-बनि निकलल अछि। धार बनैक, माने पानिक बहाउ बनैक, दू कारण अछि। बंगालक खाड़ीसँ उठल समुद्री हवा, जे पानिसँ बोझिल रहैए, पहाड़सँ टकरा कS बरीस जाइए, जे पानि अपन बहाउ बनबैत दच्छिन मुहेँ निकलैए। ओना, उत्तरो मुहेँ निकैलते अछि, आ दोसर कारण अछि, ऊँच-ऊँच पहाड़ रहने हिमजलक जन्म सेहो करैए। अखन एतबे।

जेकरा अपना सभ मिथिलांचल कहै छिऐ तेकरा पेटमे, माने भूमिक बीच, दर्जनो नदी-नाला अछि। नदी भेल नमगर-चौड़गर आ नाला भेल कम आँट-पेटक। यएह क्षेत्र अपना सभक छी। ओना, देशक आन-आन भागमे जे माटि-पानिक गुण अछि, तइसँ अपना सभक किछु मीललो-जुलल अछि आ किछु भिन्नो तँ अछिए। अपना ऐठामक पानि पहाड़ी छी जइमे मीठपन अछि आ आनठाम पानि समुद्री, जे नोनछराह अछि। तहिना माटियोक स्थिति अछि। आन माटिक बारीकीमे नइ जाउ, खाली एकटा बालुकेँ लिअ। मिथिलांचलमे, माने अपना ऐठाम उर्वर भूमि सेहो अछि आ बालुआह भूमि सेहो अछि। ओना, दुनूक अप्पन-अप्पन सीमाक दायरा छइ। तेकरा छोड़ू, अखन एतबे जे जहिना कबड्डी खेलाइत काल जमीनपर पैरसँ डाँरि खींच सीमा बना दू भागमे फील्डकेँ, खेलैक जगहकेँ बाँटि दइ छिऐ तहिना 'उपजाऊ भूमि' आ 'बलुआह भूमि'क बीच डाँरि खींच सीमा दS दियौ। अखन एकरा छोड़ू जे कमला-कोसीक किनछैरिक बालु भूमिमे फुइट-काँकैड़ आ परोर-करैला तँ होइते अछि। की होइए आ की हएत, तेकरा छोड़ू। अखन कबड्डीक डाँरि जकाँ धारक इलाकाकेँ एक भाग आ ठेही इलाकाकेँ दोसर भाग मानि लिअ।

धारक क्षेत्रमे अपना सभकेँ जहिना बालु अछि तहिना राजस्थान सेहो बालुसँ भरल अछि। बहुतो देश एहेन अछि, तेकर चर्च नइ करब। ऐठाम अप्पन राजस्थानक बालुक बात अछि, जइमे पानि निपत्ता अछि। जँ बालुक हिसाबे पानि रहैत, जेना अपना ऐठाम अछि, तखन जहिना अपना सभ धारक कातक बोन-झाड़मे गाए-महींसकेँ चरैले छोड़ि दइ छिऐ आ धारक किनछैरिक सुखल बालुपर बैस खेलबो करै छी आ बालुपर थपकी दैत गीतो तँ गबिते छी जे 'हाथी पियासल, घोड़ा पियासल, दल-दल पानि, दल-दल पानि'। तहिना ओहूठाम होइत। मुदा से ओइठामक बालुमे से थोड़े हएत। आ जँ से होइत तँ कि मिथिलांचलसँ कम रंगक जानवरक पोस रहैत कि चिड़ैये-चुनमुनी, आकि मिथिलांचले जकाँ राजस्थानोमे घनगर लोको आ जानवरक संग चिड़ैयो-चुनमुनी आ फूलो-फलक बोनो रहैत.!

असगरे दरबज्जापर बैसल मुकुन्द काका मिथिलांचलकेँ मने-मन गुनि रहल छला। गुनैक कारण छेलैन अप्पन उर्वर भूमि। मिथिलाक उर्वर भूमिक गुणगाण होइए जे शंकराचार्य जखन मिथिलामे प्रवेश केलाह तखन ऐठामक भूमिकेँ देखिते ओ अप्पन पैरसँ खराम निकालि लेलैन जे एहेन भूमिमे एकर खगता नइ अछि। से भूमि छी मिथिलाक.! आँखि बन्न केने मुकुन्द काका मिथिला-भूमिक गुण-धर्म गुनैत आगाँ बढ़ला। अखन आमक मास छी, नव किस्मक आमक संख्या ओते जन्म लेत जेते दुनियाँभरिक फल-फलहरीक संख्या नइ अछि। कहब से केना?

जेते रंगक आम अछि, ओकरा खा कऽ आँठी फेंक दइ छिऐ, जे पनरहे दिनक पछाइत नवका गाछक जन्म दइए। ओइ गाछक फल, जे खेलिऐ से नहि रहि, ओइसँ किछु बदलल रूपमे नवफलक गाछ बनि उठिकऽ ठाढ़ भऽ जाइए। एहेन गुण मिथिलाक उर्वर भूमिमे अछि। मुदा आन इलाको आ आन देशोमे नव फलक गाछकेँ दोसर ढंगसँ बनौल जाइए। से अखन नहि। मुकुन्द कक्काक अपने मुहसँ अनायास फुटलैन-

"से केना?"

तहीकाल छीतन भाय मुकुन्द काकासँ भेँट करए दरबज्जापर पहुँचला। मुकुन्द कक्काक आँखि बन्न मुहसँ निकलल अवाज सुनि छीतन भाइक मनमे भेलैन जे भरिसक बैसले-बैसल मुकुन्द काका नीन गाबि रहला अछि, तँए मुहसँ सपनौती बात निकैल रहल छैन। सपनौतियो बात दू रंगक होइए, एक रंगक

ओहन जे मोन रहैए आ दोसर रंगक हेरा जाइए। मुकुन्द कक्काक बात पहिल श्रेणीक छैन तँए मनमे ओहिना गज-गज करै छैन जेना सभकेँ बुझले अछि, 'गज-गज करे गजन्ती फूल, नौ साए हाथी करे कबूल, तैयो ने भेटै गजन्ती फूल'।

बन्न आँखि देखि छीतन भाय बजला-

"काका, आँखि लागल अछि?"

'आँखि लागब' सुनि मुकुन्द काका चौंकैत, आँखि खोलैत, माने आँखिक परदा हटबैत, बजला- "छीतन, अपना सभक भूमि जेहेन उर्वर अछि तेहेन उपज नइ भऽ रहल अछि।"

जहिना अपना विचारे मुकुन्द काका बजला तहिना अपना विचारे बुझिकऽ छीतन भाय सेहो बजला-

"आब केते उपज लेब काका, पैछले साल अपना सभ मोटा कऽ दोबर भऽ गेलौं आ अहाँ कहै छी जे तेहेन उपज नइ भऽ रहल अछि।"

ओझाय-गुणाय अपना ऐठाम अदौसँ रहल अछि। देखिते छी जे गाम-गाममे रंग-रंगक ओझा-गुणी योग-टोन करिते आबि रहल अछि। छठियारे-रातिक बच्चाक हाथ देखि माने हाथक रेखा देखि, बिसवासक संग आसीरवचन देल जाइए जे 'ई बच्चा महाज्ञानी हएत आ ऐ बच्चाकेँ ज्ञानक हस्त रेखे कटल छै, तँए एकरा पढ़बैमे जँ खर्च करब तँ ओ पानिमे जाएत।' ऐठाम हम किरण जीक चर्च नइ कऽ रहल छी जे मैथिल जगतमे ओ प्रथम पुरुष छैथ जे श्रममे विश्वास करैत ओझा-गुणीक विचारकेँ झुठिया महान पुरुष बनि ठाढ़ भेला।

जैठाम, माने जइ समाजमे मनुक्खक निर्माणक एहेन प्रक्रिया रहत तैठाम ओकरा की कहबै। जनिते छी, जखने माए-बापक मनमे एहेन बिसवास प्रबल रूपमे जागि जेतैन—माने हस्त-रेखाक अनुकूल ओ महा ज्ञानी बनत, तखने ओइ बच्चापर पढ़ै-लिखैक तनदेही जेते देबाक चाही—तखनेसँ विकास प्रक्रियामे कमी आबि जाइए। तैसंग बच्चामे से उच्छृंखलता पनपैक सम्भावना सेहो बढ़ि जाइए। माने ई जे ओझा-गुणीक देल आसीरवचन मनकेँ अज्ञानी नहि ज्ञानीक रूप दाइये दइए जइसँ अधलो काजकँ ओ नीक बुझि करितो अछि आ दोसरकेँ सिखैबतो तँ अछिए।

मुकुन्द काका बजला- "से केना छीतन?"

अपना ऐठामक बजैक दुनू क्रम अछि। एहनो अछि जे हँसैत अप्पन पौरुषपनक कर्मक चर्च करै छी आ एहनो तँ अछिए जे 'हँसिकऽ बाजब'केँ हँसी बुझि हँसीए-मे उड़ा दइ छी। जइसँ राजहंस जकाँ दूध-पानि बिलगबैक गुण रहितो चिड़ै जकाँ उड़ियो तँ जाइते छी। हँसैत छीतन भाय बजला-

"काका, हाइ स्कूल तक हमहूँ अर्थशास्त्र पढ़ने छी, तँए ओइ ज्ञानानुकूल कहै छी, 2016 इस्वीमे किसानक अन्न-पानि आकि आने उपार्जित—उत्पादित—वस्तुक जे कीमत छल जँ ओइ कीमत 2022 इस्वीमे दोबरा गेल, तँ किसानक आमदनी दोबरेलैन कि नहि।"

ओना, मुकुन्द काका अपना विचारे दोसर विचार बुझै छैथ, मुदा धड़फड़ा कऽ बजला नहि। एतबे बजला-

"से केना छीतन?"

जेना छीतन भायकेँ अपन आँखिक देखल विश्वासू विचार छेलैन तहिना बजला-

"काका, दोकान-दौड़ी अहाँ नइ जाइ-अबै छी, तँए दोकान-दौड़ीक हाल-चालपर धियान नइ अछि।"

छीतन भाइक विचार मुकुन्द काका सुनि बजला किछु नहि मुदा मुँह बन्न केने मुड़ी हिला देलैन।

कोनो खास हाव-भाव देखि उत्सुक मन जहिना उत्साहित होइए तहिना मुकुन्द कक्काक हाव-भाव देखि छीतनकेँ भेलैन, बजला-

"काका, जखन कोनो वस्तु कीनए दोकानपर जाइ छी तखन देखै छिऐ जे जइ वस्तुक कीमत 2016 इस्वीमे जे छल तइसँ दोबर 2022 इस्वीमे भऽ गेल अछि। तखन अहीं कहू जे दोबरेलौं कि नइ।"

छीतन भाइक विचारक क्रमकेँ सुनि मुकुन्द काका ओहिना अपन मुड़ी डोलबैथ जइसँ स्पष्ट होइ जे छीतन सहीए कहैए। मुदा मुकुन्द काका बुझैथ जे बुझैक जे ओकर प्रक्रिया छै तइमे त्रुटि छै, जे छीतन अपने नहि बुझि पेब रहल अछि। देखिते छी जे गाम-समाज ओहन अछिए जे 'राँड़ कानए, अहिवाती कानए, तइ लागल बर-कुम्मरि कानए'। सभ कनैये पाछू छी, मुदा कानबक कारण बुझिये ने पेब रहल छी। जँ से बुझि पेबितौं तँ नारी शिक्षा आ प्रेम-विवाहक प्रसंग

अनेरे एते तूल किए पकड़ैत। जइ समाजमे हजारो बरख पूर्व ऋषिका भेली अछि, सीता सन पवित्र आ कर्मठ बेटी भेल अछि; ओ धार आइ सुखाएल किए बुझि पड़ैए? तहिना प्रेम विवाहक प्रसंग अछि, जैठाम आइये नहि, हजारो बरख पूर्वक सइयो उदाहरण अछि, जिनकर बिआह स्वयंवर प्रथानुसार भेलैन, तैठाम आइ एते हो-हल्लाक की जरूरत अछि। समाजक दायित्व बनैए जे ओकर निराकरण जीवनक कसौटीपर करैथ। नइ तँ जहिना अखन तक पथराएल समाजक बीच रहलौं अछि तहिना पथराएल रहब। कृषि जादू-टोनापर नइ ने चलत, ओ चलत अप्पन तात्त्विक आधारपर। ❑

धानक कमठौन

✳

आने दिन जकाँ जखन विश्वनाथ बाबा लतामक बगानमे घुमि-घुमिकऽ देखि रहल छला कि आँगनसँ दस बर्खक पोता, सुधीर, मोबाइल नेने बाड़ी पहुँचलैन। एकचलिया लोक तँए एकबोलिया विश्वनाथ बाबा छथिए।

एकचलिया रहने विश्वनाथ बाबा बेसी काल परिवेशक विपरित रहिते छैथ। मोबाइलोक सम्बन्धमे सएह छैथ। सभकियो देखिते छी, पूजाकाल मे जहिना एकटा हाथ अरघाक जले रखैमे बरदाइए तहिना आजुक परिवेशमे मोबाइल सेहो एकटा हाथकेँ भरि दिन बरदौनहि रहैए। खाएर जे रहैए आकि अछि से बरदौनिहार-बरदेनिहार जानैथ आकि मोबाइल प्रेमी जानैथ। मुदा विश्वनाथ बाबा एकचलिया-एकबोलिया रहने अप्पन ऐ विचारकेँ सक्कतसँ मनमे बन्हने छैथ जे जेतबेटा जीवन अछि तहीबीच अपनाकेँ समेट कऽ राखब, से जखन राखब तखने जीवनक मिलानियो जीवनसँ हएत आ संगे-संग चलबो करत। जँ से नहि तखन तँ ओहिना हएत जहिना बगुलाक चालि पकैड़ खंजन बाँसक बीट उपटाबैए।

कनी फरिक्केसँ सुधीर बाजल-

“बाबा, फोन आएल अछि।”

विश्वनाथ बाबाक मन घोरमट्ठा भेल छेलैन। घोरमट्ठा होइक कारण छेलैन जे सातटा गाछ लतामक रोपने छैथ, सातो गाछक फल सात रंगक होइ छैन। तैसंग ईहो छैन जे सातो गाछ ओहन फरनमा अछि जे सालो भरि, माने बारहो मास कोनो-ने-कोनो गाछमे फल लुधकले रहै छैन। आन ने आनक बात बेसी बुझै छैथ मुदा विश्वनाथ बाबाकेँ से नहि छैन, ई अप्पन बात अपने बुझैक कोशिशो करै छैथ आ बुझितो तँ छथिए, तँए मनसँ मानिते छैथ जे मिथिलांचलक लताम,

कश्मीरी सेवसँ केतेको गुणा बेसी नीक अछि.! तँए बारहो मासक अप्पन फल भोज्यकेँ विश्वनाथ बाबा अपना हाथे अपना बाड़ीमे लगेनौं छथिए।

वर्तमानमे लतामक फड़क दशा देखि विश्वनाथ बाबाक मनमे कुही आबि रहल छैन जे साल भरिक फल नष्ट भऽ रहल अछि। रोगसँ आक्रान्त सभ गाछक फड़ अछि। तँए मन घोरमट्ठा भेल छेलैन। ओना, अप्पन जीवनक दशासँ मनमे क्रोध सेहो चढ़ि रहल छेलैन। मुदा लगले अपन मन ओहिना रोकलैन जहिना एक दिशा दोसर दिशाकेँ रोकैए। माने भेल जे जहिना पाप धर्मकेँ रोकैए तहिना ने धर्मो पापकेँ रोकैत अछि। ज्ञानो अज्ञानकेँ रोकैए आ अज्ञान सेहो ज्ञानकेँ रोकिते अछि। भेल तँ एहेन लीला चौबीसो घन्टा बनल रहिते अछि। माने ई जे चौबीस घन्टामे जहिना बारह घन्टाक दिन होइए तहिना बारह घन्टाक राति सेहो होइए, जेना सभ मानै छैथ। अहाँ अपना विचारे बुझब जे सालक दिन-रातिक हिसाब ठीक आधा-आधी कहाँ अछि, कम-बेसीक गड़बड़ी अछि। मास आ दिनक बँटवारामे जे गड़बड़ भेल हुअए मुदा बाइस मार्च आ बाइस सितम्बरकेँ तँ नहियेँ अछि। भलेँ जेठ मासमे रातिक समय घटि जाइत हुअए आ दिनक बढ़ि जाइत हुअए मुदा पूस-माघमे रातिक नइ बढ़ैए आ दिनक नइ घटैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे होइए तइसँ विश्वनाथ बाबाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब एतबे छैन जे अपने केलहा ने अप्पन भेल आकि अनको केलहा अपने भेल आ अपनो केलहा अपने भेल। मनकेँ थीर करैत विश्वनाथ बाबा बजला- “लाबह, लाबह किनकर फोन छिऐन?”

सुधीर बुझैत रहैत तखन ने, से तँ बुझै-जोकर अछि नहि, बाजल- “जखने घन्टी भेल तखने ओकरा उठाकऽ अहाँ लग नेने एलौं हेन।”

पोताक विचारक विश्वास विश्वनाथ बाबाकेँ छैन्हे। विश्वास किए ने रहतैन। ओना, अहाँ कहि सकै छी जे अखुनका धिया-पुता जहिना बोलकहल भऽ गेल अछि तहिना झूठ सेहो बेसी बजैए। ई अहाँक विचार भेल, तइमे हम दखल-दिहानी नइ देब। किए तँ सभ देखियो रहलौं हेन आ पुछि-पुछि विश्वासो तँ बनाइये नेने छी। शिखर-पराग धिया-पुता खेने रहैए, जे ओकर मुहसँ ओहिना शोर पाड़ि-पाड़ि गवाही दैत रहैए मुदा ओ किनौं गाले ने लागए देत जे हम शिखर आकि पराग-गुटका खेने छी।

विश्वनाथ बाबाकेँ से नहि छैन, पोतापर एतेक विश्वास बनले छैन जे आन

धिया-पुता जकाँ सुधीर झूठ नइ बजैए। भाय, झूठो-सच कि कोनो एकदिना रोग थोड़े छी, ओ तँ हौहैठ-कलकैल आकि दिनाए जकाँ होइए। पहिने एकटा फोंसरी हएत आ ओ बढ़ैत-बढ़ैत, माने सोहनगर कुरियान कुरियबैत-कुरियबैत, सौंसे देह पसैर जाइए। मुदा तेना सुधीरक संग विश्वनाथ बाबाकेँ नहि छैन। बच्चेसँ सुधीरकेँ विश्वनाथ बाबा अपना नजैरपर अँटका कऽ रखने छैथ। भाय, किसान परिवारक बच्चा छी। जहिना विद्यालयमे शिक्षक अक्षर बोधक संग अंकक बोध विद्यार्थीक सिरमे रोपै छैथ तहिना ने किसान परिवारक अभिभावक अप्पन बच्चाक सिरमे किसानी जीवन शिरोधार्य करबै छैथ। भलेँ सभ नइ करैथ। सरकारी नोकरीक लोभमे पटवागिरीसँ लऽ कऽ नोकरीगिरी तकक संस्कार सेहो देल जाइते अछि। मात्र किसान परिवारक जीवन गाथा कहै छी।

बिना किछु बजने विश्वनाथ बाबा सुधीरक हाथसँ मोबाइल लऽ रिसिभ करैत कान लग लेला। आवाज एलैन-

"अपने विश्वनाथ, बाबू?"

विश्वनाथ बाबा बजला-

"हँ, अपने के बजै छी?"

आवाज एलैन-

"हम लक्ष्मीपति विद्यालयक प्रिंसिपल बाजि रहल छी।"

ओना, 'प्रिंसिपल' सुनि विश्वनाथ बाबा धकमकेला, मुदा जखन आँखि उठा चौबगली छिड़िऔलैन तखन अपने मन मानि गेलैन जे जहिना गबैया-नचनिया, खेलौड़िया-धुपौड़ियाक बाढ़ि आबि गेल अछि तहिना प्रिंसिपलक सेहो बाढ़ि आबि गेल अछि.! विश्वनाथ बाबाकेँ अप्पन समय मोन पड़लैन। मोन पड़लैन जे गनल-गूथल कौलेजमे प्रिंसिपल होइ छला आ बाँकीमे इंचार्य वा विभागाध्यक्ष होइत रहैथ, मुदा आब तँ नर्सरी विद्यालयसँ लऽ कऽ कौलेज तक प्रिंसिपलक बाढ़ि आबिये गेल अछि.! अपने मन अपना मनकेँ बुझा लेलकैन। जइसँ विश्वनाथ बाबाक मन मानि गेलैन जे लक्ष्मीपति विद्यालयक प्रिंसिपल बाजि रहला अछि। विश्वनाथ बाबा बजला-

"अपनेक की आदेश भऽ रहल अछि?"

प्रिंसिपल साहैब बजला- "काल्हि अपना विद्यालयमे क्रिकेटक फाइनल

मैच छी, जइमे कमिटी विचार केलैन अछि जे अपनेक हाथसँ पुरस्कारक वितरण होइ, सएह आग्रह।"

सौन मासमे जहिना धपधपौआ रौद उगल रहैए आ तैबीच पूरबाक सिहकीपर एक चिरकी मेघ उठिकऽ धीरे-धीरे पसरैत-पसरैत सौंसे अकास पसैर जाइए आ झाँट-बिहाड़िक संग ठनका-बिजली अनघोल करए लगैए तहिना विश्वनाथ बाबाकेँ मनमे अनघोल उठए लगलैन। देखिये रहल छला जे एक समय छल जखन लोक भरि-भरि दिन ताश खेलाइ पाछू बेहाल रहै छल, अखनो ठाम-ठीम अछिए, ऐठाम ई नइ बुझब जे ताशक फ्लस खेल-दे कहै छी जे जुआक पाशा सेहो छी, आजुक परिवेशमे ताश खेलेनिहारक अपेक्षा विरोधो केनिहार आ गारियो पढ़निहार बेसी भइये गेला अछि, तँए ताशक स्थिति मरनासन्न अछिए। एकर माने ई नइ बुझब जे पहिने जे तीर्थस्थानक जगताजोड़ छल सेहो आब अखन परबा-पौरुकीक खोंता बनल जा रहल अछि।

जहिना ठनकाक आवाज सुनि अनेरो लोकक हाथ माथपर चढ़ि मुहसँ 'साहोर-साहोर' करए लगैए तहिना विश्वनाथ बाबाक मनमे उठलैन। एकाएक अप्पन मात्रिकक ममियौत भाए मोन पड़लैन। मोन पड़िते मुहसँ फुटलैन-

"वाह रे माइक लाल.!"

ओना, विश्वनाथ बाबाक मुहसँ अनायास 'वाह रे माइक लाल' फुटलैन मुदा जिज्ञासा तँ जगबे करत किने जे 'की माइक लाल?'

विश्वनाथ बाबाक मात्रिक ओहन गाममे छैन जे गाम पूबसँ कोसीक पेट आ पच्छिमसँ कमलाक पेटमे बसल अछि। पाँच साए घरक गाम बारह साए बीघा जमीनमे बसल अछि। स्कूल-कौलेजक तँ गाममे अता-पता नहियेँ अछि जे सालक छअ मास आन-आन गामसँ सम्बन्ध सेहो कटल रहिते अछि। ओही गाममे माने हिम्मतपुरमे विश्वनाथ बाबाक मात्रिक छैन। विश्वनाथ बाबाकेँ तीनटा ममियौत भाय छैन। तीनू भाँइमे दस बीघा जमीन सेहो छैन। पढ़ै-लिखैक चलैन गाममे तेनाहे सन अछि। मुख्य रूपसँ गामवासी खेती करै छैथ आ महींस रखने छैथ। विश्वनाथ बाबाक ममियौत भाए अप्पन जीवनकेँ, माने खेती आ महींस पोसबकेँ, अप्पन परिवार-खनदानक इज्जत बुझि अप्पन जीवन-धारण केने छैथ। ऐठाम ई नइ बुझब जे साए-साए, पँच-पँच साए बीघा जमीनबला भीख मांगबकेँ जीवन-धारण कए अप्पन बपौती सम्पैतकेँ मजाक बना मजाक नहि उड़ा रहल

अछि.! खाएर जे अछि तइसँ विश्वनाथ बाबाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अप्पन ममियौत भाइक साहस आ जीबठपनसँ। विश्वनाथ बाबाकेँ ओहिना मोन पड़लैन जे सालक-साल ममियौत भाए सबहक खेतक धान दहाइ छेलैन आ सत-सत बेर रोपल खेतकेँ फेरसँ रोपै छला मुदा कहियो हिम्मतपस्त नइ होइ छला। आन गामक खेत जे सालमे तीन-तीन बेर कहियौ आकि सालो-सालक कहियौ, उपजाक भूम बनल रहैत तैठाम हिम्मतपुरक किसानक खेत जे छअ-छअ मास अठ-अठ मास धरि पानिक तरमे डुमल रहने मिथिलाक नारी अहिल्या जकाँ लाजे कठुआ-कठुआ पाथर बनि गेल अछि, सएह ने हिम्मतपुर गाम छी।

विश्वनाथ बाबा बजला-

“बजैमे धकमकाइ किए छी, बाजू-बाजू। जे आदेश हएत तेकरा निमाहैक प्रयास करब।”

विश्वनाथ बाबाक विचारक सह रंगलाल बाबूकेँ माने प्रिंसिपल साहैबकेँ भेटलैन आकि की, से तँ वएह जनता, मुदा मनमे एहेन उत्किर्णा तँ जगिये गेल छेलैन जे अपने जे किछु कऽ रहल छी ओ बालहितक लेल कऽ रहल छी। अपने मनक विश्वास ने लोककेँ अप्पन बिसबासू सेहो बनबैए..।

रंगलाल बाबू बजला- “काल्हि अपने विद्यालयक खेलक बिसरजनक उपलक्ष्यमे आयोजित सभाकेँ सुशोभित करिऐ। कमिटीक विचार छैन जे विश्वनाथ बाबूक हाथसँ पुरस्कारक वितरण हुअए.?”

रंगलाल बाबूक विचार सुनि विश्वनाथ बाबाक अप्पन मनक विचारक आगि जेना धधैक उठलैन। धधैक ई उठलैन जे जखन बाल-धनसँ धरती धन्य-धान हएत तखन ने ओकर भविष्य धनक मर्मकेँ बुझि ज्ञान-धनक बलि चढ़त। मुदा जैठाम खेल-धनक पाछू परिवेश विकराल रूप धारण केने जा रहल अछि तैठाम अपनो भरि तँ परहेज करबाके ने समयोचित हएत। दुनियाँमे खेलक अनधोल तँ उठले अछि, मुदा तैबीच अपनो विवेक-विचारकेँ जगाएब ने जरूरी अछि।

एका-एक विश्वनाथ बाबाक मन दृढ़ निश्चयपर पहुँच गेलैन जे अप्पन जे अखन तकक जीवन बनल चलि रहल अछि ओ एक दिशाक दृष्टिपात करैए, तैठाम जँ कमला-कोसीक बाढ़िमे भँसिया जाइ ई केतेक उचित? विश्वनाथ बाबाक मनमे विचारक दृढ़ता ठाढ़ भेलैन। रंगलाल बाबूकेँ उत्तर दैत कहलखिन-

“हम अपनाकेँ ओइ पुरस्कार वितरणक भगिताक योग्य नइ बुझै छी, तँए हमर उपस्थिति नइ रहत।”

अपना जनैत विश्वनाथ बाबा ऐ दुआरे एना बजला जे अखुनका जे परिवेश बनि रहल अछि ओ टकरावक स्थिति सन। धन्य-धान्यसँ पूरित होइक बच्चाकेँ खेल-धनक पाछू पगला रहल अछि, तैठाम तँ लोक अपनो भरिक रक्षा करबे करत किने। मनुक्ख भेड़ा-भेड़ी नइ ने छी जे सोझे देखा-देखी धँसनाक धसानमे चलि जाएत।

रंगलाल बाबू बजला- “बहुत आशा छल, मुदा..!”

निधोख होइत विश्वनाथ बाबा बजला- “आशा-ताशा किछु ने। होटलक प्रेमिकाक आशा ओतबे काल ने जेतेकाल होटलमे छी। नइ तँ वएह प्रेमिका धक्का मारि कात कऽ दइए। तँए, फूसिक आशाक कोनो मोल नहि, बुढ़ापासँ पहिनहि वृद्ध घोषित भऽ जाएब आ सड़कक कोनो नालीमे गिरल बपराहैर काटैत रहब.!”

रंगलाल बाबू बजला- “अपनेक आशा छोड़ि दी, सएह ने?”

हँसैत विश्वनाथ बाबा बजला- “सोल्होअना छोड़ि दिअ। कियो अपना करनीसँ जीवनक माला गुंथैए। अहाँकेँ बुझले अछि जे हम किसान छी, धानक कमठौन पछुआ गेल अछि। हम ओकरा धन बुझै छी जइसँ धन-धान्य हएब।”

तैबीच दस बर्खक सुधीर आग्रह करैत बाबाकेँ कहलकैन- “बाबा, जन लगाकऽ कमठौन करा लेब। चलू ने हमहूँ संगे चलब।”

पोताक विचार सुनि विश्वनाथ बाबा बजला- “बौआ, मनुक्ख धन्य-धन्य तखन होइए जखन ओ धनकेँ धन बुझैए।” ❑

चपरासी गाम

✳

चपरासी गामक नामकरण कहिया भेल, तेकर तँ नमहर इतिहास नहि अछि मुदा नहियेँ अछि सेहो केना नहि कहल जाएत। से तँ अछिए। ओना, गामक लड़ाइ-दंगाक इतिहास नम्हरो-नम्हरो अछि आ मोट-मोट किताबमे सेहो चरचा अछिए मुदा गामक नामक इतिहासक एहेन पृष्ठभूमि नहियेँ अछि तँए इतिहासक विषय रहितो छोट अछिए। कहब छोट किए अछि? गामक नामक इतिहास गामक लोकसँ माने समाजसँ जुड़ल प्रश्न अछि तँए समाज परिवर्तनक संग गामक नामक इतिहास बदलैत रहैए। प्रश्न अछि जे समाज परिवर्तनक की स्रोत अछि? समाज परिवर्तनक स्रोत अछि बेवस्थाक परिवर्तन। ओना, बेवस्थाक परिवर्तनक स्रोत ओइठामक मनुक्खक व्यवस्थित रूप परिवर्तित भेने होइए, मुदा ओ होइए सत्ता सूत्रक बेवहार बदलने। से अखन नहि, अखन बस एतबे जे चपरासी गामक नाम 'चपरासी गाम' केना पड़ल।

जेकरा आइ चपरासी गामक नामसँ जनै छी, ओकर इतिहास चौड़गर तँ नहि अछि मुदा नमगर तँ अछिए। आठ-नअ साए बरख पूर्व ओइ गामकेँ, तेतैर गाछक संख्या बेसी रहने, तेतैरबोनी कहल जाइ छल। गामक नाम तँ ताबे अंकित नहि भेल छल, किए तँ कोनो धरती गाम तखन बनए लगैए जखन ओइ धरतीपर लोकक बास हुअ लगै छइ। माने जखन ओइठाम स्थायी रूपसँ लोक रहए लगै छैथ। ओना, सरकारी बेवस्थानुकूल सेहो गामक नामकरण होइते अछि, मुदा से होइए सत्ता स्थलक सर्वे भेलापर। अपना ऐठाम अखन धरिक इतिहासमे तीन बेर सर्वे भेल अछि। पहिल भेल अकबर बादशाहक समयमे, दोसर बेर भेल अंगरेजी शासनक समयमे आ तेसर भेल देश स्वतंत्र भेलापर। जहिना पहिलुका सर्वे अधखिज्जू भेल तहिना दोसर अधपक्कू भेल। तेसर तँ अखन लटकले अछि, तँए

एकरा अधसिइझू कहि सकै छी। सीझत आकि नइ सीझत से तँ अबैबला दिन बुझत, अखन तँ ओतबे ने मानब। ओना, देखिते छी जे जहिना कमला-कोसी साले-साल गाम-गामक मुँह-कान काटैए तहिना रोड-सड़क सेहो काटिये-छाँटि रहल अछि। खाएर जे अछि से अछि मुदा चपरासियो गाम नइ अछि सेहो थोड़े नहि कहल जाएत, ओ तँ अछिए। अहाँ कहबै तैयो आ नहि कहबै तैयो, माने खिसिया कऽ अधला गाम कहि भोरे-भोर आकि भिनसरसँ साँझ धरि नाम नहियेँ लेबै तैयो, चपरासी गाम रहबे करत।

जन्मा छी कि अजन्मा से तँ चपरासी गामक लोक अपन तकता मुदा तइसँ पहिनौं आ अखनौं लोक जनबो करै छैथ आ मानितो तँ छथिए जे पहिने तेतैरबोनी गाम छल, पछाइत चपरासी गाम भेल। बुझल अछिए जे जैठामक जेहेन माटि-पानि रहल तइ अनुकूल ओइठाम गाछो-बिरीछ आ बोनो-झाड़ होइते अछि। बाढ़िक इलाकामे कि लोक बैशाख-जेठक रौदसँ बँचैले अन्डीक गाछ नइ लगबै छैथ, सेहो केना नकारल जाएत, से तँ लगैबिते छैथ। तेतैरबोनी गामक माटिमे आन गामक माटिक हिसाबसँ ऊसरपन बेसी अछि। उसरपन भेल उसराह, माने जैठामक माटिमे नूनपनक मात्रा बेसी होइए। नोनछराह माटि तेतैर आ कुश लेल अनुकूल भेबे कएल। ऐठाम चाणक्यक चर्च नइ करै छी। जे जिद्द बान्हि कुश उपटबैमे लागि गेला। ऐठाम एतबे बुझू जे तेतैरबोनी, जे अंगरेजी शासनक सर्वेक दगाएल नाम छी, आइ ओ चपरासी गामक नामसँ जानल जा रहल अछि।

देश आजाद भेला पछाइत मुनिलालकेँ ब्लौक ऑफिसक कृषि विभागमे चपरासीक पदपर बहाली भेलैन। तइसँ पहिने तेतैरबोनीमे किनको सरकारी विभागमे नोकरी नइ भेल छेलैन। ओना, गाममे पढ़ल-लिखल लोको नहियेँ छला, तँए लोअरो प्राइमरीक शिक्षक धरि कियो नहि बनि सकल छला। कहब जे एको गोरे नोकरी नइ करै छला सेहो बात नहियेँ अछि। जोगबनीक जूट प्रेस, फारविसगंजक पटुआ चटकलमे तँ काज करिते छला। ओना, लवहदक चीनी मिलमे सेहो एक गोटा नोकरी करैत रहैथ मुदा हुनकर नोकरी छअमसिया रहैन।

प्रखण्ड ऑफिसमे नोकरी भेने मुनिलाल ऑफिसक सभ चालि-ढालि सीखि लेलैन। एक तँ अविकसित बेवस्था रहने ऑफिसमे काजो कम छल आ दोसर कारण ईहो भेल जे तेहेन लोकक हाथमे कार्यालयक भार पड़लैन जे अपने ओहन परिवारसँ आएल छला जिनका अप्पन पैतृक परिवारक काम-काज जन-

बोनिहारक हाथे चलै छेलैन जइसँ अप्पन जवाबदेही आ अपना काजसँ भेँट सेहो नहियेँ भेल छेलैन तँए अप्पन क्रियमान शक्ति सुतले रहि गेलैन।

ऑफिसक देखा-देखीसँ मुनिलालो एहेन भइये गेला जे दरमाहा उठबै दिन सोल्होअना मुस्तैज रहै छला बाँकी दिनकेँ बाँकीए बुझि नोकरी करैत आबि रहल छला। जइ ऑफिसमे काज करैबलाक बीच ताल-मेल रहैए तइ ऑफिसक काज ने नियमित चलैए, मुदा जैठाम से नइ रहत तैठामक काज बेठेकान भइये जाएत किने। यएह हाल मुनिलालक ऑफिसक सेहो छेलैन। सरकारी नोकरीक छाप लगने सभकियो, माने ऑफिसक स्टाफ सभ, अपना-अपनीकेँ मलिकाना रूआब पकैड़िये नेने रहैथ। संयोगसँ एक दिन उच्च पदाधिकारीक हाथे ऑफिसक जाँच भेल, मुनिलाल दोषी भेला। दोषीकेँ जेल हेबेक चाही। आदेश भेल जे चपरासीकेँ जेल भेजल जाए।

थानाक चारि गोट सिपाहीकेँ आदेश भेल। अधिकार पत्र नेने सिपाही मुनिलालकेँ एरेस्ट करैले तेतैरबोनी पहुँचल।

तेतैरबोनी गामक शुरुहेमे एकटा पोखैर अछि। ओइठाम आठ-दसटा जनिजाति छेली। किछु जनिजाति नहेबो करै छेली आ किछु महारपर बैस गपो-सप्प करै छेली।

एकटा सिपाही एक गोरेकेँ पुछलकैन-

“चपरासीक घर केतए अछि?”

गाम तँ अखनो ओहन अछिए जे अप्पन बड़प्पन बढ़बै दुआरे अपना कर्मभूमिकेँ सेहो लोक छिपैबते छैथ। तहिना अपना ऐठामक चलैनमे ईहो अछिए जे कोनो बात जँ महिलासँ पुछबैन तँ ओ मुहँ-लागल जवाब नइ दइ छैथ। अधिकांश महिला ओहन छथिए जे ‘हँ, हूँ’ किछु बजबे ने करै छैथ। सिपाही अप्पन प्रश्नक उत्तर नइ पौलक। नइ पबैक दोसर कारण ईहो भेलैन जे चारू सिपाहीक जे हबलदार रहथिन, ओ सुधरल गामक रहैथ। सिपाही सभकेँ कहलखिन-

“जइ घाटपर लोक नहाइत हुअए, खासकऽ स्त्रीगण, तैठाम ठाढ़ भऽ गप-सप्प करब उचित नहि। ऐठामसँ आगू बढ़ि गाम दिस चलू।”

हबलदारक संग चारू सिपाही आगू बढ़ला। ऐठाम परिवेशक अनुकूल एकटा बात आरो अछि। ओ अछि जे अखुनका जे बाट-घाट आकि दसगरदा

स्थानक जे गति-विधि बनि गेल अछि, माने जूत्ता-चप्पलक चोरीसँ लऽ कऽ मनीबैग, मोबाइल धरिक, ओ एहेन बनियेँ गेल अछि जे बिना सिपाहीए काज नइ चलत। बाट-घाटक यएह स्थिति अछि, तँए जँ सिमरिया घाटपर सिपाही ठाढ़ो रहैथ तँ तइसँ उपकारे हएत, अपकार नइ हएत।

बुझल बात अछिए जे ऑफिसक बड़का हाकिमपर ने कानूनी कार्रवाइक डेग छोट होइए मुदा किरानी-चपरासीक संग तँ से नहि अछि। साते दिनक बीच, केतबो मुनिलाल सिपाहीसँ बँचैले राति-के आमक गाछीमे नूकाकऽ सुतला मुदा पकड़ा गेबे केलाह।

जहल गेला पछाइत रंग-बिरंगक हवा गामो आ आनो-आन गामक संग ऑफिसोमे उठल। रंग-बिरंगक नाच-तमाशा शुरू भेल, कियो बजैत-

“मुनिया गाम घिनौलक.!”

कियो बजैत-

“मुनी भाय गामक नाम उजागर केलैन। किएक तँ अप्पन गामकेँ कियो तेतैरबोनी नामे थोड़े जनै छल। कियो तेतराहा कहैत रहए तँ कियो तेतैरखौक।”

ओना, मुनिलालक चर्च गामक मर्दक बैसारसँ बेसीओ आ नम्हरो औरतक बैसारमे चलए लगल, मुदा तइसँ इतर मर्द-औरतक सयुक्त बैसारमे सेहो चलए लगल।

गामक स्त्रीगणक कटौज मुनिलालक पत्नी- चुनमुनकेँ बताह बना देलकैन। मुनिलाल जहल नइ गेला कि चुनमुनकेँ कियो डाइन कहए लगलैन तँ कियो जोगीन, कियो सैंयडाही कहए लगलैन तँ कियो सॉंयखौकी।

जहिना कोनो समाजमे, माने गाममे, नव काज भेने जन-जनमे नवता अबैए, तहिना तेतैरबोनीमे सेहो नवता आएल। नवते तँ कोनो गाम-समाजक विकास-प्रक्रियाक सूत्र छी। ओना, समाजक स्थिति तँ यएह अछि जे ‘सैंयो नीक बेटबो नीक किरिया केकर खाएब’। समय छल जखन धर्मस्थलक रूपमे गामक पोखैर-इनार छल। इनार तँ कम जगहक वस्तु भेल, मुदा पोखैर तँ नमहर-नमहर छलो आ अछियो जइमे बेसी जमीन मारल जाइ छल। कहब जे जखन नहाएबे टा पोखरिक काज छल तखन एते नमहर-नमहर पोखरिक कोन खगता? तहिना ईहो प्रश्न अछिए जे अप्पन पूर्वज पोखरिक महत्व बुझि पोखैर किए खुनौलैन आ

आइ ओइ पोखरिक की रूप बनि गेल अछि? खाएर जे भेल सेहो नीक आ जे नइ भेल सेहो नीक, मुदा आजुक जे अराजक परिवेश बनि गेल अछि, से तँ अपने सभ ने बुझबै? पाँच किलो चाउर-गहुम नइ भेटत तँ केतेको परिवारक उसरन-बिसरन भऽ जेतैन, मुदा दुनियाँक पाँचम समृद्धशाली देशक ढिढोरो तँ बजिते अछि। जैठाम भोजनक स्थिति एहेन अछि, तैठाम जीवनक बुनियादी खगताक की स्थिति अछि आकि हएत, सेहो ने बुझए पड़त।

जेना-जेना मुनिलालकेँ दुतकार पड़ैत गेलैन, तेना-तेना तेतैरबोनी गामक रंग सेहो मेटाइत गेल, जइसँ अड़ोस-पड़ोसक गौंआँसभ तेतैरबोनीकेँ ‘चपरासी गाम’ कहए लगला। ❑

रोजगार

✳

चारि बजे भोरेमे गुलेतियाक नीन टुटि गेल। नीन टुटिते उठिकऽ गुलेतिया घरसँ निकैल बाहर आएल तँ देखलक जे अन्हार पसरले अछि। ओना, पछवारि टोलक मुर्गा-मुर्गीक आवाज सेहो गुलेतियाक कानमे पड़ि रहल छेलै मुदा ई नइ बुझल छेलै जे मुर्गा-मुर्गी कए बजेमे वाङ्ग दइए, किए तँ ने अखन तक ओकर समय बुझैक जरूरत पड़ै छै आ ने घड़ीए रखने अछि जे समयक ठेकान पबैत।

अन्हार देखि गुलितिया पुनः ओछाइनपर आबि पड़ि रहल। तैबीच कबुतरीक नीन सेहो टुटि गेल। नीन टुटिते कबुतरी खोंखी केलक। पत्नीक खोंखी सुनि गुलेतिया बाजल- “रहुआवाली, भोर भऽ गेल?”

भकुआएल रहुआवाली बाजल- “नइ, अखन बड़ राति अछि।”

पत्नीक उत्तर सुनि गुलेतिया चुप भऽ ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सोचए लगल। भगवान दुख हेर लेलैन। दस हजार रुपैआ रोजगार करैले सरकार दिससँ भेटल अछि। तेहेन रोजगार करब, आ कमाएब जे अखन तकक जे दरिद्रता अछि ओ मेटा जाएत।

रुपैआक आमदनीसँ गुलेतियाक मनमे खुशीक चपचपी रहबे करइ। जइसँ नीन निपत्ता भऽ गेल रइह। मनमे अनेको विचार उठै आ सौनक बर्खाक पाइनिक बुलबुला जकाँ अपने फुटियो जाइ। जइसँ मन असथिरे ने होइ जे केहेन रोजगार करब।

अखन धरिक जीवनमे गुलेतिया हरवाहि छोड़ि दोसर कोनो काज ने गिरहस्तीक जनै छल आ ने कहियो केनहि छल। छोट-मोट काज हँसुओ-खुरपी आ कुरहैरो-टेंगारीक जरूर केनौं छल आ करितो अछि मुदा सेहो जीवनी जकाँ

नहि, अनाड़ीए जकाँ बाँसो काटैत अछि आ काँच-सुखल जरना सेहो टोनि-फाड़ि लैत अछि। ओना, धनकटनी, गहुम कटनीक संग रब्बी-राइ सेहो उखाड़ि लैत अछि, मुदा से करैत अछि पत्नीक देखा-देखीसँ।

जहिना गुलेतियाक मनमे रुपैआ देखि चपचपाएल अछि तहिना कबुतरीक मनमे सेहो चपचपी छेलइ। अखन तक गुलेतिया ई नइ बुझि पेने छल जे जनतंत्रमे एक-एक जनक भागीदारी शासन तंत्रमे सेहो होइए। जइसँ देशक कुल सम्पैतिक एक हिस्सेदार सेहो छी। बुझियो केना पबैत? आइ धरिक जे अपना देशक इतिहास रहल अछि ओ ओहन रहले अछि जे शासन-तंत्रसँ जनमानस हजारो कोस दूर रहल अछि।

जहिना जीवनमे किछु एलासँ मनमे खुशी होइए, माने जीवनक कोनो उपलब्धिसँ मन प्रसन्न होइए, तहिना दुनू परानी–गुलेतिया–क मन आनन्दित छल। पतिकेँ पत्नी पुछलक- “ऐ रुपैआसँ कोन रोजगार करब?”

ओना, रोजगारक अर्थ गुलेतिया नीक जकाँ नहियेँ बुझि रहल अछि मुदा जहियासँ दस हजार रुपैआक चर्च गाम-गाममे उठल तहियासँ ईहो चर्च उठबे कएल जे दस हजार रुपैआ सरकार सभकेँ रोजगार करैले देत तँए रोजगार शब्दक बोध दुनू परानी कबुतरीकेँ भइये गेल अछि। अधखड़ुआ लोक, जेकरा थोड़-थार बुझलो रहै छै आ थोड़-बहुत नहियोँ बुझल रहै छै, तेकरा जकाँ गुलेतियाक मनमे नइ भेल। निर्मल मन गुलेतियाक छेलैहे, पत्नीक प्रश्नक उत्तर दैत बाजल- “बच्चामे दादी सदिकाल कहैत रहै छेली जे बौआ जे विचार आकि जे काज अपने नइ बुझी ओ दोसरसँ पुछि ली। तँए नीक हएत जे चेतनानन्द बाबासँ पुछि लिऐन।”

ओना, कबुतरीक मनमे सेहो जितवारपुरवाली काकीक ओ विचार नाचियेँ रहल छेलैन जे एक दिन सुनने छेली। जितवारपुरवाली काकीक मुहसँ कबुतरी सुनने छेली जे एकटा नव पुतोहु सासुकेँ पुछलखिन- “माए, सागक तीमनमे केते नून देब?”

सासुक मन तइ समय गरमाएल छेलैन, माने कोनो बात लऽ कऽ तामस उठल छेलैन, तँए ओ खिसिया कऽ पुतोहुकेँ कहि देलखिन- “अधाकिलो नून दऽ दियौ।”

संयोग एहेन बनले छल जे आधा किलोबला नूनक पैकेट दोकानसँ

आएले छेलैन; पुतोहु सभटा नून सागमे दऽ देलखिन। चारि गोरेले सागक तीमन बनि रहल छल, ओ नूनसँ जहर भऽ गेल।

खेबाकाल जखन सासु कहलखिन जे कनियाँ घरमे नून नइ छेलए जे सागमे दैतिऐ। तखन सासुक प्रश्नक उत्तर दैत पुतोहु कहलखिन- "अदहे किलोबला पौकेट नूनक छल, ओ तँ दइये देलिऐ, तैयो जँ अनोने रहि गेल तँ हम की करितिऐ।"

पुतोहुक बात सुनि सासु मने-मन तमसा कऽ रहि गेली। किए तँ बाजल अपने छेलैन। कबुतरीक मनमे यएह विचार जगि गेल छेलैन जे जँ तेसरकेँ पुछबैन आ जँ ओ एहने विचार दऽ दैथ; तखन तँ रोजगार रोजगारे रहि जाएत आ पाइयो उड़ि जाएत।

मने-मन कबुतरी विचार करैत पुरुखक वर्चस्वकेँ स्वीकार करैत बजली- "अहाँक जे विचार हएत सएह ने हमरो विचार हएत।"

पत्नीक सहमत सुनि गुलेतियाक मन मानि गेल जे चेतनानन्द बाबासँ विचार लेब बेसी नीक हएत। गप्पे-सप्प करैत भोर भऽ गेल।

एक लग्गी सूर्य जखन ऊपर चढ़ला तखन गुलेतिया चेतनानन्द बाबा ऐठाम विदा भेल। गुलेतियाक घर आ चेतनानन्द बाबाक घरक दूरी बीघा दुइयेपर अछि।

चेतनानन्द बाबा घरक बगलेक बाड़ीमे कोबी कमा रहल छला। ओना, उमेरसँ चेतनानन्द बाबा साठि बरख पार कऽ चुकल छैथ मुदा अखनो हुनकर जीवनक क्रियाक गति वएह छैन जे जवानीमे छेलैन। अन्तर खाली एतबे भेलैन अछि जे जवानीमे चरि-चरि-पँच-पँच घन्टा एकलखाइत कोदरवाहि कऽ लैत रहैथ, तेना आब नइ होइ छैन। मुदा ईहो तँ मन मानिते छैन जे काजो तँ काज छी। सभ रंगक काजो होइते अछि। किछु काज एहेन होइए जइमे शारीरिक श्रम बेसी लगैए आ किछु काज एहेन होइए जइमे शारीरिक श्रम कम लगैए। जहाँ तक उपैत–उत्पादन–क प्रश्न अछि ओ निर्भर करैए वस्तुपर।

चेनतानन्द बाबाक दरबज्जापर पहुँच गुलेतिया चारू दिस आँखि उठा-उठा ताकए लगल; तँ देखलक जे चेतनानन्द बाबा बाड़ीमे कोबी कमठौन कऽ रहल छैथ। दरबज्जापर सँ आगू बढ़ि गुलेतिया कोबी खेत पहुँचला। गुलेतियाकेँ देखि चेतनानन्द बाबा बजला- "केम्हर सुर्ज उगल गुलेती जे भोरे-भोर देखै

छिअ?”

गुलेतियाक मनमे खुशी छेलैहे। हँसैत बाजल- “बाबा, अहींसँ एकटा विचार मांगए एलौं हेन।”

विचार मांगब सुनि चेतनानन्द बाबाक मनमे उत्साह जगलैन। उत्साहित होइत बजला- “गुलेती, हम कोन जोकरक छी जे तोरा विचार देबह। तखन तँ जँ तूँ विचार मांगए एलह तखन जे उकित अछि से तँ देबे करबह।”

गुलेती बाजल- “बाबा, अखन तकक जीवनमे खेती-पथारीक काज छोड़ि दोसर कोनो काज नहि केलौं। अपना समाजमे सभ दिनसँ लोकक मुहसँ यएह निकलैत रहल जे वणिज–व्यापार–बनियाँ जाइतिक कर्म छी, अपना सभ जाइतिक तँ छी नहि, तैठाम जे दस हजार रुपैआ रोजगार करैले भेटल अछि, तइसँ की करब।”

गुलेतियाक विचार चेतनानन्द बाबा बुझि गेला। मुदा मने-मन सोचए लगला जे जखन गुलेती सन लोक, जेकरा जीवनक कोनो खास ज्ञान नइ छै, तेकरा जँ किछु कहि देब, सेहो उचित नहि। बेचारा जखन विचार मांगए आएल अछि तखन जँ ओकरा एलहा फल नहि भेटत; सेहो केतौसँ उचित नहियेँ हएत। मुदा लगले मनमे उठलैन जे आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि तइमे दस हजार रुपैआक मोले की रहि गेल अछि। एक-पर-एक पैसाबलासभ रोजगार-व्यापार कऽ रहल अछि, तैठाम कम पाइबलाक व्यापार केना चलि सकैए.! देखै छी जे परिवार-परिवारमे एक नहि तीन-तीन, चारि-चारि मोबाइल आबि गेल अछि, जेकर कीमत पचासो हाजारसँ ऊपर अछि, महीने-महिना रिचार्य करबैमे हजार-दू-हजार रुपैआ लगि रहल अछि, तैठाम दस हजार रुपैआक कोन मोल अछि जइसँ जीवन ठाढ़ भऽ आगू बढ़त..। चेतनानन्द बाबा कहलखिन- “गुलेती, समय छल जखन लोक एक साए रुपैआक कारोबार करै छल आ अप्पन पाँच गोरेक परिवार चलबै छल। मुदा आब ओ समय रहल नहि जे कम पूजीसँ कियो रोजगार करत आ ओइसँ परिवार चला उन्नैत करत। अप्पन की विचार छह?”

अनाड़ी गुलेती जे कहियो कोनो रोजगार नहि केने छल, बाजल- “बाबा, अपना तँ कोनो लूरि नइ अछि, तँए अहाँसँ पुछए एलौं हेन।”

गुलेतीक विचार सुनि चेतनानन्द बाबाक मनमे साँप-छुछुनैर जकाँ भऽ गेलैन। साँप जखन छुछुनैरकेँ पकैड़ लइए, तखन ओकर गन्धसँ ओकरा बोध

होइ छै जे जँ मूस जकाँ खा लेब तँ मरिये जाएब आ जँ दाँतसँ पकड़ल छुछुनैरकेँ छोड़ि देने आन्हर भऽ जाएब। जहिना मुइने जीवनक अन्त तहिना आन्हर भेने सेहो जीवनक अन्त, भइये जाइए..! चेतनानन्द बाबाकेँ किछु फुरिये ने रहल छेलैन जे गुलेतीकेँ की जवाब देथिन। कनीकाल मने-मन विचार केलाक बाद चेतनानन्द बाबाकेँ अपने मनमे उठलैन जे नीक हएत अखन जे सभ समाजक बीच समाज-सेवा कऽ रहला अछि, तिनकासँ विचार करए गुलेतीकेँ पठा दिऐ। चेतनानन्द बाबा बजला- “गुलेती, आजुक युगक अनुकूल आब अप्पन विचार नइ रहल। या तँ अप्पन विचारक अनुकूल परिवेश नइ अछि वा परिवेशक अनुकूल अपने नइ छी, तँए तोरा स्पष्ट कहि दइ छिअ जे जइ आशासँ तूँ हमरा पुछए एलह हेन, से हमरासँ सम्भव नहि हेतह। तूँ रामसेवक लग चलि जा ओ तोरा कोनो-ने-कोनो रस्ता देखा देतह।”

गुलेतीकेँ जहिना चेतनानन्द बाबा विचार देलखिन तहिना गुलेती रामसेवक ऐठाम विदा भेल। रामसेवक ऐठाम पहुँचते गुलेती देखलक जे पान-सात आदमी आरो अछि। गुलेतीकेँ देखिते रामसेवक पुछलखिन- “तेतर, केम्हर-केम्हर एलह?”

गुलेती कहलकैन- “नेताजी, दस हजार रुपैआ जे भेटल, तइसँ कोन रोजगार करब?”

रामसेवक–नेताजी–हँसैत बजला- “गुलेती, तूँ सभ दिन गमैया-क-गमैये रहि गेलह। दस हजार कम पूजी भेल। देखै छी जे बिनु पूजीक लोक भांग बेचैए आ पान साए-हजार रुपैआ डेली कमाइए। जँ तूँ से नइ करए चाहै छह ते एकटा बच्छा कीनि ओकरा बसहा बड़द बना गामे-गाम घुमह। भरि दिनमे तेते कमा लेबऽ जे केहेन-केहेन पढ़ल-लिखल ओते नइ कमा पबैए।”

गुलेती बाजल- “सएह।”

रामसेवक बाजल- “हँ, सएह।” ❑

न्याय चाही

✷

झूनाएल धान जकाँ पचासी बर्खक शम्भु काकाकेँ ओछाइन छौड़ैसँ पहिनहि मनमे उठलैन जे आब तँ चल-चलौए छी, से नहि तँ जिनगीक अपन हिसाब-किताब दैये दिऐ, सएह नीक। नै तँ शासनक कोन बिसवास केकरो दोख गारा मढ़ि सजा केकरो भेटै छइ। मुदा सोझहामे एते तँ जरूर हएत जे अपन बात अपने रखि सकै छी। तैपर जँ नहि मानत तँ हमहूँ नइ मानबै। लड़ि मरी कि सड़ि मरी; शेषे कथी बँचल अछि...।

जहिना नमहर काजमे समैयो अधिक लगैए आ छोट काजमे थोड़ मुदा काज तँ दुनू कहबैए। कियो काहू मगन कियो काहू मगन, मगन तँ सभ अछिए। गंभीर प्रश्नमे ओझराएल शम्भु काका, तँए मन-चित्त आ देह एकबट्ट -

"रहैन।

पत्नी कुमुदनीक मनमे उठलैन जे भरिसक सुतले तँ ने रहि जेता। लगमे पहुँच छाती डोलबैत पुछलकैन-

"अखन धरि किए बिछान पकड़नहि छी?"

पत्नीक स्वरलहरीमे लहराइत शम्भु काका हलैस बजला-

"अखन धरि यएह बुझै छेलौं जे अपने केलहाक भागी कियो बनैए, मुदा.?"

बजैत शम्भु काका ओछाइनपरसँ उठि जहिना उगैत सुरूजक दर्शन लोक दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत करैए तहिना दुनू हाथ जोड़ि पत्नीक आगूमे ठाढ़ होइत दोहरा कऽ बजला-

"माफी मंगै छी, गलती भेल अछि मुदा दोसराक गलती ऊपर मढ़ल गेल

अछि।”

अकचकाइत कुमुदनी, बिनु किछु सोचनहि बजली-

“से की, से की, एना किए भोरे-भोर पाप चढ़बै छी?”

“पाप नै चढ़बै छी जिनगीक जे घटल घटना अछि, तइ निमित्ते मांगि रहल छी।”

“जखन एते कहबे केलौं तखन किए ने मनो पाड़ि देब। अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे बसिया भात खेनिहारि बिसराह होइए मुदा रौतुका उगरल अन्न फेक देब नीक हएत?”

पतालसँ अबैत बलुआएल पानि जहिना छन-छनाइत पवित्र भऽ अबैए तहिना कुमुदनीक विचार सुनि प्रोफेसर शम्भु काकाकेँ भेलैन, बजला-

“अपना दुनू गोरेक एक जिनगी ऐ धरतीपर रहल अछि की नहि?”

“हँ, से तँ रहले अछि। तँए ने अर्द्धांगिनी छी।”

“हमर देहक अर्द्धांगिनी छी आकि जिनगीक?”

“ई बात अहाँ बुझेलौं कहिया जे पुछै छी?”

पत्नीक प्रश्न सुनि प्रोफेसर शम्भु काका सकदम भऽ गेला। मुदा लगले मनमे उठलैन जे टटको घटना बसिया जाइ छै आ बसियो घटना टटका भऽ जाइ छइ। ई निर्भर करैए कारीगरपर। जेहेन कारीगर रहत तेहेन टटकाकेँ बसिया आ बसियाकेँ टटका बनबैत रहत। खाएर जे हौउ। पत्नीकेँ पुछलखिन-

“अपना दुनू गोरे एकठाम केना भेलिऐ?”

“एना अरथा-अरथा किए पुछै छी? जे कहैक अछि से सोझ डारिये कहू। एना जे हरसीकार-दिरघीकार लगा-लगा बजै छी से नइ बाजू। जेकरा नीक बुझबै तेकरा नीक कहब आ जेकरा अधला बुझबै तेकरा अधला कहब। अहाँ लग जे कनी दबो-उनार भऽ जाएत तँ हारि मानि लेब सएह ने हएत, आकि छाउर-गोबर जकाँ छिट्टामे उठा बाध दऽ आएब।”

जहिना पोखरिक पवित्र जलमे स्नान कऽ पूजाक मूर्ति गढ़ि मंत्र पढ़ैत दान कएल जाइत तहिना शम्भु काका बड़बड़ाए लगला-

“जखन हम चौबीस बर्खक रही तखन अहाँ चौदह बर्खक छेलौं। दस

बर्खक अन्तर। आइ धरि कहाँ केतौ देखि पेलौं जे पुरुष-नारीक बीच उमरोक विभाजन भेल। जँ से नहि तँ.? जँ एको औरूदे दुनू गोरे जीब तैयो तँ अहाँ दस बर्ख विधवे बनि रहब। ऐ विधवाक सर्जक के? समाजमे कलंकक मोटरी देनिहार के? की ई बात झूठ जे जइ घरमे जेते कम वस्तु रहै छै आगि लगलापर ओतबे कम जरै छै आ जइ घरमे अधिक वस्तु रहै छै आगि लगलापर जरबो बेसी करै छइ? पचास बर्खक तपल-तपाएल जिनगीक अन्त केना हएत?”

दुनू हाथ जोड़ि शम्भु काका पत्नीसँ माफी मंगलैन।

मुदा जहिना बच्चाकेँ नव दाँत रहने अधिक-सँ-अधिक काज लिअ चाहैत, नव औजार हाथमे एने अधिक-सँ-अधिक काजो आ अधिक-सँ-अधिक समय सेहो संग मिलि बीतबए चाहैत तहिना कुमुदनीक सिनेह आरो जगलैन। बजली-

“माँफी-ताँफी नै मानब? पति छी तँए पुछै छी। एहन गलती भेल किए, से जाबे नै कहब ताबे किछु ने मानब।”

पत्नीक प्रश्न सुनि शम्भु काका स्तब्ध भऽ गेला। मन कछमछाए लगलैन। सत् बड़ कटु होइ छइ। मुदा जँ पत्नियोँ लग सत्यक उद्‌घाटन नै कऽ सकब तँ दुनियाँमे दोसरठाम कइए केतए सकै छी?

शम्भु काका साँप-छुछुनैरक स्थितिमे पड़ि गेला। एहेन कोनो विचार मनमे उठबे ने करैन जइसँ मन मानि लइतैन जे ऐसँ पत्नी मानि जेती। अल्ल-बल्ल किछु बच्चाकेँ कहल जाइ छै, एक तँ सियान कि जे सियानोक ऐगला खाढ़ीमे पत्नी पहुँचल छैथ, दोसर अर्द्धांगिनी सेहो छैथ। कोनो विचारकेँ बलजोरी थोपि नै सकै छिऐन, जँ थोपियो देबैन तँ मानिए लेती सेहो नै कहल जा सकैए। जेते दवाब दऽ कऽ बजैक अधिकार हमरा अछि तेते हुनको तँ छैन्हे। जँ किछु नै कहबैन तखन तँ आरो स्थिति बिगैड़ जाएत। जहिना हुनका मनमे गेंठी जकाँ जनमगाँठ पड़ि जेतैन तहिना तँ अपनो मन नहियेँ बँचत। जँ से नै बँचत तँ आँखि उठा देखि केना पेबैन? जँ से नै देखि पाएब तँ पति कथीक? सिरिफ रंगे-रभसटा तँ पत्नीक सम्बन्ध नै छी? जँ ओतबे मानि बुझबैन तँ पति-पत्नीक सम्बन्ध बुझब थोड़े हएत। पति-पत्नीक सम्बन्ध तँ ओ छी, जहिना जनकक एक हाथ हवन-कुण्डमे आ दोसर पत्नीक करेजपर रहै छेलैन, मुदा जहिना नव जीवनक दिशा विपैतक अन्तिम अवस्थामे भेटैए तहिना शम्भुओ काकाकेँ भेटलैन।

..थालमे गड़ल मोती जहिना जहुरी हाथमे देखिते नयन कमलनयन बनि

जाइत तहिना कक्कोक नजैरकेँ भेलैन। मन मुस्किएलैन।

पतिक मुस्की देखि कुमुदनी मने-मन नमन केलकैन।

जिज्ञासु छात्र जकाँ पत्नीक जिज्ञासु नजैरकेँ देखि प्रोफेसर शम्भु बजला-

“देखू, प्रश्न एकेटा नै घनेरो अछि, जँ एक-एक प्रश्नक उत्तरो दिअ लगब तँ प्रश्ने छुटि जाएत। जँ प्रश्ने छुटि जाएत तखन उत्तरे केना देब। तँए किछु नहि बुढ़िया फूसि।”

पतिक विचार सुनि कुमुदनी अधखिल्लू कुमुदनी जकाँ जइ अवस्थामे भौंरा फरिच तँ देखैत मुदा अधखिल्लू कपाटसँ निकैल नै पबैत, तहिना कुमुदनी असमंजसमे पड़ि गेली।

पत्नीकेँ असमंजसमे पड़ैत देरी प्रोफेसर शम्भुक मनमे उठलैन जे जहिना माटिक ढेपा, गोला, चेका जोड़ि-जोड़ि पैघसँ पैघ बान्ह बान्हल जाइए तहिना जँ बान्हि दिऐन तँ जरूर ठमैक जेती। मुदा मन मानलकैन नहि। पत्नीक बातमे तँ अखन धरि ओझराएल रहलौं। जरूर माए-बापक काज मानल जाएत। मुदा, की हमरे टा परिवारमे भेल आकि दोसरो-तेसरो परिवारमे? जँ एक समाज नहि, एक गाम नहि, अनेक समाज आ अनेक गाममे होइत अछि तँ जरूर दोषक जड़ि केतौ आरो छइ। अन्तए केतए छै से कहि देबैन, मानती तँ मानती, नहि तँ आगू कहबैन नेति-नेति।

जहिना उगैत गुज्जर, उगैत कलशकेँ कहैत जे दुनू गोरे संगे-संग रहि दुनियाँ देखब तहिना प्रोफेसर शम्भु पत्नीकेँ कहलखिन-

“सुनू, सभ बात सबहक नजैरपर सदिकाल नै रहै छै, भऽ सकैए जे जे बात दस-बीस बर्ख पहिने कहि देबाक चाहै छल, से नै कहलौं। अपनो धियानमे नै रहल। जहिना असगरे धान तौलनिहार गनि-गनि तौलबो करत आ उठि-उठि लिखबो करत तँ गिनती-गिनतीमे झगड़ा हेबे करतै, किएक तँ जे जोरगर रहतै ओ मन रहत आ जे अब्बल रहत ओ हेरा जाएत। तहिना ने अपनो दुनू गोरेक बीच अछि।”

“दुनू गोरे” सुनि कुमुदनी कछमछेली। कछमछाइते पाछू उनैट-उनैट देखए लगली।

प्रोफेसर शम्भु बुझि गेला जे शिकारीक वाण सटीक बैसल। जहिना बाल-

बोधक उनटा-पुनटा काज देखि सियानकेँ हँसी-लगैत तहिना प्रोफेसर शम्भुकेँ हँसी लगलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे अपनो पैछला कएल काज मोन पड़ने तँ से होइए। एकाएक मुँह बन्न भऽ गेलैन। आने-आन पुरुख जकाँ अपन पुरुषत्व देखबैत प्रोफेसर शम्भु बजला-

“आइ धरि, अखन धरि कहियो हमरा मुहसँ फुटल जे हम न्यायालयसँ दण्डित भेल जिनगी जीब रहल छी? कियो एको दिन पुछाड़ियो करए आएल जे केना जीबै छी? समाजमे जाधैर बुढ़-बुढ़ानुसक पूछ नै हएत ताधैर समाजक पैछला पीढ़ी नाँगैर पकैड़ वैतरणी पार केना हएत। हँ ई जरूर जे साँपकेँ डोरी नै कही, मुदा विचार तँ हेबाके चाही किने।”

घरमे चौंकल बरतनक ढनमनी जकाँ कुमुदनी ढनमनाइत बजली-

“जखन अहाँ दुनियाँक नजैरमे दण्डित छी तखन.?”

पत्नीक चिन्तासँ चिन्तित भऽ प्रोफेसर शम्भु बजला-

“अखन धरि तँ छिपेने रहलौं जे अपन दोख अहाँकेँ किए दी।”

पतिक बेथासँ बेथित कुमुदनी बजली-

“कनी फरिछा कऽ कहू?”

“सेवा-निवृत्त होइसँ छह मास पहिने प्रिंसिपल बनौल गेलौं। कौलेजक भार बढ़ल। परीक्षा विभाग सेहो छइ। सुननहि हेबे जे केते हो-हल्ला भेल। मामला न्यायालय चलि गेल। गोल-माल जरूर भेल रहइ, जानकारीमे नै रहए। मुदा तैयो जवाबदेहक रूपमे फँसलौं।”

कुमुदनी-

“अहाँक किछु दोष नै रहए?”

प्रोफेसर शम्भु-

“एकदम नहि।”

कुमुदनी-

“फैसला केना भेल?”

प्रोफेसर शम्भु-

“सेवा निवृत्त लग देखि न्यायालय दोषी बना छोड़ि देलक।”

कुमुदनी-

"आ हुनका सभकेँ?"

प्रोफेसर शम्भु-

"कमो दोखबला बेसी सजा पौलक आ बेसियो दोखबला कम सजा पौलक।"

तैपर कुमुदनी पुछलखिन-

"एना किए भेल?"

प्रोफेसर शम्भु बजला-

"जँ पहिने बुझितौं तँ ऐ भीर जेबो ने करितौं, मुदा से नै भेल। जाधैर लिखित-मौखिक रूपमे बेवस्था चलत ताधैर अहिना हएत।" ❑

❑❑❑
❑❑
❑

Notes

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल समकालीन मैथिली साहित्यक विशिष्ट रचनाकार छथि। हुनकर जन्म 5 जुलाई 1947 कें मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे भेलनि। उच्च शिक्षा प्राप्त कएलाक बाद ओ गामहिमे रहि जीवन आ साहित्यक अपन बाट चुनलनि। **जीविकाक लेल खेती, विशेषतः तरकारीक खेती, अपनौलनि।** एहि जीवन-पद्धतिसँ हुनका गाम, खेत-पथार, श्रमशील लोक आ ग्रामीण समाजक सुख-दुःखकें निकटसँ देखबाक आ अनुभव करबाक अवसर निरन्तर भेटैत रहलनि। ई जीवनानुभव हुनकर रचनात्मक दृष्टिक आधार बनल आ ग्रामीण यथार्थ हुनकर साहित्यमे स्वाभाविक रूपें अभिव्यक्त होइत गेल। **कथा, उपन्यास, कविता आ गीत सहित अनेक विधामे ओ लगभग 150 पुस्तकक सृजन कऽ चुकल छथि आ एखनो नियमित लेखनमे सक्रिय छथि। देखल-भोगल यथार्थकें सहजतासँ अभिव्यक्त करबाक कारण हुनकर साहित्य मैथिलीक यथार्थवादी परम्पराकें विशिष्ट विस्तार दैत अछि।** 'गामक जिनगी' लेल हुनका **टैगोर लिटरेचर एवार्ड** तथा 'पंगु' उपन्यास लेल **साहित्य अकादेमी पुरस्कार**सँ सम्मानित कएल गेलनि।

डॉ. नानटुन पासवान

डॉ. नानटुन पासवान मैथिली भाषा-साहित्यक गंभीर अध्येता, समर्पित शिक्षक आ सजग आलोचक छथि। **सम्प्रति बी.एन. मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुराक अंगीभूत इकाई एम.एच.एम. कॉलेज, सोनवर्षा (सहरसा)क मैथिली विभागमे ओ वरीय सहायक प्राध्यापक छथि।** साहित्य आ समाजक सम्बन्ध, श्रम, न्याय, मानवीय गरिमा आ बदलैत जीवन-मूल्य हुनकर अध्ययनक प्रमुख क्षेत्र अछि। रचनामे निहित सामाजिक यथार्थ आ मानवीय संवेदनाकें पहचानब हुनकर आलोचनात्मक दृष्टिक विशेषता अछि। **अध्यापनकें अध्ययनसँ आ अध्ययनकें जीवनानुभवसँ जोड़ि देखब हुनकर शैक्षणिक दृष्टिक पहचान अछि।** सामाजिक चेतना, मानवीय संघर्ष आ समयक बदलैत प्रश्नकें उद्घाटित करब हुनकर आलोचनात्मक चिन्तनकें विशेष अर्थ दैत अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक चयनित कथासभक संग्रह **'धरती, पसेना आ न्याय'क संकलन आ भूमिका-लेखन** हुनकर अध्ययन, चयन-बोध आ साहित्यिक सरोकारक परिचायक अछि। शिक्षक, अध्येता आ सम्पादक रूपमे हुनकर सक्रियता मैथिली साहित्यिक विमर्शकें समृद्ध करैत अछि।

पल्लवी प्रकाशन
नेहरू मार्ग, तुलसी भवन, निर्मली,
जिला- सुपौल, बिहार: 847452

Rs. 300/-

ISBN: 978-93-48865-90-8
9789348865908